अथ

॥श्रीअभयकुमारसद्दामंत्रीश्वरनो रास प्रारंभ॥

॥ दोहा ॥

॥ परतखसुरतरुसारिखो, प्रणमुं पास जिणंद ॥ सुर नर किन्नर सासता, प्रणमे पयअरविंद ॥ १ ॥ विघन विदारण सुखकरण, पूरण वंछित कोड ॥ पर सिद्धने परमानंदी, सेवे सुं कर जोड ॥ २ ॥ चरम शरीरी चरम जिन, शासनि शासन जाण ॥ समरीजें मन में सदा, ब्राह्मी मन आण ॥ ३ ॥ कविमा ता प्रणमुं सदा, मनशुद्ध ब्राह्मी जाय ॥ सुन अक्षर सुवचनतणो, मालिणि करे पसाय ॥ ४ ॥ वलि प्रणमुं गुरुपाउला, त्रिकरण करि निजशुद्धि ॥ कुमति कुमारग परिहरी, [illegible] आपिजे बुद्धि ॥ ५ ॥ गुरुसम सो जगको नहीं, गुरु महोटो महिराण ॥ जिणे गुरु मन [illegible] धर्या, [illegible] सुखखाण ॥ ६ ॥ सघले सघले गुरु कह्या, तीरथ सांहे मान्य ॥ गुरुसम तीरथ को नहीं, [illegible] इणिपरे जाण ॥ ७ ॥ गुरु उपगार तणो किहां, नवि सुखियो में पार ॥ जिणे

प्रह सम नित कहिने, गुरुचरणे सिर धार ॥ ८ ॥ अ
नयकुमरगुण वर्णवुं, बहुबुध बुद्धिविलास ॥ सुणतां
अचरिज ऊपजे, जग जागे जसवास ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥ तथा मगध
देशनो श्रेणिक भूपाल ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथमद्वीप जंबूद्वीपनाम, दो चंदा दो सूरज ग
म ॥ भरत खेत्र सघले परगडो, जिहां तीरथ शेत्रुंजो
वडो ॥ १ ॥ जसु महिमा भांखे जिणवीर, सांप्रत
सामी साहस धीर ॥ नर नारी फरसे एक वार, च
उगतिनो जे करे परिहार ॥ २ ॥ त्रेसठ शिलाकापु
रुष प्रधान, उत्पति जिहां जिनधर्म निधान ॥ आर
जदेश साढा पचवीस, साधु अने साधवी सुजगीस
॥ ३ ॥ मगधदेस देसां शिर मोड, धरती धाखो अ
पणो मोड ॥ तिहां कुशाग्रपुरपाटण भलुं, अतिसुंदर
शोहे गुण निलुं ॥ ४ ॥ अनुपम वाडी वनने बाग,
षडऋतु रहेवानो जे जाग ॥ फूल्यां फूल सुगंध महम
हे, उपर भमरा गण गहगहे ॥ ५ ॥ सरस सरोवर
भरियां नीर, पंखी केल करे बहुकीर ॥ अतिऊंचो
विषमो जिहां कोट, अरिदल पाडण सबलो उट
॥ ६ ॥ सुंदर पोल सरस बाजार, चोराशी चहुटा सु

सकार ॥ मागे जे मुख पावें थोक, हीर चीर रूपैया रोक ॥ ७ ॥ त्रिक चच्चर चउमुख शुनगण, महोटां महोटां नगर मंमाण ॥ अतिऊंचा आवास उत्तंग,सोवन तोरण कलश सुचंग ॥ ८ ॥ गोखें बेठी सारंग नयणि, प्रत्यक्ष दीसे अपछर वरणि ॥ नगर कुतुहल देखण आइ, मोही रही सरगें नवि जाइ ॥ ए ॥ धनवंत महोटा सवला शाह, वसे रसे पर ऋद्धि अथाह ॥ नहीं ठे कुमणा जिहांने कांइ, जिणवर आण धरे चित्तलाइ ॥ १० ॥ सुंदर मंदिर जिननां गहके, दंमकलश धज गयणे लहके ॥ धरमघंट सदा जिहां वजे, कुमतिमिथ्यामति अलगो नजे ॥ ११ ॥ पापनिवारण शुन्न सुविसाल, वनमगमें पोपधशाल ॥ सूधा साधु सिद्धांत वखाणे, सुणि श्रावक शुद्ध नावना आणे ॥ १२ ॥ वरण अढार वसे तिहां सुखिया, लोक कोइ नवि दीसे दुःखिया ॥ कालतणो वली नहीं परवेस, चोर जार व्यसनी नहीं लेस ॥ १३ ॥ चुगल नहीं कोइ तिहां पुरुप, जे परघरनी करे अनुरुप ॥ दानशाला मांमी दातार, दुःखिया दीन हीन उद्धार ॥ १४ ॥ एवुं नगर कुशाग्रअनोप, लक्ष्मीविनय कहे केती उप ॥ चोपइनी ए जाणो ढा

ल, सुणतां लागे अतिहि रसाल ॥१५॥सर्वगाथा२४॥
॥ दोहा शोरठी ॥
॥ देश नगर नहीं दंम, निरुपम नीकी रीत ए॥ देवगृहां शिरदंम, अकरा कर बीजो नही ॥ १ ॥ दिनदिन अधिको नेह, नरनारीमें देखियें ॥ दीपक घटत सनेह, नेहरहित बीजो नही ॥ २ ॥ जिहां नवि दीसे काल, जमराणो पाठो मुड्यो ॥ जंगम थावर जाल, नागधरांरे ठावडे ॥ ३ ॥ करकाठा कहीयांह, दाता जलधर दीपता॥ नहि ते कृपणथीयांह,करकाठ खड्ग सही ॥ ४ ॥ बीजो नहीं किहां वाद, चार वरणमें चेखतां ॥ तरक विचारें वाद, पंमितजन वेठा करे ॥ ५ ॥ नही किहांयें मान, नर नारीमां निरखतां ॥ सेर धडी चउमान, चउराशी चहुटे वचां ॥ ६ ॥ कारागर पणकोइ, वध बंधन दीशे नही ॥ नारी मस्तक जोइ, बंधन वेणी दंमशुं ॥ ७ ॥ एह अपूरव वात, नगर कुसागरमें अजे ॥ राजानी कहुं वात, सुणजो आलस ठोडीने ॥ ८ ॥
॥ ढाल बीजी ॥ धणरा मारुजी रे लो ॥ ए देशी ॥
॥ प्रसेनजितनामें तिहां राजा करत दिवाजा वाजा जसना वाजे रेलो, महारा राजेसरजी रे लो ॥

सुंदरसूरत शोहनीकोलितिनो टीको नीको केहरि गा
जे रे लो ॥ महा० ॥ १ ॥ तेजप्रतापें इंद्र जणापे
कापे दलिद्रने दाता रे लो ॥ महा० ॥ विक्रम सा
हस रामत पायस जास जगत विख्याता रे लो ॥
महा० ॥ २ ॥ छत्र धरावे चमर ढुलावे थावे जाच
कवृंदा रे लो ॥ महा० ॥ जयजय मंगल शब्द सुणा
वे लाखपसावे गावे कवित्तनें छुंदा रे लो ॥ महा० ॥
॥ ३ ॥ सजासमर्क्ष पंमित सेवे अहनिश रहेवे देयल
ना समदीसे रे लो ॥ महा० ॥ आपणी परज सुखें
रखवालें नयण निहाले हीयडुं हरखे हींसे रे लो ॥
॥ महा० ॥ ४ ॥ समकित पाले दोषने टाले पाले
जिननी वाणी रे लो ॥ महा० ॥ पास तणो श्रावक
ए जाणो सहुमन जाणो वचन सुहाणो कलिमें जा
स कहाणी रे लो ॥ महा० ॥ ५ ॥ आण मनावे
सहु शिर दावे छुजने नावें जीत्या सहु सीमाडी रे
लो ॥ महा० ॥ राजा राज निकंटक कीनो जगजस
लीनो दीनो दंम सीमाडी रे लो ॥ महा० ॥ ६ ॥
वेरी नाशी गया वनवासें रहे उदासें त्रासें हीणो
जाणी रे लो ॥ महा० ॥ केवी कामणी काजल गाले
नेणप्रनाले जिम वरसाले पाणी रे लो ॥ महा० ॥

॥ ७ ॥ रूपें राणी रंजसमाणी धारणी नामें अछे रे
लो ॥ महा० ॥ शीलें सीता प्रियशुं प्रीता निर्मल
चित्ता शा अछे रे लो ॥ महा० ॥ ८ ॥ सुखनो म
टको सुंदर लटको चटको शशिनो दीसे रे लो ॥ म
हा० ॥ विकसित आंखडियां कमलपांखडियां जांप
णीयां जल हींसे रे लो ॥ महा० ॥ ९ ॥ अधरप्रवा
ला दंतउजाला मोतिमाला मणियां रे लो ॥महा०॥
सुंदरी आशिका तीखी नासिका नकवेसर नासिका
गुण नवि जाये गणिया रे लो ॥ महा० ॥ १० ॥
सिर वेणी विराजे नागेंद्र लाजे लाज गयो पातालें
रे लो ॥ महा० ॥ कुचोन्नत ठानी प्रेमनी मानी गज
कुं नानी गाले रे लो ॥ महा० ॥ ११ ॥ कटिकेहरि
खीणी नहीं रे हीणी जीणी मुंठमें आवे रे ॥महा०
जेह निहाले हंसगति हाले सरपाले सहु जावे रे लो
॥ महा० ॥ १२ ॥ नामें जाग सुखे भोगवतां मननी
खंता पूरव सुकृतां गर्भ धर्यो तिण नारी रे लो ॥
महा० ॥ माहा नवमहीने हुवे पूरे पुण्यअंकुर इंडी
पूरे सुत जायो सुखकारी रे लो ॥ महा० ॥ १३ ॥
राजघर महोत्सव मंडाणा हर्षगणा लहेणा नवि
को मागे रे लो ॥ महा० ॥ तूर वजाडे पात्र अखाडे

आखला, दीधा थाल विशाल ॥ खीरपीरसे खांतशुं, जीमे कुमर रसाल ॥ ३ ॥ कुमर जिमंतां देखीने, मूके श्वान नूपाल ॥ उठया कुमर तिहां थकी, सहुये तजी निज थाल ॥ ४ ॥ श्रेणिक इक बेठो रह्यो, नि र्जय निश्चल थान ॥ निकट थाल जेला करी, नोज विया सहु श्वान ॥ ५ ॥ आपणपें बेठो थको, नो जन करे निचिंत ॥ किशुं न साधे जेह नर, जेहने बुद्धिमहंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वांगलीयानी देशी ॥

॥ देखी नरपति हरखीयो रे, श्रेणिक लायक रा ज रे ॥ मनगमीया ॥ जिम तिम अरियण जींपशे रे, धरशे निश्चल राज रे ॥ म० ॥ १ ॥ एतो मारे जीवन जरियां, एतो कुमर शिरें शिरियां ॥ वली जोवुं रे, जोवुं एहनी बुद्धि रे ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ एक दिवस वली इम करे रे, मोदक नरिय करंम रे ॥ म० ॥ कोरा कुंन तिम जल नरी रे, मुझा मुख थ खंम रे ॥ म० ॥ २ ॥ तेडावी कुमरो नणी रे, नूप ति ये ते आण रे ॥ म० ॥ ए वेहु मुझा थकां रे, करजो अशनने पाण रे ॥ म०॥ ३ ॥ मुद्रित कुमरां देखीने रे, गोढे अलगा थाय रे ॥ म० ॥ श्रेणिक

रे ॥ म० ॥ १२ ॥ ढाल नणी ए तीसरी रे, वांग लियानी जात रे ॥ म० ॥ लक्ष्मीविनयमुनि एम कहे रे, कुमर परीक्षा वात रे ॥ म० ॥ १३ ॥ सर्व ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण अवसर एकदा, पुरकुशायनी मांहि ॥ अगनी उपद्रव ऊपनो, नृप वीनव्यो उछाहिं ॥१॥ मंत्रतंत्र कीधां घणां, कीधां जपने जाप ॥ बलिबाकुल कीधां घणां, पण नटले संताप ॥२॥ अग्नि अने वैरी वली, एकणहीं न रहाइ ॥ चले न मंत्र न ओषधी, अतिअसाध्य कहेवाय ॥ ३ ॥ राजा मन चिंता घणी, कीजें कोइ उपाय ॥ मली महेतायें वीनव्यो, एक उपाय महाराय ॥ ४ ॥ आज पछी हवे जिण घरें, कपजसे जिहां आग ॥ तेहने पुरमांहे वली, वसवानो नहीं लाग ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नगर सुदरसण अतिनलुं, अथवा सीखण सीखण चेलणा ॥ ए देशी ॥

॥ नगर करे उद्घोषणा, कोटवाल विशेष ॥ हुकुम थयो नररायनो, सुणजो सविशेष ॥ नग० ॥ ॥ १ ॥ चउमुख चच्चर चहुट्टे, कहे पडह वजाइ ॥ आजथकी जेहने घरे, पावक उपद्रव थाइ ॥ न० ॥

॥ २ ॥ तेहने पुर बाहिर सही, वसवानो छे लाग॥
जेहने हूए ते इम करे, तजी पुरनो राग ॥ न० ॥३॥
विधिवस नरपतिने घरे, सूयार प्रमाद ॥ ततखण
आवी कपनो, अग्नि तणो उनमाद ॥ न० ॥ ४ ॥
जनकी अग्नी नयंकरी, नवि चाले जोर ॥ हाकचूंब
कलरव हुवे, आतस कठिन कठोर ॥ न० ॥ ५ ॥
वधतो पावक देखीने, कुमरजणी कहे नूप ॥ मणि
माणिक मोती घणा, महोटा रत्न अनूप ॥ न० ॥
॥ ६ ॥ जे जे वस्तु जिको ग्रही, मंदिरथी आणेस,
ते तेहना होसे सही, इम दीधो आदेस ॥ न०॥७॥
हय गय केचित् मेलवी, केइ मुगताफल सार ॥ ही
रचीर केई लीयां, आवे एम कुमार ॥ न० ॥ ८ ॥
काढे श्रेणिक तिणसमे, बाजो नंजा नाम ॥ पूछे
राजा देखीने, वज्र ए किण काम ॥ न० ॥ ए ॥ स
विनूपतिने जाणवो, जयकारण एह ॥ इमसुणि नर
वर हरखियो, बुधिमंत सुत एह ॥ न० ॥ १० ॥
नंजा सार दीयो इसो, नंजाने अनुमान ॥ ए
वीजुं नाम जाणजो, श्रेणिकनो परधान ॥ न० ॥
॥ ११ ॥ अवनीपति एम चिंतवे, मारी तो हे वाच ॥
वाहिरवास देवराविया ॥ करवा वाचा साच ॥ न०

॥ १२ ॥ अनुक्रमे तिण गामे सही, राजगृही इण नाम ॥ नगर वस्यो तिहां क्षिति तिलो, सर्व गुणे अभिराम ॥ न० ॥ १३ ॥ चोथी ढाल थइ इति ॥ लब्धिविनयनी वाच ॥ सांभलजो हवे आगले ॥ क विना वचन छे साच ॥न०॥१४॥ सर्व गाथा ॥८०॥

॥ दोहा सोरठा ॥

॥ श्रेणिकनाम कुमार, राजपाट योगो अछे ॥ दान मान सतकार, तात न आपे तेहने ॥१॥ मत मत्सरधर कोइ, कुमर करे एनो बुरो ॥ इस्यो अंदेसो जोइ, ग्राम गराम आपे नहीं ॥ २ ॥ एम चिंतवी नरेश, बीजा कुमर जणी दीये ॥ अधिका ग्रास वि शेष, श्रेणिकने अपमानीयो ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी कानी करि अनाग्री रेहां ए देशी॥

॥ कुमर इस्यो मन चिंतवेरहां, अपमान्यो मुझ तात ॥ कर्म दिखाइनी ॥ इहां रहेवुं जुगतो नहीं रेहां, तउ चले परभात ॥ क० ॥ १ ॥ जुवो चित्त विचार, सुख दुःख सरजनहार ॥ नहीं कोइ मेटण हार, जाणो सकल संसार ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ दहीतणी एक आयणीरहां, मारगे साहमी आइ ॥ ॥ क० ॥ तेम वली कुमरी कन्यकारेहां, दरूण थंगे

जाइ ॥ क० ॥ २ ॥ शंख शब्द काने सुण्योरेहां, वली लवन्नी गाय ॥ क० ॥ कुंभ कलश दीठो नलोरेहां, मंगलध्वनि तेम थाय ॥ क० ॥ ३ ॥ मीठा फल कोण भेटणेरेहां, दीधां कुमरने श्राण ॥ क० ॥ वेद भणंते वेदीयेरेहां, दे श्राशिश सुविहाण ॥ क० ॥ ४ ॥ धव लाधूनावलदीया रेहां, रासे बांध्या तेह ॥ क० ॥ सामा श्राया कुमरने रेहां, पुन्य तणी कही रेह ॥ ॥ क० ॥ ५ ॥ शुभ शुकने पुर लांघीने रेहां, बाहेर श्रावो जाम ॥ क० ॥ माल्हाली थइ ततक्षणे रेहां, वेरी बोले ताम ॥ क० ॥ ६ ॥ वाम नाग वेगो थको रेहां, तितर श्रापे वाच ॥क०॥ पंथीने परदेशडेरेहां, लहे सुख संपति साच ॥ क० ॥ ७ ॥ तुरत तिसे बांह फोरने रेहां, दक्षिण श्रंगे जोइ ॥क०॥ श्रणजाण्यासुं प्रीतडीरेहां, श्रणजाण्यां फल होइ ॥क०॥८॥ श्रागल जाता मारगेरेहां, मृगमाल्हाला थाय ॥क०॥ वंछित फलश्ये पंथीया रेहां, शुकन भलां सुखदाय ॥क०॥ ॥९॥ गाम नगरपुर लांघतो रेहां, लांघ्यां विषमां ठाम ॥क०॥ श्रनुक्रमे चलतां श्रावीयो रेहां, वेनातट श्र भिराम ॥क०॥१०॥ पुर प्रवेश करतां थकांरेहां, शुकन थया श्रीकार ॥ क० ॥ चिंते मनमां कुमारजीरेहां,

होशे फल सुखकार ॥ क० ॥ ११ ॥ नगर
रलिआमणो रेहां, हरख्यो श्रेणिक चित्त ॥
चवराशी चउटां नजारेहां, आपणो कोइ न
॥ क० ॥ १२ ॥ नगर कुतुहल निरखतोरेहां,
चउसेठने हाट ॥ क० ॥ सुन गामे वेवो थको
जोवे नर गहगाट ॥क०॥१३॥ वेवो देखी तेहने
पूछे सेठ तिवार ॥ क० ॥ किहां वसो कोण छो
रेहां, बोले ताम कुमार ॥ क० ॥ १४ ॥ मगध
वासी अबुं रेहां, क्षत्री मारी जात ॥ क० ॥ काम
नमावे तिम नमेरेहां, नर धरती दिन रात ॥ क०
॥ १५ ॥ आदर दीधो अतिघणोरेहां, मिठी मीठ
नीहाल ॥ क० ॥ वसो रसो वेसो इहांरेहां, वचन
कहे सुविसाल ॥ क० ॥ १६ ॥ काची कलि अना
कीरेहां, इण देशीमें जाण ॥ क० ॥ पांचमी ढाल ए
सुकननीरेहां, लक्ष्मी वीनयनीवाण॥१७॥सर्व॥१०८॥

॥ दुहा ॥

॥ तिण नगरे तिणईज दिने, परव महोछव को
य ॥ खान पान खेलण रमण, हरख वसे सब लो
य ॥ १ ॥ आवे मादक अति घणां, सोदोलेण स
माज ॥ व्याकुल देखी शेठने, कारावे तसु काज॥२॥

कुमर प्रजावे तेहने, पयोजान महंत ॥ ते देखीने चिंतवे, शेठ महा गुणवंत ॥ ३ ॥ जे में सुहणो निरखीयो, थाज निसाने थंत ॥ ते देखी सफलो हुसे, सांप्रत एहने तंत ॥ ४ ॥ रतन पुरुष मोटो थछे, वरकन्याने योग्य ॥ में जोतां लीधो नहीं, मलियो पुण्य संयोग ॥ ५ ॥ लइ थाव्यो घर थापणे, करि थादर सनमान ॥ स्नान विलेपन थाजरण, जोजन जगत प्रधान ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठठी वइयानी तथा शेठे जइपुठी सिकोत्तरी ॥ ए देशी ॥

॥ थवसर पामीने हवे थापणो, करी उंठव बहु नांते रे ॥ नंदा नामे बेटी थापणी, परणावे मन खांते रे ॥ थ० ॥ १ ॥ दीधो दान थने वली दाइजो, दीधा इव्य थपारो रे ॥ सरखी जोडी वेहनी देखीने, हरख्यो सहु परीवारो रे ॥ थ० ॥ २ ॥ रहेवा काजे शेठे थापीया, थति उंचा परसा दोरे ॥ जाली गोख जरुखे सोहतो, करतो गगनछुं वादो रे ॥ थ० ॥ ३ ॥ हवे दोगंदक सुरवरनी परें, विलसे सुख तसु साथो रे ॥ पुण्य सखाइ हुवे जिण पुरुषने, केही जोग थनाथो रे ॥ थ० ॥ ४ ॥ थन्य दि

णमे तातने पाय ॥ ५ ॥ ततक्षण राजा हरखिने, दीधो अपणो राज ॥ पोते अणसण आदर्यो, साध्या आतम काज ॥ ६ ॥ छदपवंत हवे राजवी, पाले श्रेणिक राज ॥ थल जल अरियण जीपिने, सारे परिजनकाज ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ दोरी महारी आवे रसीया कटनजे ॥ ए देशी ॥ दोहलो उपनो रे नंदाने हवे, गगनतणे परजाव रे ॥ रसीया ॥ चामर छत्र धरावनी, गजवेठी सप्रनावे रे ॥ रसीया ॥ १ ॥ पुन्य पसाये रे रसीया संपजे, सघला वंछित जोग रे ॥ र० ॥ जयजय वाजे रे नना वारणे, जगजाणे सहु लोग रे ॥ र० ॥पु०॥ २॥ ए आंकणी ॥ अमर पडावुं सदाग नगरमे, दीजे दीनने दान रे ॥ र० ॥ एम करनी विचरुं हुं नगरमे जीवित जनम प्रमाण रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ३ ॥ हवे वात कहे ए तातने, ते पण लइ बहु नेट रे ॥र०॥ जाइ कर रायने वीनव्यो, मन आरनी सहु मेट रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ४ ॥ नरवर प्रसन थइने ते दीया, नदानी फली आस रे ॥र०॥ जिणविध विचरी तेह मवि करी, हरख रह मुख वास रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ५ ॥ साटा नव महीना पुरे

वस निसी पोढी आपणे, नंदा महेल मजारो रे ।
गजपति निरखे ऐरावण समो, आनंद अंग अपारो
रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ आवीने कहे पतिनी आगले, पूछे
तास विचारो रे ॥ श्रेणिक नाखे इम मनगहगही,
सुपन तणो फलसारो रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ होसे पुत्र तु
मारे अति नलो, सुंदर अति सुकुमालो रे ॥ कुल
दीपक वली होसे माहरे, गुण लक्षण सुविसालो रे
॥ अ० ॥ ७ ॥ सांनली नंदा अति हर्षित थइ, धर्म
जागरणे जागे रे ॥ लक्ष्मी विनय कहे एणीपरे नवि
तुमें, सांनलजो हवे आगें रे ॥अ०॥८॥सर्व॥१२२॥

॥ दुहा ॥

॥ हवे प्रसेनजीत नरपति, वृद्ध थयो असमान ॥
निजसुत तेडण कारणे, मूक्या निज परधान ॥ १ ॥
मल्या कुंवरने आवीनें, कुशल खेम कहेही ॥ ते हर
षित हुउ घणो, मरम नेद लहेही ॥ २ ॥ अनुमति
सेठ तणी लहे, आवी प्रीयाने पास ॥ तात बोला
व्यो चालसुं, एम कहे उल्लास ॥ ३ ॥ सील रतन
धरजो तुमे, जगजागे जस वास ॥ राजगृही गोवा
लीया, सरस धवल आवास ॥ ४ ॥ ए अक्षर पत्री
लिखे, दे प्रीयाने सहाय ॥ चाल्यो आयो पुरशरें, प्र

एमे तातनें पाय ॥ ५ ॥ ततक्षण राजा हरषपन, दीधो अपणो राज ॥ पोते अणसण आदखो, सास्या आतम काज ॥ ६ ॥ उदयवंत हवे राजवी, पाले श्रेणिक राज ॥ बज बल अरियण जीपिने, सारे प रिजनकाज ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ दोरी मल्हारी आवे रसीया कटतले ॥ ए देशी ॥ दोहलो उपनो रे नंदाने हवे, गरजतणे परजावे रे ॥ रसीया ॥ चामर छत्र धरावती, गजवेठी सप्रजावे रे ॥ रसीया ॥ १ ॥ पुन्य पसाये रे रसीया संपजे, सघला वंछित जोग रे ॥ र० ॥ जयजय बोले रे उजा वारणे, जगजाणे सहु लोग रे ॥ र० ॥पु०॥२॥ ए आंकणी ॥ अमर पलावुं मल्हारा नगरमें, दीजे दीनने दान रे ॥ र० ॥ एम करती विचरुं हुं नगरमें, जीवत जनम प्र माण रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ३ ॥ हवे वात कहे ए तातने, ते पण लइ बहु जेट रे ॥र०॥ जाइ देइ रायने वीन व्यो, मन आरती सहु मेट रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ४ ॥ नरवर प्रसन थइने ते दीया, नंदानी फली आस रे ॥र०॥ जिणविध विचरी तेह सवि कही, हरख रहे सुख वास रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ५ ॥ साढा नव महीने पूरे

थये, सुन लगने सुन चार रे ॥ र० ॥ गुण मणि
रण सुत जनमीयो, रवी मंमज अनुहार रे ॥ र०
पु० ॥ ६ ॥ उत्तव कीधारे शेठे अतिघणां, थइ
जय जयकार रे ॥ र० ॥ वाजा वाजे पंच शब्द नजां,
दीधां दान अपार रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ७ ॥ दशमे दी
न रे दसूठण मांमीयो, सरसा चार आहार रे ॥ र०
॥ परीयण सयण सहुं जीमाडीने, शेठ कहे सुविचार
रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ८ ॥ अमे तुमारे स्वमुखे जाणिने,
मोहलाने अनुसार रे ॥ र० ॥ कीजीयें ठेयें नामनी
स्थापना, नामे अजय कुमार रे ॥ र० ॥ पु० ॥ ए ॥ दोय
त्रण धावे पाळीजतो, चंदकला अनुमान रे ॥ र० ॥
आठ वरसनो अनुक्रमे ते थयो, सकल कला गुण
जाण रे ॥ र० ॥ पु० ॥ १० ॥ एक दिन कुंवर जणी
कहे तेहवे, केलि करंतडा बाल रे ॥ र० ॥ ताहरो ता
त नीरत नवि जाणीयो, तुं मन आप संजाल रे ॥
र० ॥ पु० ॥ ११ ॥ वलतो कुंवर कहे पीता तुमे, ए
मुझ शेठ गुण खाण रे ॥ र० ॥ हसी हसी बालक
बोले ठे इसो, ते तो मायनुं जाण रे ॥ र० ॥ पु० ॥
१२ ॥ एम सुणी आवी पूठे मातने, ते कहे एहीज
तात रे ॥ र० ॥ एह तुमारो पीता अठे खरो, साच

कह्यो मुजवात रे ॥ र० ॥पु०॥१३॥ तव सांजु माता कहे तेहने, सांजल छतविरतंत रे ॥ र० ॥ वयेलहु डो वे गरुवो गुणे, बोले एम बुद्धिवंत रे ॥र०॥पु०॥ १४ ॥ चलते तातें कह्यो वे किस्यो, देपत्री मुज ए करे ॥ र० ॥ वांचे तेहनी अरथ विचारीने,नांखे एम सुविवेकरे ॥ र० ॥ पु० ॥ १५ ॥ १४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात माहरो मातजी, राजग्रही पुरराय ॥ चालो जइए तिहांकणें, पूछे तातने माय ॥ १ ॥ सेठे सीख दीधी तुरत, दइमणि माणिक रास ॥ निरजय अनुक्रमे आविया, राजग्रही पुरपास ॥ २ ॥ सुंदर सरस उद्यानमें, धरी माताने हेत ॥ पोते आयो नगरमें, चाकर नफरसहेत ॥३॥ नगर कुतहल निरखतां, दीठां माणस वृंद ॥ कुवर तुरत आवे तिहां, धरी मनमे आणंद ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥ हवे कुमरतें पूछे इहां अचरिज सुंछे रे ॥ वलतो ते चाखें रे, सांजल कुवरजी रे॥ इहां श्रेणिक राजा रे, देखण बुधि काजा रे, मेल्या वे तेणे मंत्री पाचसें रे॥१॥निज नामनी मुद्रा

रे, नहीं कांइ छुद्दा रे, ते लइने नांखी एणे कू
रे ॥ जल विण ए कूउ रे, नृपनो छे दूउ रे,
जे काढे मंत्री ते वडो रे ॥ २ ॥ सुणी कुमर
रे,गोमय मंगावे रे, ते लइने नीरखी नांखे ऊपरे रे॥
तृण पूलो वलतो रे, तिम नांखे वलतो रे, जल कूप
नरावे ते ततक्षण रें॥ ३ ॥ एम बुद्धि पसावे रे, मुद
ते पावे रे, लइने ते आपे आवी नृपने रे॥ पय शीर
नमायो रे, नृप तास बोलायो रे, क्यांथी तुं आयो
वासी केयनो रे ॥ ४ ॥ वलतो एम नासे रे,सौ रह्या
तमासे रे, वेना तट वासी आयो त्यां थकी रे ॥ न
इ शेठने जाणे रे, हा जाणुं जाणे रे, नंदा तस पुत्रीयें
शुं जण्यो रे ॥ ५ ॥ नांखे सुत जायो रे, नृप सुणि
सुख पायो रे, ते केवो कहे में दीठे देखीयो रे ॥
शुं नाम छे तेहनो रे, तसु नय नहीं केहनो रे, सुणी
नृप विचारे एहिज अनय कहीजीयें रे ॥ ६ ॥ ते ले
—ी— परखो रे, कहेतांने नीरखो रे, मुज मन अति
हरख्यो देखी वालने रे ॥ लइने उछंगें रे, राजा मन
रंगे रे,तुज मात क्यांछाते कहे उद्यानमें रे ॥७॥ तिण
वेला राजा रे, करी उछव साजा रे, गज राज घंटा
ला सामा मोकले रे॥ परगट पेसारे रे, आणी नगर

वेदु श्रावकधम करे, सील धरे सुपवित्र ॥
पित पंथे चले, [illegible] चित्त ॥ ३ ॥ अन्य दि[illegible]
स त्यां [illegible] विशेष ॥ नाग विचा[illegible]
नरजवे, [illegible] देख ॥ ४ ॥
[illegible] १ ली ॥
[illegible]नर घडो हे [illegible] देशी ॥ चि[illegible]
सार[illegible] ॥ गरढा[illegible]

पूर्व जन्म ए इक तार ॥ छंगज देखुं ताहरे रे, अ
न परणुं नार ॥ मे० ॥ ७ ॥ आजथकी करवो
, कोइक दाय उपाय ॥ नंदन होवे ताहरे रे,
सुख थाय ॥ मे० ॥ ८ ॥ आंबिल तप सु
करे रे, पाले निर्मल शील ॥ इणे समे सोह
रे, सुरपति कीध सलील ॥ मे० ॥ ९ ॥ अ
एक देवता रे, धरि करि साधुनो देह ॥ क
थणो करतो थको रे, आयो मुजमा गेह ॥ मे०
१० ॥ उठी सनमा वांदिया रे, पुत्रे साधुने एम ॥
, कारण आव्या तुमे रे, नांख्या कारज नेम ॥
मे० ॥ ११ ॥ ज्ञान करी आपो तुमे रे, नंद अम्हां
ना. चपाक ॥ नाव धरी हवे श्राविका रे आपो औष
ध पाक ॥ मे० ॥ १२ ॥ ... उपाट ॥ आपो जिमे रे,
नांख्या देव प्रभाव ॥ ... नहीं रे, सुत
ना केरा नाव ॥ मे ... सुहद ... न

डु श्रावकधम करे, सील धरे मपवित्र ॥ जिनना
ोत पंथे चले, निर्मल ॥ अन्य वि
ह त्यां उपनी, चिंता ॥ नाग विचा
नरत्नने, पुत्र विन ॥

रे. शग नव ए इक लाग ॥ अगज तेम्युं नाहने रे, अ
वर न परणुं नार ॥ मे० ॥ ७ ॥ आश्चर्यी करवो
तुमे रे, कोडक ताव नगाय ॥ लंडन छावे नाहने रे,
तो सुतने सुख थाय ॥ मे० ॥ ८ ॥ प्रांचित नव नु
[illegible] करे रे पाले निर्मल [illegible] ॥ इणी समे सोह
म धाणी रे, [illegible] ॥ मे० ॥ ९ ॥ अ
[illegible] ॥ क
[illegible] ॥ मे०
॥ १० ॥ [illegible] ॥
[illegible]
मे० ॥ ११ ॥ [illegible] तेना अरथे

वेंहु श्रावकधम करे, सील धरे सुपवित्र ॥ जिन
पित पंथे चले, निर्मल राखे चित्त ॥ ३ ॥ अन्य दि
स त्यां उपनी, चिंता अतिहि विशेष ॥ नाग विचा
नरजवे, पुत्र विना कुल देख ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ वत कलालणी जर घडो हे ॥ ए देशी ॥ चि
तातुर मन चिंतवे रे, सारथी एम विचार ॥ गरढापं
कुण मोजणी रे, पुत्र विना आधार ॥ १ ॥ मेराजं
डडा रे, पुत्र समान न कोइ ॥ ए आंकणी ॥ सुत विण
घर सूनो हुवे रे, सुत विण लक्ष्मी जाय ॥ सुत विण
को लेखे नहीं रे, सुत विण नामो जाय ॥ मे० ॥ २ ॥
सुत विण कुण माता कहे रे, सुत विण को कहे ता
त ॥ एके सुत विण मानवी रे, फूरे दिनने रात ॥ मे०
॥ ३ ॥ चिंते गजहय देइने रे, रही रही धूणे शीश ॥
जूख तृषा सहु वीसरी रे, जोर किम [illegible] ॥
मे० ॥ ४ ॥ इम उदास देखी करी रे, [illegible] नार
नार ॥ कां पियु आमण दूमणो रे, कांइ न लोपे
कार ॥ मे० ॥ ५ ॥ वलतो सारथी इम जणे रे, सुतनी
चिंता आज ॥ त्रिया कहे परणो तमे रे, जिम सीझे
तुज काज ॥ मे० ॥ ६ ॥ वली सारथी तेहने [illegible]

कला संयोग ॥ ३ ॥ सतानीक राजा सबल, मृगाव
ती तसु नार ॥ जेष्टा वरी नंदिवर्धने, शिवा प्रद्योत व
दार ॥ ४ ॥ कन्या सुजेष्टा चेलणा, छे वलि मंदिर
दोय ॥ वाद करंतां योगणी, कुंवरी जीती सोय ॥
॥ ५ ॥ अपमानीती योगणी, चिंते एम धरी रीस ॥
सोकतणे ए संकटे, पाडीश वीशवा वीश ॥ ६ ॥ अम
रख आणी योगणी, लखी कुंवरी पटरूप ॥ आवी
राजग्रहिपुरे, जिहांछे श्रेणिक नृप ॥ ७ ॥ योगणि रा
जाने मली, पट दीधो नृप हाथ ॥ रूप अधिक देखी
करी, मोही रह्यो नर नाथ ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी बिंदलीनी ॥ चित्र लिखित रूप देखी, नृप
थकित थयो सविशेषी हो ॥ सुंदर सोहेवे ॥ ए टेक ॥
वेणी सोहे लांबी, अलिकुल ज्युं श्यामता आंबी हो
॥सुं०॥१॥ शशिमुख कीध उजासो, अंधारे लीधो पासो
हो ॥ सुं० ॥ माथे राखडी सोहे, जाणे नाग चूडाम
णि मोहेहो ॥ सुं० ॥ २ ॥ अष्टम शशिसम भाल,
बिंदली अतिहि विशालहो ॥ सुं० ॥ नयण नलो
अणियालां, विच कीकी अलिअल काजालहो ॥ सुं० ॥
॥ ३ ॥ नासिका दीप लोडसरखी, अति तीखी कवि

जन परखीहो ॥ सुं० ॥ नकवेसर तिहां लहके, मनी संगति गहके हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ दोइ काने ल कीणां, तसु मोल लहे लाखीणा हो ॥ सुं० ॥ धर प्रवाली राता, रद दाडिम कलीय कहाता हो ॥ सुं० ॥ ५ ॥ इम पूरण मुख चंदो, वली वचन अ मृतरस विंदो हो ॥ सुं० ॥ त्रिवली सोहे ग्रीवा, शंख दक्षिणावर्त सदीवा हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ कमल नाल बे बांहां, कर पल्लव अतिहि उमांहां हो ॥ सुं० ॥ ० कलस कंचन सुविशाला, तसु उपरे पहेरी माला ॥ सुं० ॥ ७ ॥ कटि तटि केहरी खीणो, कंव को लनी परें कीणो हो ॥ सुं० ॥ कटिमेखला कटि पहे री, जीवन जल लेती लहेरी हो ॥ सुं० ॥ ८ ॥ अ ति कोमल दोइ जंघा, विपरीत रच्या केलथंभा हो ॥ ॥ सुं० ॥ पग उन्नत नख राता, जाणे कूरम रच्या वि धाता हो ॥ सुं० ॥ ९ ॥ जीत्या हंस जिणे हाले, ते शोच करे सरपाले हो ॥ सुं० ॥ स्त्रीगुण चउसठ जा . सहु विद्या वेद वखाणे हो ॥ सुं० ॥ १० ॥ कहे :वि सुज साचो, ए चित्र किणहिनो जाचो हो ॥ ॥ सुं० ॥ असुर अमर कोइ नारी, अथ किन्नरी ना गकुमारी हो ॥ सुं० ॥ ११ ॥ आज लगें इण सरखी,

[नारी कोइ न निरखी हो ॥ सुं० ॥ वलति योगणि
शाखे, महाराज सुणो सहु साखे हो ॥ सुं ॥ १२ ॥
नगर नलो वेसाली, तिहां राजा राज खुशाली हो ॥
। सुं० ॥ राय चेडानी धूआ, चेलणा सुजेष्टा दूआ
हो ॥ सुं० ॥ १३ ॥ चित्र लख्यो मति थोडी, तिण
लाख गुणो रूप जोडी हो ॥ सुं० ॥ बीजा खंमनी ए
ढाल, सांनलतां अतिहि रसाल हो ॥ सुं ॥ १४ ॥
राय श्रेणिक चित्त नीनो, मुद्दी ज्युं देखी नगिनो हो
॥ सुं० ॥ लक्ष्मीविनय एम बोले, शीलवंतने कोइ न
तोले हो ॥ सुं० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा देखी मोहियो, पल न करे पट दूर ॥ प
रणु कन्या एक ए,तो मुफ राज पडूर ॥ १ ॥ राय
विचारी एहवो, तुरत तेडायो दूत ॥ वात कही सहु
आपणी, ते पण तेथी पहूत ॥ २ ॥ राजा चेडे पूछि
यो, क्यांथी आव्यो दूत ॥ मगधेसर मों मेलियो, क
रवा आपण सूत ॥ ३ ॥ कन्या मंदिर ताहरे, मागे
ते मगधेश ॥ दूत मुखे ए वचन सुणी, कोप्यो राय
विशेष ॥ ४ ॥ तव राजा वलतो नणे, दूत प्रत्ये ए
बोल ॥ हीन जात वांछे किशो, श्रेणिक निपट निटो

ल ॥ ५ ॥ तुरत दूत पाछो वल्यो, चढयो न काम ग माण ॥ क्रोधतणा अति आकरा, बोल सुणाया आ ण ॥ ६ ॥ नृपति बोल सुणी हवे, चिंते चित्त मजा र ॥ चिंतातुर नृप देखीने, पूछे अजयकुमार ॥ ७ ॥ चिंतानो कारण कह्यो, सहु श्रेणिक महाराज ॥ अ जय जणे चिंता नहि, सारीस सघलां काज ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ करम परीक्षा करणकुंवर चल्यो रे, ए देशी ॥ चिंते मंत्री हवे घर आविने रे, कीजे कोइ उपाय ॥ ताततणी सहु चिंता टले रे, मनवंछित फल थाय ॥१॥ तुरत कला मंत्रीसर केलवे रे, लखि पट श्रेणि क रूप ॥ तेड्या चितारा निज पुरुषसुं रे, कहे मंत्रीस सरूप ॥ तु० ॥ एआंकणी ॥२॥ सुघडपणे तमे करवो आजथी रे, श्रीश्रेणिकनुं रूप ॥ एणे कामे तुमने ते ड्या रे, एहिज ततसरूप ॥ तु० ॥ ३ ॥ वचन सुणि चितारा हरखीया रे, कहे तुम वचन प्रमाण ॥ आवि घरेने नवरंग केलवी रे, वारु करत विन्नाण ॥ तु० ॥ ४ ॥ चतुराइसुं पीछी चालवे रे, धरि चित्त एक ध्यान ॥ पांचे रंग कला अति फावता रे, दे जि हां जिहां अनुमान ॥ तु० ॥ ५ ॥ खट् मासें पट पू

ते थयो रे, नख शिखमय सहु नाव ॥ श्राशि दीधो तेहिज श्रवयनें रे, पायो लाल पसाव ॥ तु० ॥ ६ ॥ जुगल जली परे मंत्री जालव्यो रे, निज कोटंबिक ते डी ॥ कहे कियाणा वारु संग्रहो रे, श्रवर चिंता स हु गोडी ॥ तु० ॥ ७ ॥ लविंग कस्तूरी केसर श्रगंजा रे, जायफल ने कंकोल ॥ पुंगी चिवल ने मोघा पूर वी रे, जेहनो मोंघो मूल ॥ तु० ॥ ८ ॥ जावंत्रीने त ज ताजी नली रे, लीधां पत्र तमाल ॥ श्रकलकरोने तिम तीखा मरी रे, वली श्यामा सुविशाल ॥ तु० ॥९॥ लीधा साथे थिरमा पांजडी रे. पाट पटोलां खास ॥ नारी कुंजर तेणे लीधां घणां रे, श्रवला धरे जसु श्रास ॥तु०॥१०॥ साळू ने ओलां लीधां घणां रे, ली धां दखणी चीर ॥ रंगित ठायज ने शुज चूंनियां रे, खीरोदक ज्युं खीर ॥तु०॥११॥ इत्यादिक खूबने सा थहूं रे, चूवा ने चंबेल ॥ रूपन नंट गाडां जारे जस्यां रे, चाले दवे शुज मेल ॥ तु० ॥ १२ ॥ शुज दिन मु हूरत जोशी पूछियो रे, पूरयां योग सर्यक ॥ श्रंते कि यो प्रस्थानो धाहिरे रे, तजी मननी सहु शंक ॥ तु० ॥ १३ ॥ गुटिका प्रयोगे निजरूप फेरवी रे, नाम ध र्यो धनशेठ ॥ श्रनुक्रमे श्राया वेसालीपुरे रे, राय म

स्थानकेरे, चिंते तेह अजाण ॥ मे० ॥ १६ ॥ अ
चि हुवे बहु सुत जय्यारे, तिणें एको गुण जाण ॥
सास्त्र सकलमां प्रविण जेरे, पुत्र दूजो कुलनाण ॥
॥ मे० ॥ १७ ॥ इम कहीने गुटिका जखेरे, जीव ब
त्रीसे आय ॥ समकालें ते उपन्यारे, वेदन सही नवि
जाय ॥ मे० ॥ १८ ॥ सुर आराध्यो ते वलीरे, था
दूरे सहु कष्ट ॥ सम जीवत सुत ताहरेरे, इम कई
थयो अदष्ट ॥ मे० ॥ १९ ॥ अनुक्रमे तिणे सुत ज
न्मियारे, कीधा उछव कोड ॥ हर्ष थयो बहु सारथीरे,
देखी बत्रीशनी जोड ॥ मे० ॥ २० ॥ कला कुशल
थया ते सहुरे, चढती जोबन रेख ॥ नृपति थाप्या
सारथीरे, करी पारखसविशेष ॥ मे० ॥ २१ ॥ रा
मझारे ए नणीरे, बीजा खंमनी ढाल ॥ लक्ष्मीविनय
एम उच्चरेरे, पुण्य फले तत्काल ॥मे०॥२२॥ सर्व२६

॥ दोहरा ॥

॥ वेशालीनगरी हुवे, राज करे महाराय ॥ सेव
रंजित पूरवे, चेडो नाम कहाय ॥ १ ॥ अवर अव
तणी, तेने कन्या सात ॥ रूपे रतिपति मोह
रंभा सम तनु नात ॥ २ ॥ उदायन घर नावती,
... योग ॥ पद्मावती गुण रंजियां, सकल

ना संयोग ॥ ३ ॥ सतानीक राजा सबल, मृगाव
ती तसु नार ॥ जेष्टा वरी नंदिवर्धने, शिवा प्रद्योत व
र ॥ ४ ॥ कन्या सुजेष्टा चेलणा, बे वत्ति मंदिर
होय ॥ वाद करंतां योगणी, कुंवरी जीती सोय ॥
। ५ ॥ अपमानीती योगणी, चिंते एम धरी रीस ॥
लोकतणे ए संकटे, पाडीश वीशवा वीश ॥ ६ ॥ अम
रख आणी योगणी, लखी कुंवरी पटरूप ॥ आवी
राजगृहिपुरे, जिहांबे श्रेणिक नृप ॥ ७ ॥ योगणि रा
जाने मली, पट दीधो नृप हाथ ॥ रूप अधिक देखी
करी, मोही रह्यो नर नाथ ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी बिंदलीनी ॥ चित्र लिखित रूप देखी, नृप
थकित थयो सविशेषी हो ॥ सुंदर मोहेवे ॥ ए टेक ॥
वेणी सोहे लांबी, अलिकुल ज्युं श्यामता आंबी हो
॥सुं०॥१॥ शशिमुख कीध उजासो, अंधारे लीधो पासो
हो ॥ सुं० ॥ माथे राखडी सोहे, जाणे नाग चूडाम
णि मोहेहो ॥ सुं० ॥ २ ॥ अष्टम शशिसम भाल,
त्रिवली अतिहि विशालहो ॥ सुं० ॥ नयण नलां
अणियालां, बिच कीकी अलिअल कालाहो ॥ सुं० ॥
॥ ३ ॥ नासिका दीप लोइसरखी, अति तीखी कवि

जन परखीहो ॥ सुं० ॥ नकवेसर तिहां लहके, उत्त
मनी संगति गहके हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ दोइ काने कुंड
ल कीणां, तसु मोल लहे जाखीणा हो ॥ सुं० ॥ अ
धर प्रवाली राता, रद दाडिम कलीय कहाता हो॥
॥ सुं० ॥ ५ ॥ इम पूरण सुख चंदो, वली वचन अ
मृतरस बिंदो हो ॥ सुं० ॥ त्रिवली सोहे ग्रीवा, शंख
दक्षिणावर्त सदीवा हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ कमल नाल वे
बांहां, कर पल्लव अतिहि उगांहां हो ॥ सुं० ॥ कुच
कलस कंचन सुविशाला, तसु उपरे पहेरी माला हो
॥ सुं० ॥ ७ ॥ कटि तटि केहरी खीणो, कंठ कोय
लनी परें कीणो हो ॥ सुं० ॥ कटिमेखला कटि पहे
री, जीवन जल लेती लहेरी हो ॥ सुं० ॥ ८ ॥ अ
कोमल दोइ जंघा, विपरीत रच्या केलथंभा हो ॥
॥ सुं० ॥ पग उन्नत नख राता, जाणे कूरम रच्या वि
धाता हो ॥ सुं० ॥ ए ॥ जीत्या हंस जिणे हाले, ते
शोच करे सरपाले हो ॥ सुं० ॥ स्त्रीगुण चवसठ जा
णे, सहु विद्या वेद वखाणे हो ॥ सुं० ॥ १० ॥ कहे
योगणि मुज साचो, ए चित्र किणहिनो जाचो हो॥
॥ सुं० ॥ असुर अमर कोइ नारी, अथ किन्नरी ना
गकुमारी हो ॥ सुं० ॥ ११ ॥ आज लगें इण सरखी,

में नारी कोइ न निरखी हो ॥ सुं० ॥ चलति पांनणि
चाले, महाराज सुणो सहु साखे हो ॥ सुं ॥ १२ ॥
नगर नजो वेसाली, तिहां राजा राज खुशाली हो ॥
॥ सुं० ॥ राय चेडानी पूथ्या, चेलणा सुजेष्टा दूया
हो ॥ सुं० ॥ १३ ॥ चित्र लख्यों मति थोडी, तिण
लाख गुणो रूप जोडी हो ॥ सुं० ॥ बीजा खंमनी ए
ढाल, सांभलतां अतिहि रसाल हो ॥ सुं ॥ १४ ॥
राय श्रेणिक चित्त भीनो, मुद्री ज्युं देखी नगिनो हो
॥ सुं० ॥ लक्ष्मीविनय एम बोले, शीलवंतने कोइ न
तोले हो ॥ सुं० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा देखी मोहियो, पल न करे पट दूर ॥ प
रणु कन्या एक ए, तो मुझ राज पडूर ॥ १ ॥ राय
विचारी एहवो, तुरत मेडायो दूत ॥ वात कही सहु
आपणी, ते पण तेथी पहूत ॥ २ ॥ राजा चेडे पूछि
यो, क्यांथी आव्यो दूत ॥ मगधेसर मों मेलियो. क
रवा आपण सूत ॥ ३ ॥ कन्या मंदिर ताहरे. मागे
ते मगधेश ॥ दूत मुखे ए वचन सुणी. कोप्या राय
विशेष ॥ ४ ॥ तव राजा बलतो भणे, दूत प्रत्ये ए
बोल ॥ हीन जात वांछे किशो, श्रेणिक निपट निटोल

ल्यो देइ नेट ॥ तु० ॥ १४ ॥ राय महेल पासे नाडे लीया रे, वारु वारु हाट ॥ सोदे आवे राजता हेलियां रे, लोक मल्या रहे थाट ॥ तु० ॥ १५ ॥ मोंघी व स्तु ते सोंघी दीये रे, ये उचित नृप गेह ॥ देखी स लोनो सोदो चेडियां रे, आवि लिये सहु तेह ॥ तु० ॥ १६ ॥ बीजा खंमनी ए पूरी थइरे, त्रीजी ढाल र साल ॥ लक्ष्मीविनय कहे गहगहकतो रे, बुद्धि फले तत्काल ॥ तु० ॥ १७ ॥ स० ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्नान करे शुद्ध नीरसुं, पहेरे वस्त्र पवित्र ॥ शे व करे त्रिहुं कालनी, पूजा एकण चित्त ॥ १ ॥ दे खी पूछे चेडियां, किण नामे ए देव ॥ शेठ चवे जी वितयको, श्रेणिक छे अम देव ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष पर त्तो जेहनो, पावे वंछित थोक ॥ कर जोडी सेवा करे, मगध देशनां लोक ॥ ३ ॥ इत्यादिक गुण वर्णना कीधी शेठे तिवार ॥ सखी गइ कुंवरी महेल, कहे केम कीध अवार ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रामचंदके बाग चांपो मोरी रह्योरी ॥ ए देशी । सखीय कहे सुण बोल, जिम मुज चार नईरी ॥ शेठ क

तिण पथे आवे नृप, जो तुम एम वरोरी ॥ करो उ पाय तुरत, अम चित्त दृढ खरोरी ॥७॥ सेवकसुं ते केल, नृपति नेह दयोरी ॥ करी पंचांग पसाय, नरप ति सुख जयोरी ॥ वार्धिक तुरत तेडावी, सुरंगनी वा त कहीरी ॥ त्यां पण कीधो नेम, कनकनी कोडी ल हीरी ॥ ८ ॥ जव थइ सुरंग तयार, त्यारे कुंवरी कहे री ॥ शेव म लावो वार, कुण हवे विरह सहेरी ॥ आ वशे नरपति आज, रहो तुम सज्ज थइरी ॥ सखी क हो तुम जाय, शेठे वात कहीरी ॥ ए ॥ तुरत चल्यो मगधेश, सेना साथ तिणेरी ॥ श्रेणिक साहसधीर, धन अवतार गिणेरी ॥ वत्रीसे वडवीर, सारथी साथ थ यारी ॥ सुलसापुत्र सुजाण, नृपनि जाम मयारी ॥१०॥ अनुक्रमे आव्या तेह, सेना दूर धरेरी ॥ सारथी पुत्र वत्रीश, नरपति साथे करेरी ॥ पेठा सुरंग मजार, चे लणा आइ मिलीरी ॥ निज आभरण संदूप, सुजेष्टा लेण वलीरी ॥ ११ ॥ कहे सारथी सुण नृप, कारज सिद्ध थयांरी ॥ अरि घरें करतां ढील, उपजे कोड न यांरी ॥ सीख वचन सुणी राय, रथ चढी वेग वल्या री ॥ आइ सुजेष्टा ताम, पुंख न खाधा हाथ वल्यारी ॥ १२ ॥ वीजा खंडनी ढाल, श्रेणिक आश फलीरी.

पाधरो, करवा अरिशुं युद्धो रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ पेंगे पूठे सुरंगथी, आपडीयो तसु धायो रे ॥ हात सक त ऊनो रहे, अवला लीधां जायो रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ सुलसासुत उतरि पड्या, रय खेच्यो महारायो रे ॥ इणशुं युद्ध करशुं अमे, जवितव्यता ते थायो रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ तीर सडासड वाहतां, लागो मर्मनी गे डो रे ॥ एक ढलंते सहु ढल्या, बत्रीसेनी जोडो रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ देखी अचरिज एहवो, पाछो वल्यो ते वीरो रे ॥ रण शूरा नर जे हूवे, मृतक जंये नही धीरो रे ॥ रा० ॥७॥ खेडतो घोडा खंतशुं, श्रेणिकनो दल दीगे रे ॥ कांइ पापी कन्या हरी, ऊजो रहे हवे धी गे रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ आमा सामा दल मल्यां, तीर सडासड लागां रे ॥ रण फूकंतां जोरशुं, सुजटां तर वार जागां रे ॥ रा० ॥ ९ ॥ त्रूटे हयनाल हवाइयां, त्रूटे नालना गोला रे ॥ शूरा नर सामा धसे, कायर ताके उंला रे ॥ रा० ॥ १० ॥ बुबकारे पूठ थकी, निज निज सेवक सामो रे ॥ बिरुद वडाइ वे घणी, लें लें बापनो नामो रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ हाक बुंब क लरव करे, पडे लडे रण देशो रे ॥ युद्ध करंतां जालमी, चेडा दल दियो खेसो रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ दल जाजं

तो देखीने, मंत्री बुद्धि विशेको रे ॥ वेशाली नृपने क हे, राय धरो सुविवेको रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ वीर सुनट आयो तिसे, वात कही सहु तेहो रे ॥ एके बाणे आ हण्या, कुंवर बत्रीशे जेहो रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ सुणी राजा मन चिंतवे, नवितव्यतानी वातो रे ॥ चंचल चप लए आगलो, क्रोधमान दिन रातो रे ॥ रा० ॥ १५ ॥ किणसेंती तुमे युद्ध करो, ए पत्ति पुत्रि तुजोरे ॥ व चन देये धरो मालरो, तत्त मरमनो गुझो रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ मिठे वचने न्यायने, समजायो राजानो रे ॥ मूक्या प्रधान ते आपणा, श्रेणिक देइ बहु मानो रे ॥ रा० ॥ १७ ॥ बीजा खंमनी पांचमी, ढाले चेलणा मेलो रे ॥ ठल बल जे नर साचवे, काम सरे तसु हे लो रे ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ११४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जइ परधाने वीनव्यो, सुण राजा मगधेश ॥ अविचार्यो कारज कीयो, निणे थयो दंत क्लेश ॥ १ ॥ आव्यो मंदिर आपणे, हरख्यां सहु नरनार ॥ चेल्ल णाने परणावीने, दीधा तेजी तोखार ॥ २ ॥ सुज्येष्टा संयम आदरयो, साध्या आतम काज ॥ आवे नगरे आपणे, श्रीश्रेणिक महाराज ॥ ३ ॥ दोज्या वधाउ

आगले, लइ कर नीली माल ॥ वेगां सांमेलो सजी आव्यो श्री नृपाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥

॥ देशी काठवारी सोरठी ॥ हवे मंत्री परधानदे सखी मोरी आगम सुणी राजा तणो ॥ तुरत वजाव्या तूरहे ॥स०॥ घर घर उत्सव अति घणो ॥१॥ तेडायो कोटवाल हे ॥ स० ॥ कहे मंत्रीसर सिर तिलो, नगर करावो शुद्ध हे ॥ स० ॥ नीर छंटावो निर्मलो ॥ ॥ २ ॥ पचरंगी उत्तम फूल हे ॥ स० ॥ विछावो गली यें गली, सणगारो सहु हाट हे ॥ स० ॥ निरखंतां हूये रंगरली ॥३॥ सजी सोलह सिणगार हे ॥ स० ॥ चंद्र वदन मारग चली, शीशें सोवन कुंभ हे ॥ ॥ स० ॥ वधावे रायने वली वली ॥ ४ ॥ मृगनयणी चढी गोख हे ॥ स० ॥ निरखे मगधनो राजीयो, वड वखती वनियांम हे ॥स०॥ पद्मणि परणी घर आवीयो ॥५॥ जीवे कोडी वरीष हे ॥स०॥ आशीष वली वली उचरे, वाजंते निशान हे ॥ स० ॥ नरपति महेले संचरे ॥ ६ ॥ नरवर श्रेणिक राय हे ॥ स० ॥ पटराणी कहावी चेलणा, विलसे भोग अनेक हे ॥ ॥ स० ॥ नित नित नवला खेलणा ॥ ७ ॥ कारागृ

वेर कदि तूटे नहीं, जिण तिण आवे अंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मोरा साहेब हो, श्रीशीतलनाथके ए देशी ॥
जंबूद्वीपेहो इण भरत मकारके, नगर वसंतपुर पुरति
लो ॥ तिहां राजाहो पाले राज पमूरके, जितशत्रु ना
मे अति भलो ॥ १ ॥ तसु राणी हो, अमरा पटरा
णीके,सीले सीता सम कही ॥ तसु अंगज हो सुमंग
ल इण नामके, रूपे तिण सम को नहीं ॥जं०॥२॥
निज रूपे हो मोहे नरनारीके, मदमातो रातो रहे ॥
नवि लेखे हो बीजो नयणा मेटके, आठे मदेमातो
रहे ॥ जं० ॥ ३ ॥ तसु मंत्री हो नंदन गुण हीणके,
श्रेणिक नामे रूप विना ॥ नृप नंदन हो संतावे नि
त्यके, चिंते ते इम शुभ मना ॥जं०॥४॥ में कीधी हो
परभव जीव हिंसके, अथवा मुनि संतापिया ॥ तिणे
इण भव हो हुं दोहग ठामके,चिंते इम श्रेणिक हीयां
॥जं०॥५॥ हवे कीजेहो कांइक तप कष्टके, तो पूरव
तफ वेलिये ॥ इम चिंतविहो परिग्रह सवि छोडके,
[illegible] व्रत हवे ते लिये ॥जं० ॥ ६ ॥ जितशत्रु हो
निज मननी खंतके, पाट सुमंगल थापियो ॥ तप क
रतोहो श्रेणिकमुनि तेहके, क्रमें वसंतपुर आवियो ॥

॥ जं० ॥ ७ ॥ तिणे लीधो हो अभिग्रह अति क्रूरके, उग्रडि नामे तप तणो ॥ निमंत्रे हो पहिलो जे आय के, करवो तेहने पारणो ॥ जं० ॥ ८ ॥ तप महिमा हो पसर्यो जगमांहीके, लोक थया सहु रागिया ॥ कर जोडी हो सेवे निश दीशके, नर नारी पाय लागियां ॥ जं० ॥ ए ॥ ते नरपति हो जन मुख सुणी वाणिके, वांदी अपराध खामियो ॥ तव नरपति हो निज मनने नायके, पारण काज निमंत्रियो ॥ जं० ॥ ॥ १० ॥ इम कहीने हो पोहोतो निज ठाणके, मुनि मास खमणने पारणे॥ नृप पीडा हो थइ तेणी वार कें, जब आव्यो राय बारणे ॥ जं० ॥ ११ ॥ तिण मांहेहो नवि पेसे कोइके, वण रीसे वल्यो मुनि तिको ॥ पेहेले घर हो जो छुगति अजन्यके, बीजो खमण करे जिको ॥ जं० ॥ १२ ॥ वली नरपति हो निमंत्रण कीधके, तिणी परें पारणो नवि दीयो॥ त्रीजे पण हो पारणनी वेलके, उत्सव वस मुनि अवहेलीयो ॥ जं० ॥ १३ ॥ तव तापस हो चढियो बहु कोपके, अति भूख किसो नवि लोपियें ॥ इण पापि हो लाज च मुज लायके, पण मुज पारणो नवि दियो ॥ जं० ॥ ॥ १४ ॥ हवे परभव हो एहने वधी दायके, हुं होजो

तिण मति वही ॥ नियाणोहो करी पामे कालके, तापस व्यंतर गति लही ॥ जं० ॥ १५ ॥ हवे नृपति हो, सुमंगल तेहके, राज तजी थयो संजती ॥ व्यंत रगति हो तिण पण लही सारके, हूउं श्रेणिक नृपति ॥ जं० ॥ १६ ॥ खंम बीजे हो ए सातमी ढालके, श्रे णिकनो नव नांखियो ॥ तापसनी हो सुणजो हवे वातके, जेणे नियाणो दाखियो ॥ जं०॥ १७ ॥स०१५२

॥ दोहा ॥

॥ पटराणी नृपतितणी, चेलणा नर उत्पन्न ॥ ग र्न पसाये मोहलो, पति मांस नक्षण मन्न॥ १ ॥ राणी देखी डुबली, राजा पूछे वात ॥ अति आ ग्रहसुं तिणे कही,आपणा मननी धात ॥ २ ॥ मंत्री नेद जणावियो, ते एम करे उपाय ॥शशक मांस अणावीने, धरि उर ठेदे राय ॥ ३ ॥ राणी मोहलो पूरियो, राजा दीयो उछंग ॥ गर्न ते पाले गोरडी, सुत संपत नलंन ॥ ४ ॥ पूरे मासे जन्मियो, परठ्यो वा डी जाम ॥ चंद समो करे चांदणो, श्रेणिक संचरे ता म ॥ ५ ॥ ताम्रचूडको तिण समे, चुंणतो आव्यो चू ण ॥ अति सुंदर कोमल घणुं, तिण आंगुल कीधी उं ण ॥ ६ ॥ राजायें ते संग्रह्यो, अशोकचंद कही नाम

सर्व कला निधि जोइने रे लो, आठ कन्या धरी स्नेह रे॥ सु० ॥ परणावी एकण दिने रे लो, ताते अधिक स्नेह रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ ७ ॥ आठ रमणि सुख जोगवे रे लो, दोगंदक सुर जेम रे ॥ सु० ॥ सुख समाधे प्रवर्ततां रे लो, जे थयो ते कहे तेम रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ ८ ॥ ग्रामागर पुर विहरतां रे लो, आव्या श्रीजिनराज रे ॥सु०॥ श्रेणिक कुंवर परिवारशुं रे लो, पहूता वंदन काज रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ ९॥ देशना सुणी जिनवरतणी रे लो, नविक जीव सुखकार रे ॥ सु०॥ श्रेणिक समकित उचर्यो रे लो, श्रावक अजय कुमार रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ १० ॥ मेघकुंवर माताजणी रे लो, कही यो अनुमति आज रे ॥ सु० ॥ संयम लेशुं प्रजु कनें रे लो, सारीश आतम काज रे ॥ सु० ॥ ॥ ह० ॥ ११ ॥ अनुमति लही परिवारनी रे लो, ले संयम मन रंग रे ॥ सु० ॥ राते दूहवियो घणुं रे लो, मुनि गमनागमन प्रसंग रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ १२ ॥ मन जंगे हवे प्रहसमे रे लो, मेघ आव्यो प्रजु पास रे ॥ सु० ॥ संयम दृढ करवा जणी रे लो, पूरव जव कही तास रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ १३ ॥ जिनवर सुख जव सांजली रे लो, धरे संयम सुपवित्त रे ॥सु०॥

जा राणी नावशुं, वंद्या मुनिवर पाय ॥ संध्याये घरे आविया, सहुको हर्षित थाय ॥ ४ ॥ सुंदर मंदिर आपणे, करता केलि निःशंक ॥ राजा राणी चेलणा, पोढ्यां एक पलंक ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ राग मल्लार प्रोहितीयाना गीत नी ॥ निंदा म करशो कोइनी पारकीरे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा श्रेणिक पोढ्यो मंदिरे रे, राणी चेलणा केरे साथ रे ॥ निद्रावश राणी नवि लख्यो रे, सोड बाहिर रहियो हाथ रे ॥ रा० ॥ १ ॥ सीते कर ठरियो अति घणो रे, झबकी जागीने कहे एम रे ॥ ते केम होशे प्रीतम एम सुणि रे, चिंते श्रेणिक मनमें तेम रे ॥ रा० ॥ २ ॥ असतीने मनमांहे कुण वसे रे, चंचल चित्त नारीनो होय रे ॥ वायस कदि न होवे निर्मलो रे, देखो पंचामृतशुं धोय रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ अंतेउर परजालण जणी रे, दे मंत्रीसरने आदेश रे ॥ नरपति पहोतो श्रीजिन वंदवा रे, कहे मंत्रीने श्रीमगधेश रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ अजय सुणी वच हीयडे चमकीयो रे, अविचार्यो दीधो आदेश रे ॥ मुज माता तो शीले नवि चले रे, जो आवे पोते अमरेश रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ जिम तिम अंतेउर ए रा

खवो रे, शुद्धि प्रांच करी इहां कोइ रे ॥ अंतेवर प ण प्रजालवो रे ॥ राय हूकम पण साचो होय रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ जीरण जाली कुंजरनी कुटी रे, मंत्री हूवे एहवा बुद्धवंत रे ॥ वांदी पूछे नरपति एकमना रे, चेलणा कहेवी कह्यो नगवंत रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ जि न बोले सांजल तुं शुजमति रे, साते सतियां में शिर ताज रे ॥ नरपति चेडानी साची सही रे, इण परें नगवंत सांसो नांज रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ इम सुणी नृप वेगे आव्यो वही रे, शुं तें कीधो इम कहे वाण रे ॥ अन्नय नणे तुम हूकम कियो अमे रे, तें पण कांइ न वेमया प्राण रे ॥ रा० ॥ ९ ॥ मंत्री तात तणो व च संग्रही रे, बोले बाल मरण न करुं निटोल रे ॥ ए अवसरे संयम लेइस नावशुं रे, अनयकुंवर कह्यो ए बोल रे ॥ रा० ॥ १० ॥ चिंत निवारो राजा चित्तनी रे, ढे तुम अंतेवरने क्षेम रे ॥ राजा सुणी अति ह र्षित थयो रे, वलतो अनय नणी कहे एम रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ तुं मुज जीवन प्राण ढो जगतमे रे, तुं मु ज मानससरोवर हंस रे ॥ चिरंजीवे तुं मंत्री माहरो रे, तुजथी उंप्यो मारो वंश रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ सुख नोगव तो रहे तुं सासतो रे, संतोप्यो इम कही सुवचन्न रे ॥

बुद्धियें जिणे अंतेउर राखियो रे, लोक कहे धन धन्न रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ नवमी ढाल ए खंम बीजा तणी रे, लक्ष्मीविनय कहे सुविलास रे ॥ बुद्धि प्रबल जिण पुरुषनी रे, तेहनो सघले जग यश वास रे ॥ रा० ॥ १४॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण अवसर एकदा, पभणे चेलणा रंग॥ एकथंभो सुंदर घणो, गृह मुज काज सुरंग ॥ १ ॥ करावी द्यो मुज भणी, प्रीतम मन उल्लास ॥ सघली मां अधिकी हुवुं, पूरो ए मुज आश ॥ २ ॥ नित्य नारी सुजागणी, प्रीतम जेहने हाथ ॥ जेहने प्रीतम वश नहि, सा नारी काढी नाथ ॥ ३ ॥ नृपति मंत्री भांखियो, मंदिरनो विरतंत ॥ अनयकुंवर हवे ततक्ष णे, चिंते बुद्ध बुद्धिमंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी जिनवरशुं मेरो मन लागो, अ थवा शेत्रुंजे साधु अनंता सीधा ॥ ए देशी ॥

॥ अनय तेडाव्या वार्धिक ततक्षण, गृह विधि जाणणहार रे ॥ मंत्री वार्धिक साथे लेइ, पहुता व नह मझार रे ॥ अ० ॥ १ ॥ फिरि फिरि वन खंम त रुवर पेखे, तिहां दीठो तरु एक रे ॥ शाखा पत्र फूल फल देखी, मंत्री धस्यो विवेक रे ॥ अ० ॥ २ ॥ सुंदर

वन ए देव अधिष्ठित, ठोते थयो विठाय रे ॥ अ०
॥ ११ ॥ मंत्री शिरोमणि तेडी राजा, कहे एवो आ
देश रे ॥ वन फल तस्कर निग्रह कीजे तेहनो, त
जीये विश्वास विशेष रे ॥ अ० ॥ १२ ॥ बीजा खं
मनी दशमी ढाले, महेल तणो अधिकार रे ॥ लक्ष्मी
विनय निजमति अनुसारे, भाखी ढाल उदार रे ॥
अ० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ २१४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचामृत जल पूरियां,तरु तरु मूले आय ॥ गू
गल अगर उखेवियां,नव पल्लव वन थाय ॥१॥ तस्क
र निग्रह कारणे,मंत्री करे उपाय ॥ बुद्धि प्रबल जिण
पुरुषने, तसु जिम तिम कारज थाय ॥ २ ॥ कथा ए
क मन केलवी, सुंदर अद्भुत वात ॥ सुणतां अचरि
ज उपजे, नेदे साते धात ॥ ३ ॥

॥ ढाल अगियारमी ॥

॥ थारां महेलां ऊपर मेह, झरुखे विजलीहो ला
ल ॥ झ० ॥ ए देशी ॥ नगर नमे निश दीश, धरे मन
कंदमें हो लाल ॥ ध० ॥ कथा कहे मंत्रीस, वेसी नर
वृंदमें हो लाल ॥ वे० ॥ नगर वसंतपुर नाम, सहु
जग जाणियो हो लाल ॥ स० ॥ निर्धन जीरणशेठ,

वसे तिहां वाणियो हो लाल ॥ व० ॥ १ ॥ तस पुत्री रति रूप, यौवन जल झिल रही हो लाल ॥ यौ० ॥ मांहे सुर नर लोक, यौवन ज्योति मिल रही हो लाल ॥ यौ० ॥ चोरे नित वन फूल,ते रति पति कारणे हो लाल ॥ते०॥ चरचे पूजे देव, थे कु द्वि पति वारणे हो लाल ॥थे०॥२॥ नित नित चोरी कोइ, करे वन माहरे हो लाल ॥ क० ॥ जाणे नहीं नर कोइ, न होवे जाहरे हो लाल ॥ न० ॥ एम वि मासि वनपाल, छिपी दिवस्स रह्यो हो लाल ॥छि०॥ आंते आवी बाल, झालि कर इम कह्यो हो लाल ॥ झा० ॥३॥ घणा दिवस नें लीध, जलां फूल माहरां हो लाल ॥ज०॥ लाधी तुज में आज. जाणी गुण ता हरा हो लाल ॥ जा० ॥ नवि छांडुं तुज नेट, वचन माली इसा हो लाल ॥ व० ॥ जो आवे मुज पास, परण पेहेली निशा हो लाल ॥ प० ॥ ४ ॥ वाचा मा नी बाल, छोडी मालितिका हो लाल ॥ छो० ॥ अनु क्रमे वर धनवंत, कन्या परणे जिका हो लाल ॥क०॥ पहुता सुणिहि जाम, करें प्रीय वीनति हो लाल ॥ क० ॥ वाचानी कही वात, मालिनी पीनती हो लाल ॥ मा० ॥ ५ ॥ लही प्रीतम आदेश, चली निशि ए

कली हो लाल ॥ च० ॥ मारगें मलिया चोर, साथी वातें मूकी वली हो लाल ॥ सा० ॥ तिण परें राक्षस लंघी, गइ वनमे जिसें हो लाल ॥ ग० ॥ वनमाली द ढ देखी, कहे जगनी तिसें हो लाल ॥ क० ॥ ६ ॥ वलतां राक्षस चोर, तजी तेहने तंइ हो लाल ॥ त० ॥ कुशले आवी गेह, मली प्रीतें जइ हो लाल ॥ म० ॥ कहो कुण दुष्करकार, कहे मंत्री इशो हो लाल ॥ ॥ क० ॥ मानी अमरस वंत, सराहे पियु जिसो हो लाल ॥ स० ॥ ७ ॥ लोक बहुक्ति जेह, अधिक राक्ष स गणे हो लाल ॥ अ० ॥ जे कामी कामांध, दुष्कर माली नणे हो लाल ॥ ६० ॥ चोर चतुर ति एमांही, जंपे मानंगीयो हो लाल ॥ जं० ॥ मुहूते त तक्षण तेह, तुरत चोर परखियो हो लाल ॥ तु० ॥ ॥८॥ पूछयो किम फल लीध, कहे विद्या करी होलाल ॥क०॥ आव्यो नरपति पास, मागे विद्या खरी हो लाल ॥ मा० ॥ वनो कहे ते नीच, विद्या नरपति ज णी हो लाल ॥ वि० ॥ नावे कहे मंत्रीश, विनय विण अम धणी हो लाल ॥ वि० ॥ ए ॥ सिंहासन बेसाडी, तुरत विद्या ग्रही हो लाल ॥ तु० ॥ पहुता निज नि ज धाम, सहु सुखथी रहे हो लाल ॥ स० ॥ वुद्धें का

रिज कीध, मह्यो चोर इण विधे हो लाल ॥ म० ॥
मतिवंत मंत्री होय, तियां कारिज सधे हो लाल ॥
॥ ति० ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ २२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर पुर एकदा, समोसख्या जिनवीर ॥
जगवंत वंदण ऊमह्यो, श्रेणिक साहस धीर ॥ १ ॥
मारग जातां वालिका, देखी एक डुर्गंध ॥ वांदी पूछे
जिन जणी, तेह तणो संबंध ॥ २ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ नेमी समोसख्या, ए देशी ॥ अथवा धर्म हैये
धरो ॥ ए देशी ॥ श्रीजिनवर वलतो जणे रे, निंदा
विकथा गोडी ॥ सुण श्रेणिक नृपाल रे, जे कहियें ते
थोडी रे ॥ १ ॥ कर्मतणी कथा ॥ ए आंकणी ठे ॥
धरजो हैये विचारी रे ॥ हीन कुल अवतरी, वली
थइ श्रेणिक नारी रे ॥ कर्मतणी कथा ॥ २ ॥ इणहि
ज द्वीपे जरतमें रे, ठे सालिग्राम शुज गाम ॥ तिहां
निवसे एक वाणियो रे, धन मित्र एहवे नामो रे ॥क०
॥ ३ ॥ वेटी धनश्रिरि तेहने रे, सुंदर शोजा तन्न ॥
मात पिता जीवन समी रे, पोतें परिघल धन्नो रे ॥
॥ क० ॥४॥ तसु विवाहने महोत्सवे रे, मुनि मल म

लिन शरीर ॥ आया देखी हर्षित मने रे, उठी धन शिरि धीरो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ अशन पान वोहरावतां रे, आव्यो मल डुर्गंध ॥ मुह मचकोडी निंदा करे रे, कियो अशुन्न कर्म बंधो रे ॥ क० ॥ ६ ॥ तिहांथी म री इण पुर वरे रे, गणिका उर अवतंस ॥ गर्जने संगे तेहनो रे, सुख न रह्यो तनु अंशो रे ॥ क० ॥ ७ ॥ नेडो को आवे नहीं रे, अरति धरे डुर्नंग ॥ जात मा त डुर्गंधपणे रे, नंखावे इण मागो रे ॥ क० ॥ ८ ॥ अशुन कर्म इणे नोगव्यो रे, हवे लेहेशे सुख जोग ॥ आव वरस स्त्री ताहरी रे, नोगवशे बहु नोगो रे ॥ ॥ क० ॥ ए ॥ ते कहे केम हुं जाणशुं रे, ते चढशे त म पूंठ ॥ कामनिशुं तुमे क्रीडतां रे, जिन वंदी नृप उ वचो रे ॥ क० ॥ १० ॥ हवे त्यांथी ते बालिका रे, लइ आहीरणी काय ॥ लाले पाले निज पुत्री परें रे, जिहां तिहां कर्म सखायो रे ॥ क० ॥ ११ ॥ हवे राजगृही पुरी कौमुदी रे, उत्सव देखण काज ॥ आवे ते नि ज मातशुं रे, योवन लावन राजो रे ॥ क० ॥ १२ ॥ नर नारी टोलां मिल्यां रे, त्यां महा मंत्री मगधेश ॥ निशि कौतुक देखण नणी रे, आवे फेर विवेशो रे ॥ ॥ क० ॥ १३ ॥ नीड वसें ते आहीरणी रे, उवे नुज

ग जग लग्यो, रखे सुणे तसु वाण ॥ नर नारी सहु वश कियां, योजन वाणी वखाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हुं तुज आगल शी कहुं केशरीया लाल ए देशी ॥

॥ शीख सुणी हवे ताननी वालेसर, रहे रोहणि यो चोर रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ राजगृही पुरमे सदा ॥ ॥ वा० ॥ करतो चोरी अघोर रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ ॥ १ ॥ मंत्रीसर हवे जे करे ॥ वा० ॥ सुणजो तेम न लाय रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ ताते शीख दइ जिका ॥ वा० ॥ ते पण विफली थाय रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ ॥ मं० ॥ २ ॥ ग्रामागर पुर विहरता ॥ वा० ॥ समो सखा जिन वीर रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ नर नारी वंद न गयां ॥ वा० ॥ करवा पवित्र शरीर रे ॥ वा० ॥ ॥ लाल ॥ मं० ॥ ३ ॥ चोरी करी आव्यो तिसे ॥ वा० ॥ वलतो तिणे आराम रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ श्रवण आं गुलीये रुंधवी ॥ वा० ॥ कांटो विंध्यो ताम रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ मं० ॥ ४ ॥ ते उद्धरवा वेगो जिसे ॥ वा० ॥ सांभलीयो सुर स्वरूप रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ पहुतो पुर धनहर हवे ॥ वा० ॥ ए वात कहे जन चूपरें ॥ वा० ॥ लाल ॥ मं० ॥ ५ ॥ राय हूकम मंत्रीसरू

विवेक रे॥वा०॥लाल॥ साते क्षेत्रे धन वावस्यो ॥वा०॥ सील नावादि अनेक रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ मं०॥१२॥ जंपे मंत्रीसर जाणीने ॥ वा०॥ तें किम जाण्यो मुज दंन रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ तुंह्जि चोर विसवावीशगुं ॥ वा० ॥ ते नणे गुरु उवंन रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ मं० ॥ १३ ॥ कुण गुरु कहे जिन वीरजी ॥ वा० ॥ ताम जणावे निज विरतंत रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ देई धन व्रत आदस्यो ॥ वा० ॥ पाली पहुंतो स्वर्गनी अं त रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ मं०॥१४॥ सर्वगाथा ॥२६६॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे ठे सागरमांहि शुन, आदनपुर अनिरा म ॥ तिहां ठे आदन नरपति, राणी आदन नाम ॥ १ ॥ अंगज आई कुमार तसु, सवि गुण कला नि धान ॥ एक दिन तिहां आव्यो वही, श्रेणिकनो पर धान ॥ २ ॥ नेट देइ नृपने मल्यो, हरख्यो आदन चित्त ॥ पूठे कुंवर कवण नृप, कहे श्रेणिक मुज मि त्त ॥ ३ ॥ तेहतणा ए मंत्रवी, सुणी कहे आईकुमा र ॥ मंत्री तुम स्वामी तणे, कोइ नंदन ठे सुविचार ॥४॥ तिणसुं करिशुं प्रीत हुं, इम सुणि ते कहे बोल ॥ अम प्रनुने सुत ठे जिको, तसु मति सुर गुरु तोल ॥५॥

॥ ढाल चौदमी अलबेलानी देशी ॥

॥ अनयकुंवर नामे नलो रे, पणसें मंत्री सिरता ज॥ सुविचारी रे ॥ दान दया गुण आगलो रे लाल, सोहे निज जुज राज ॥ सु० ॥ अ० ॥ १ ॥ आदन सुत रंज्यो घणुं रे, दीधे जातां तसु साथ ॥ सु० ॥ नेट जुइ कही वीनती रे लाल, ए देजो तसु हाथ ॥ सु० ॥ अ० ॥ २ ॥ लेइ राजगृह आवीया रे, आपी नेट उदार ॥ सु० ॥ संदेशो कहे अनयने रे लाल, चिंते ते तिणवार ॥ सु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुगनि पूरव नव आसने रे, चरण करण विराध ॥ सु० ॥ तिणे इण नव अनार्यें रे लाल, देश उत्पत्ति लाध ॥ सु० ॥ अ० ॥ ४ ॥ सुजसुं गुरु कर्माजिके रे, मित्रपणो न करंत ॥ सु० ॥ तिण कारण जिन नांखिया रे लाल, सरिखा सरिख गचंत ॥ सु० ॥ अ० ॥ ५ ॥ जिनप्र तिमा जिन सारिखी रे, दर्शन सवि सुख काम ॥ सु० ॥ एहशे प्रतिबोध देखतां रे लाल, जातिस्मरण पाम ॥ सु० ॥ अ० ॥ ६ ॥ इम चिंतवी उपकरणसुं रे, आपी मंजूसे नाव ॥ सु० ॥ प्रतिमा जिन युगा दिशनी रे लाल, मंत्री तास पसाय ॥ सु० ॥ अ० ॥ ७ ॥ ते नर तिहां आपे जइ रे, हवे ते हर्ष विश

प ॥ सु० ॥ मंजूस उघाडे जेहवे रे लाल, तिहां जिन प्रतिमा देख ॥ सु० ॥ अ० ॥ ८ ॥ कुऐं आनरण मुज मोकल्या रे, आगे राखी थाप ॥ सु० ॥ वली वली तसु जोवतां रे लाल, जातिस्मरण प्राप ॥ सु० ॥ अ० ॥ ए ॥ जातिस्मरणे जाणियो रे, हुं इहांथी जव त्रीज ॥सु०॥ नाम सामायिक कुटुंबकी रे लाल, नगर वसंत सुणीज ॥ सु० ॥ अ० ॥ १० ॥ रमणी वंधुमती सायशुं रे, धर्म सुणी व्रत लीध ॥ सु० ॥ महिला व्रतमां निरखतां रे लाल, राग नावमें कीध ॥ सु० ॥ अ० ॥ ११ ॥ मुज नाव तिणे जाणी करी रे, आणी मन संवेग ॥ सु० ॥ व्रतजंग तणे नयें तिणे रे लाल, अणसण लीधो वेग ॥ सु० ॥ अ० ॥ १२ ॥ काल करी स्वर्गे गइ रे, हुं पण सुणी तसु वात ॥ सु० ॥ अणसण सुरपद पामियो रे लाल, चवि देश अनारय जात ॥सु०॥अ०॥१३॥ मुज जिन प्रतिमा प्रति बोधियो रे, धन ते अनय सुदेश ॥ सु० ॥ तसु मलवा मन उमह्यो रे लाल, मागे पितानो आदेश ॥ सु० ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥ २८५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय रखवाला राखिया, पांचसे राजकुमार ॥

र रे ॥ मु० ॥ तिण कारण आजीविका, होशे इण आधार रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ इम सुणी बालक बोलियो, बांधी राखीस हुं तात रे ॥मु०॥ सूत कांत्यो होय जे टलो,यो मुज मोरी मात रे ॥मु०॥५॥ इम कही का चे तांतणे,ताततणां पग विंट रे ॥मु०॥ किम जाइश एम सुणी करी,देखी निज सुत मिंट रे ॥मु०॥६॥ गाहा रस श्रवणे सुणी,तिम वली स्त्री हावजाव रे ॥मु०॥कवि कल्लोल तिमें कह्या,बालक मुणमुण लाव रे ॥मु०॥७॥ नेह विलूधो वचन सुणी,गणि तांतणां ते वार रे ॥मु०॥ तेता घरे वरसो हवे, रेहवो आर्द्रकुमार रे ॥मु०॥८॥ वरसे वोले व्रत लीयो, सेवक पणसें चोर रे ॥ मु० ॥ प्रति वोधि वलि युगमसुं, मंखलि पुत्र कठोर रे ॥ मु० ॥ ए ॥ पंथे गजबंधन गोडवी, साथें तापस कीध रे ॥मु०॥ राजगृहिपुर आवीयो,वंदन जिणंद प्रसिद्ध रें ॥मु०॥१०॥ मुनिवर आयो सांभली,हवे श्रेणिक नर राय रे ॥मु०॥ मंत्री बहु जन वृंदशुं,वंदे तेह्ना पाय रे ॥मु०॥११॥ कर जोडी श्रेणिक कहे, तुम दर्शन गज केम रे ॥मु०॥ मूकाणो बंधनथकी,मुनि कहे वलतो ए म रे ॥मु०॥१२॥ लोहतणां बंधन जिके,ते न थया ब लवंत रें ॥मु०॥ सूत्र तंतणना बंधणा, ते मुज कठिन

त्रीजो खंम हवे बोलशुं, सद्गुरु करो सहाय ॥ १ ॥ खीर खांम घृत त्रण मिल्यां, उपजे सरस सवाद ॥ तिम ए त्रीजो खंम करुं, तजी अंगे परमाद ॥ २ ॥ एक दिन प्रभुश्रीवीरजी, राजगृही उद्यान ॥ जव सायर तारण तरण, समोसख्या वर्द्धमान ॥ ३ ॥ श्रेणिक निज परिवारशुं, वंदन पहुतो तेय ॥ परख द बार मिली तिहां, सुणवा जिनधर्म एय ॥ ४ ॥ तिण क्षणे कोइएक नर, करतो प्रभुनी सेव ॥ रसीय चूंदे जिन चरणशुं, निरखे निम नरदेव ॥ ५ ॥ अ ति कोपातुर नृप थयो, इण अवसर प्रभु राय ॥ छींके अजयकुमार तम, कालकसूरीयो आय ॥ ६ ॥ अनु क्रमे तव कोढी नणे, करतो प्रभुनी सेव ॥ मरिसु जीव अद्जीव मरि, ममरि जीवनदेव ॥ ७ ॥ एम सुणी रुडो थाइसे, नरवर निज नर नेई ॥ ए नर जातो साहिजो, ते तमु जाग्या केई ॥ ८ ॥ ते तत क्षण उडी गयो, नृपने कह्यो वदंत ॥ पूछे श्रेणिक तेहनो, चरित्र नणे नगवंत ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली चोपाइनी देशीमां ॥

॥ नगर कोसंबीनामें नलो, सतानिक राजा अति नलो ॥ तिहां निवसे ब्रा सेडूक, निर्धन मूरख

गयो थयो काया सुख ॥ वली आव्यो निज घर ते, देख, सवि परिजन कोढी सुविशेष ॥ १० ॥ हरख्यो विप्र विशेषे ताम, सविशेष जनने जंपे आम ॥ मुझ अवहीला फल तुम लह्यो, तव सज्जन वलतो इम कह्यो ॥ ११ ॥ दुष्टी तुज सम अवर न कोइ, दीठो नहि जन संताप्यो सोइ ॥ राजग्रहपुर आव्यो तेह, पोलिया पासे रहे धरी नेह ॥ १२ ॥ एक दिन आव्या वीर जिणंद, भविक कुमद पडिबोहण चंद ॥ वंदन पोहोतो पोलियो ताम, द्विज स्यापी रखवालो गाम ॥ १३ ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्यां वली दुरगा देहरे, भखे घणो बल ताम ॥ तास तृषा व्यापी घणुं, जल आरतें मरि ताम ॥१॥ जल आसूत किण वावमें, उपनो जाइ भेक ॥ अन्य दिन अम आव्या वही, सुणी तसु थयो विवेक ॥२॥ जातिसमरण उपन्यो, मेंमरने तिण काल ॥ अम वंदणने संचर्यो, हय हणियो खुर ताल ॥ ३ ॥ शुभ भावे ते सुर थयो, दुर्दुरांक इण नाम ॥ ईंद प्रशंसा तुम सुणी, आव्यो एणे गाम ॥ ४ ॥ रसीय भ्रमे करी वंदणे, चरचे अमारा पाय ॥ सुर परमारथ सहु

कह्यो, भगवन करी पसाय ॥ ५ ॥ श्रमने परभव
शिव हुसी, तुमने परभव नरक ॥ अभव नणी सुख
विहुं नवे, सूरीय इत उत नरक ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ श्रेणिक मन अचरिज थयो ॥ ए देशी ॥ वचन
सुणी एम वीरनां, श्रेणिक दुःख थयो गाढो रे ॥ क
जोडीने वीनवे, मुजने नरकथी काढो रे ॥ वचन
णी० ॥१॥ जिम हुं नरके नवि पडुं, ते उपाय कह
स्वामी रे ॥ जिन जांखे कपिला कने, दान दीवावे
खधामी रे ॥ व० ॥ २ ॥ नृपति आवी मंदिरे, क
जाने बोलावे रे ॥ सोवन पात्र वेमीने, दान दे मा
ने जावे रे ॥ व० ॥ ३ ॥ वळती दासी एम जणे, न
च काम हुं करीशुं रे ॥ पण ऽण नव ऽण हाथ
साधुने दान न देशुं रे ॥ व० ॥ ४ ॥ नेऽथी वधटा
ए जणी, कालकसूरिया रूप रे ॥ किणहि उपाये
वि रहे, तव ते घाल्यो कूप रे ॥ व० ॥ ५ ॥ तोप
मनशुं महिष लइ, मारे विसवावीसा रे ॥ चिता
नृप देखीने, पभणे श्रीजगदीशा रे ॥ व० ॥ ६ ॥
में निकाचित बंधिया, ते तुं जोगव राजा रे ॥ न
तव्यता जाजे नहि, जो करे कोडि ऽजाजा रे ॥ व

॥ ७ ॥ तिहांथी तुं होइश सही, अम सम पढम जि णंदो रे ॥ पद्मनाभ नामे भजो, सेवशे चोसठ इंदो रे ॥ व० ॥ ८ ॥ हर्षित नृप प्रभुने नमी, पुर आवे ति ण काले रे ॥ माली रूपे सर कंठें, मुनिवर एक निहा ले रे ॥ व० ॥९॥ उंचो केडे बांधीयो, मद्य कादे सर कांठे रे ॥ देइ प्रदक्षिण वीनवे, नृपति वचने मीठे रे ॥ व० ॥ १० ॥ ए शुं दीसे साधुजी, ते कहे जयणा हेतें रे ॥ श्रावक को एहवो नहीं, जे पाप पुंजण चेते रे ॥ व० ॥ ११ ॥ केवल वेरागी साधुने, आवे नृप ति जेहवे रे ॥ चहुहटे गर्भणी साधवी, याचती दीठी तेहवे रे ॥ व० ॥१२॥ ते पण वंदी चालशुं, ए तुम कारण केहे रे ॥ जिनशासननी हीलणा, मत हुए थावो गेहे रे ॥ व० ॥ १३ ॥ सूतक कर्म करावियां, तसगुं रह्यां अम गेहे रे ॥ नाव अधिक जाणी करी, र प्रगट्यो ते तेहे रे ॥ व० ॥ १४ ॥ धनधो नरवर तुं, धन धन तुज अवतारो रे ॥ सुप्रसन्न गोलक पत्र दे, तेम अमूलक हारो रे ॥ व० ॥ १५ ॥ ते रसे ने सांधशे, त्रूटो हार उदारो रे ॥ इम कही सुर गें गयो, नरपति निज परिवारो रे ॥व०॥१६॥४४॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस हवे एकदा, कालकसूरियो अंग। पाप थकी बहु वेदना, उपनी जास अनंग ॥ १ । तसु नंदन सुख कारणे, गीत गान सुख मेज ॥ सु नि गंध तसु अंगने, बहु लेपे धरि हेज ॥ २ ॥ कीध ओषध बहु विधे, सुख न लहे क्षण मात्र ॥ सुलस दा मंत्रीशने, आवी जणावे वात ॥ ३ ॥ मंत्रिसर णी एहवो, जांखे नेह उपाय ॥ निष्क कंटक राज्य करो, जिम तेहने सुख थाय ॥ ४ ॥ अशुचि विलेप अंग करो, अशुचि खवरावो नीर ॥ नीर अशुचि प वो वली, जिम सुख लहे शरीर ॥ ५ ॥ ए उपाय पु कस्यो, सुख पायो तस जीव ॥ पाप वशे नरकें गयो पाडंतो सुख रीव ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ प्रत्यक्ष पाप तणां फल देखो, सयणियाने दु जी ॥ जे अशुचि दूर परिहरतां, तेहनुं पाम्यो सुख जी ॥ प्र० ॥ १ ॥ व्यापण वणिया परिजन सघलां सहु कहे मायने ताव जी ॥ पाप उदय हुवे जेहने ज्यारे, तव दूरमति थाय ता ॥प्र०॥२॥ मातृ वि

वे सहु सयणां, स्वारथ विण नहि कोय जी ॥ स्वारथ थएसरतो जाणीने, सुत पण वैरी होय जी ॥ प्र०॥ ॥ ३ ॥ इण संसारे मोह्यो प्राणी, करे पाप कर्म बंध जी ॥ फल किंपाक तणां सुख पामे, जाणे नहि जा तंध जी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जरा मरण रोगें करी पूरित, देह अथिर संसार जी ॥ तो पण मूरख जीव न जा णे, नेत्र थकां अंधार जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इण नव पा रथी विरुद धरावे, परजवे दुःख दातार जी ॥ कुंजी पाके पचतो प्राणी, सेहेतो दुःख अपार जी ॥ प्र०॥ ॥ ६ ॥ सयण तवे कोइ आडो न आवे, सहे एकलो निरधार जी ॥ इम जाणी जे पापथी विरता, धन ध न तसु अवतार जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ हवे परिजन सहु मिलिने आयो, कहे सुलसने एम जी ॥ कुटुंब काज महिषां वध कर तुं, अमे लेइयां पाप तेम जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ निज कुटुंब प्रति बोधन काजें, सुलससर हणे पाय जी ॥ वांटी ल्योए वेदना माहरी, पल नर मुज न खमाय जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ ते थया असमर्थ वेद न ...व , समजायो परिवार जी ॥ अजय वचनें थयो श्रावक, पाले नित्त व्रत बार जी ॥ प्र० ॥ १० ॥

बोले पीजवाण युं, आरोहक हो तुमे थया अजाण॥ ए मूरख गणिका प्रत्यें, केम नांखो हो तमे मीठी वाण ॥ आ० ॥ ४ ॥ द्विज तरुने दृष्टांतनी, तमे धारो हो निज हैडे वाण ॥ केम दृष्टांत छे तेहनुं, अम नां खो हो तुम चतुर सुजाण ॥ आ० ॥ ५ ॥ देवदत्त नामे जलो, द्विज पहुतो हो उत्तर दिस जाण ॥ त्यां तरु दीठ पलासनो, तसु फूले हो मोह्यो मन जाण ॥ आ० ॥ ६ ॥ तस बीज लेइ निज देशमां, आणी वावे हो नित सींचे नीर ॥ वृद्ध थणुं तरु पामियो, पण न हुवे हो तसु फूल शरीर ॥ आ० ॥ ७ ॥ रुठो वहुउं एकदा, दे वन्हि हो तसु तरुने मूल ॥ जलणें जड जलतां थकां, ते ततक्षण हो फूल्यो बहु फूल ॥ आ० ॥ ८ ॥ ए दृष्टांत इहां किणे, प्रीय कहेतां हो नवि माने जेह ॥ तेहनो संग निवारियें, जे मूरख हो करे तेहशुं नेह ॥ आ० ॥ ९ ॥ असुख हुवे पोते जिणे, ते कहिजें हो नेह प्रेत समान ॥ नेह अथिर वली नारीनो, ते मारे हो विलटी वाघ समान ॥आ० ॥ १० ॥ एक धरे मनमां वली, एक निरखे हो नयणांनी मेट ॥ एकणसुं कान वातीयां, एकणशुं हो मलती दे जेट ॥ आ० ॥ ११ ॥ एकणशुं गाली दी

ये; एकणशुं हो मलती मन हेज ॥ एकण पाय पखा लती, एकणशुं हो रमती सुख सेज ॥ आ० ॥ १२ ॥ एकणशुं शयनां करे, एकणशुं हो पूरे संकेत ॥ एक णशुं हिलिमलि रहे, एकणशुं हो मन कपट हेत ॥ ॥ आ० ॥ १३ ॥ जिणमेंति मले कामिनी, रहे नेहने हो होइ पानही जेम ॥ कूड करे जण जणयकी, तुं पियुडो हो मुज जीवन जेम ॥ आ० ॥ १४ ॥ धूता री जग धूतियो, पाडे मुग्धा हो लोकांने पास ॥ च तुर नरां चित्त चोर ले, नवि पूरे हो वली नेहनी आ श ॥ आ० ॥ १५ ॥ नारी मारे आपणो, नारी राचे हो नीचाने संग, नारी प्रत्यक्ष राक्षसी, तिणें तजीयें हो नारीनो संग ॥ आ० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ८१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली जेम ब्रह्मदत्तने कियो, अज गरुअड सुख नाग ॥ किम अज ब्रह्मदत्तने कियो, ते कहो मुज व ड नाग ॥ १ ॥ कथा कहुं सुण मित्र तुं, कंपिल नय र निवास ॥ बारमो चक्री तिहां वसे, ब्रह्मदत्त यश वास ॥ २ ॥ एक दिन नृपने अपहर्यो, एकज चप ल तुरंग ॥ पहुतो वनखंड पाधरो, पूठे दल चतुरंग ॥ ३ ॥ तिण आण्या निज नगरमें, पहुतो नृप निज

वास ॥ घर आव्यो जाणी करी,राणि कहे मृदुभाष ॥

॥ ढाल पांचमी वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ सरस सुंदर एक तरु विषे जी, जे तुम दीठो को इ आज ॥ वन खंममांही कौतुक नवो जी, तव क हे श्रीनरराज ॥ १ ॥ अचरिज कह्यो प्रिय मों नणी जी, जिम मन हर्षित थाय ॥ अचरिज जे वन देखि यो जी, ते कहे राणीने राय ॥ अ० ॥ २ ॥ हुं वन मांही पहोंतो जिमे जी, मनोहर सरोवर पाल ॥ त्यां बेठो जइ तरु तले जी, शीतल ठांहि निहाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ नारी तिहां एक नागणि जी, रूप गुण करीय अथाग ॥ आवीयो तसु पासे बीयो जी, गोणस नामे नाग ॥ अ० ॥ ४ ॥ ते रति करतां देखियां जी, असमंजस में आचार ॥ जाणीने ते में ताडियां जी, कसादिकां दीया प्रहार ॥ अ० ॥ ५ ॥ ते अदंसण बेहु थया जी, आविया निज निज ठाम ॥ एम क ह्नी नृप कहियो जी, शरीर चिंता तणें काम ॥ अ० ॥ ६ ॥ तिणे क्षण ततक्षण प्रगटियो जी, सुरवर को ई एक ॥ जंपे जय नरवर तमे जी, नित पालो सु विवेक ॥ अ० ॥ ७ ॥ पूछे चक्रवर्ति ते नणी जी, तुं

कुण माहरे वाण ॥ आवियो किम कह्यो ते सहु जी, इम कहे ते सुर वाण ॥ अ० ॥ ८ ॥ नरपति आज तुम वन गया जी, जे दीठां सरोवर पाल॥ नारी हुवे ते माहरी जी, आवी कह्यां वच बाल ॥ अ० ॥ ९ ॥ देख हो प्रिय अवगुण विना जी, मुज विडंबि ब्रह्म दत्त ॥ वैर वालो प्रिय माहरूं जी, नहिं तो तजिशुं प्राण कत्त ॥ अ० ॥ १० ॥ इम सुणी वच निज ना रीनां जी, माण्या तुज साटोप ॥ आवियो मंदिर ता हरे जी, मन धरी अति घणो कोप ॥ अ० ॥ ११ ॥ निसुण्यां में तुं तव तणीजी, राणी आगल विरतंत ॥ नारी चरित्र तणी शुद्ध नहि जी, आवीयो मुज को पनो अंत ॥ अ० ॥ १२ ॥ तुठो हवे हुं तुज तणी जी, लह्यो वर नरपति कोइ ॥ सर्व जीव भाषा लहुं जी, सुर कहे दीयो वर सोइ ॥ अ० ॥ १३ ॥ पण जो जीवित आशा धरे जी, तो मन कहे किण बुक ॥ सुर गयो निज स्थानकतणी जी, रायने कही सहु गुज ॥ अ० ॥ १४ ॥ हवे नरपति सुखशुं रहे जी, तो गवे भोग अपार ॥ लक्ष्मीविनय कहे नारीना जी, च रित न जाने पार ॥ अ० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ १००॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राजायें कथा, शुन लेपन निज अंग
॥ देखी कहे घर कोश्ला, निज प्रीतमने रंग ॥ १ ॥
थोडो सो प्रिय मोजणी, ए लेपन दें थाए ॥ नहितो
हुं निश्चे करी, ततक्षण उंमीश प्राण ॥ २ ॥ पति प
नणे राजा थकी, वीहतो न शकुं थाए ॥ इम सांभ
ली नृपति हस्यो, राणी पूछे वाए ॥ ३ ॥ किण का
रण नरपति कह्यो, हास्यानो मुज हेतु ॥ जो कहुं
सुंदर मरम ए, तो मरण लहुं दुःखहेतु ॥ ४ ॥ वल
ती राणी इम नणे, जो मरम न नांखीश एह ॥ तो
हुं मरीशुं इण क्षणे, धरी मनमें संदेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ सुण मेरी सजनी रजनी
न जावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे कहे राजा कहि सु वार्ता रे, चिंता करावी
राणी सातारे ॥ क्रमही चाल्यो चक्रवर्ती जेहडे रे,
कांइ न करे नर नारीने नेहडे रे ॥ ह० ॥ १ ॥ लीधा
साथे राणी राजा रे, प्राण तजे नृप स्त्रीने काजा रे ॥
ऐ? ऐ? डुर्जय देखो मोहनी रे, सुख डुःख पामे जीव
लुब्धो मोहनी रे ॥ ह० ॥ २ ॥ तव परिजन नर
जंपे जूजूउ रे, नगरमांहे कोलाहल हूउ रे ॥ इण द

ण देखे जय संभारा रे, अजा कहे अज मत्यें सुवि
चारा रे ॥ ह० ॥ ३ ॥ इण जवथी इण पूली मुज
जागो रे, आणी आपो तव बोले गागो रे ॥ ए जव
वरशे नृप तुरंगा रे, अवर लीयें तसु हुए तनुजंगा
रे ॥ ह० ॥ ४ ॥ कहे इम व्वाली हुं मरीश आश अ
णाणी रे, ते कहे मुजने स्त्री मलशे प्रेम अघांणी रे॥
निठुर पुरुष जग तुम जेहारे, पूली काजे जे दीये स्त्री
देहा रे ॥ ह० ॥ ५ ॥ निर्गुण कंतो हुए जिण नारी
रे, तेहना गुण सहु गले हितकारी रे ॥ नारी दोहि
ली जग सहु जाणे रे, नारी विना नर कोइ न गाने
रे ॥ ह० ॥ ६ ॥ नारी जिमावे जोजन ताजां रे, जि
ण घर नारी तसु सुख साजां रे ॥ नारी जणे वली
सुलक्षण पुतारे, नारि विना नर घरमें नृता रे ॥ ह०
॥ ७ ॥ वलतो बोले अज एम बोला रे, नारी तुं
कोइ पुरुष न तोला रें ॥ पुरुषां नारी वली वली
थाये रे, पुरुष विना स्त्री परघर जाये रे ॥ ह० ॥८॥
नारी दूषण अति बहु थाये रे, पुरुषतणां गुण सहु
को गाये रे ॥ पर घर देखो पति विण नारी रे, खं
मण पीसण करे विचारी रे ॥ ह० ॥ ए ॥ मुख देखे
नहि कोइ प्रजातें रे, जिण तिण नांते तजे शुज नाते

रे॥ जे नर स्त्री वश हुए दिन राते रे, तेहनुं घर स
हु जाये दिन जाते रे॥ ह० ॥ १० ॥ पानही जेहवं
पुरुषां नारी रें, पुरुष पराक्रम धर लीजें सारी रे॥
रुषां आगल तृण सम नारी रे, पुरुषतणां गुण श
खें नारी रे॥ ह० ॥ ११ ॥ तव कहे नारी सुण हि
कारी रे, कोप निवारो हुं दासी तुंहारी रे॥ प्रत्यक्ष
खो ए नगरी राया रे, महिला काजे तजे निज क
या रे॥ ह० ॥ १२ ॥ अज बोले हुं तुं पशुजाती रे
कर्मे एह नृप मूरख वाती रे ॥ चक्रवर्ती जातो पं
एम संभले रे, कनक माला लइघाती अज गले रे
ह० ॥१३॥ चित्त चिंतवे तसु हितोपदेशा रे, आव्य
घरे सुख रहे नरेशा रे ॥ मित्रक कहे करी हित गज
पाले रे,ब्रह्मदत्त जिम मन तूं संभाले रे ॥ह०॥१४
मित्रकथी सुणी एवी चेलणा रे, मरणथकी हवे वि
मी ततक्षणा रे॥ करी संतोष तजी मन रीशा रे,हा
पहिरे करी पूरवे जगीसा रे ॥ह०॥१५॥सर्व॥१२०

॥ दोहा ॥

॥ हवे सांकेतिकपुर भलो, तिहां नृप चंद्रवतंस॥
सुदंसणा प्रियदंसणा, राणी दोइ प्रशंस ॥ १ ॥ अ
क्रमे तेहने सुत थया, सागरचंद मुनिचंद॥ चंद तण

मोदक नृपनें दीयो, तिणें वंधवने दीध हो ॥ गु०
विष धारित सोवन गले, तेह सचेतन कीध हो
गु० ॥ सं० ॥ ७ ॥ नरवर दासी मुखयकी, जा
सवि परमन्न हो ॥गु०॥ माताने कहे एहवो, तें
कीधो अनन्न हो ॥ गु० ॥ सं० ॥ ८ ॥ राज देइ
आदरे, पूछया केइ साधु हो ॥ गु० ॥ आव्या
उजेणयी, तिहां त्रे मुनि निर्बाध हो ॥ गु० ॥ सं०
॥ ९ ॥ कुंवर पुरोहित नृप तणां, ते तिहां करे
श हो ॥ गु० ॥ इम सुणी शीख नणी गयो,
मुनि गुरु आदेश हो ॥ गु० ॥ सं० ॥ १० ॥
दक्ष विनय चब्यो, गय पुरोहित गेह हो ॥ गु०
धर्मलाभ मोटे स्वरे, आवी दे मुनि तेह हो ॥ गु
॥ सं० ॥ ११ ॥ कुंवर सुणी तिहां आविया, तेडी
निवर दूर हो ॥ गु० ॥ नृत्य करावे मुनि कनें, अ
वजावे तूर हो ॥ गु० ॥ सं० ॥ १२ ॥ तालनंगें ते
ने कोपियो, फाली ताडे देह हो ॥ गु० ॥ अंग सं
टाली वली, आवे वन मुनि तेह हो ॥ गु० ॥ सं
॥ १३ ॥ जाणी नृप निज वंधुनी, एह कला व
आप हो ॥ गु० ॥ वंदी जंपे तुम करो, सुत व
र सुपसाय हो ॥ गु० ॥ सं० ॥ १४ ॥ ये उंजेना

नि कहे, मूकुं जो लीये दीख हो ॥शु०॥ वात सुणी ते मुनि हूआ, विचरे निज गुरु शीख हो ॥ शु० ॥ सं० ॥ १५ ॥ नृप सुत व्रत पाले नलो, द्विज सुत करे मुनि हील हो ॥ शु० ॥ सुर हूआ प्रतिबोधणो, करी संकेत सलील हो ॥शु०॥सं०॥१६॥सर्व॥१२७॥

॥ दोहा ॥

॥ हुवे राजगृह शेठ धन, नंड ने तसु नार ॥ एक मेइणिसुं प्रीत तसु. विप्र जीव निणिवार ॥ १ ॥ चवि मेइणि सुत ते हूवो, मेगाणी सुता पसूय ॥ निजसुत शेठाणिने दीये, सुता लीये तसु हूय ॥ २ ॥ शेठ घरे वधतो कला, नणे नाम मेअज्ज ॥ सुहणे सुर प्रतिबोधियो. पण न हुवे व्रत सज्ज ॥३॥ कन्या परणी आठ तिणे, शीबिके सिबिकारूढ ॥ देव अधिष्ठित मेय तब, कहे घरणि प्रते मूढ ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ नणदल बिंदली दे ॥ ए देशी ॥ सुत हुवे तो इम करुं, कहे मेइणि ए तुज ॥ प्रीतम ॥ इम सुणी सुत घरे आणियो, देव कहे प्रतिबूझ ॥ प्री० ॥ सु०॥१॥ मेतारिज कहे नृप सुता, परणावी निज ताण ॥प्री०॥

यापे तो व्रत आदरुं, वार वर्ष अवसाण ॥
सु० ॥ २ ॥ करतो मणिमय मींगणी, अज आपे
तास ॥ प्री० ॥ तिणि रयणे नरि थाल ते,
नृप पास ॥ प्री० ॥ सु० ॥३॥ भेट देइ नरपति सुता,
मागे निज सुत हेत ॥प्री०॥ राय पुरुष अपमानियो,
पण आपे मणि मेत ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ४ ॥ एता ए
यण किहांथकी, तुज पूछे इम मंति ॥ प्री० ॥ वर्ग
करे मणि मींगणी, ते दे मुज मन खंति ॥ प्री० ॥
सु० ॥ ५ ॥ दीधो अज मंत्री घरे, अशुचि करे दुर्गंध
॥ प्री० ॥ तेवी तसु पाओ दीयो, जाण्यो सुर
॥ प्री० ॥ सु० ॥ ६ ॥ मंत्री कहे हे मगधपुरी,
वैभारनी पास ॥प्री०॥ कारवि आण समुद्र जल, नि
ज नंदन शुद्ध काज ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ७ ॥ जेम दे
वारुं नृप सुता, सुरमान्निध्य मय हुय ॥ प्री० ॥ शुद्ध
करी मेतार्यने, परणावे नृप धुय ॥ प्री० ॥ सु० ॥८॥
आडंबर मोटे कर्या, परणी राजकुमार ॥ प्री० ॥ आ
श फली सुरसान्निधे, दिन दिन सुख सुखकार ॥प्री०
॥ सु० ॥ ९ ॥ तव महिलासुं विलसतां, थार वरस
लगे जोग ॥प्री०॥ तात मंदिर दियो नारिने, पति रहे
वाने जोग ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १० ॥ सर्व ॥ १५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मेतारज कुंवरने, स्वप्नांतर कहे देव ॥ संयमने तुं सज्ज हुइ, जन्म सफल कर हेव ॥ १ ॥ सुर जिम सुख नित विलसतां, वोल्यां वरस चोवीश ॥ महिलाशुं करि मंत्रिणो, संयम ले सुजगीश ॥ २ ॥ ग्रामागर पुर विचरतां, आव्या केइ साध ॥ वनमाली आवि कह्यो, मेतारज सुख लाध ॥ ३ ॥ ऋद्धितणे परिवारथी, पहुतो साधुने पास ॥ नव महिलाशुं तिण लियो, संयम मन उल्लास ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ ये वे मुनिवर विहरण पांगुर्या रे ॥ ए देशी॥साधु शिरोमणि ए जगिसलहीये रे, श्री मेतारज गुणवंत रे ॥ परम दयारस सागर समा रे, दीपे उपशम जास महंत रे ॥ सा० ॥१॥ नव पुरवधर मुनि ते थयो रे, मुनि एकाकी विहार रे ॥ अन्यदिन राजगृही पुरे रे, अटतो धीरज गुण धार रे ॥सा०॥२॥ एकदा आव्यो घर सोनारने रे, तेह कर तिण वार रे ॥ नरपति जिनपूजन तणा रे, सोवन जव अति सार रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ ते कारज वसे गयो मंदिर रे, क्रौंच गले सवि जव तात रे ॥ आवियो निज जव देखे नहि रे, तव

पुछे मुनिवर स्वाम रे ॥सा०॥४॥ करतो क्रौंच तणी
दयारे, बोलाव्यो बोले नहि साध रे ॥ वाध्रे करी शि
र तिणे वींटीयो रे, तव तिण मुनि विण अपराध
॥ सा० ॥ ५ ॥ ततक्षण लोचन युगल खरी पड्यो रे,
सहे वेदना मुनि असमान रे ॥ शुक्ल ध्याने करी केव
ल लही रे, पहुतो मुनि निर्वाण रे ॥ सा० ॥ ६ ॥
ए अवसर तिहां दारु विदारतां रे, लागो क्रौंच गले
तसु खंभ रे ॥ पंखी तिण वेदनथी बीहितो रे, नांख्य
जव ते सहुय अचंभ रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ ते जव देखी
मनमे संकियो रे, सुवर्णकार सदोष रे ॥ जन मुनि
वात सुणी तिसे रे, उपज्यो नरवरने अति रोष रे ।
॥ सा० ॥ ८ ॥ निजसेवकने तेडावीने रे, हूकम क
इम मगधेश रे ॥ चोर तणी परें तासु विंटवीने रे
लावो वेहेला मुज आदेश रे ॥ सा० ॥ ९ ॥ हवे ते
सेवक स्वामी हूकमथी रे, आवे जेहवे तेहनें गेह, रे
॥ परिजन किणही कह्यो जायने रे, हवे चिंते वली
सोनी तेह रे ॥ सा० ॥ १० ॥ राय कहे एने मारवो
रे, ऋषि घातकने सकुटुंब रे ॥ इम सुणी तिणें व्रत
आदर्यो रे, भय वसे सघलो छोडी विलंब रे ॥सा०॥
११॥ नृप भणे हवे तूं दृढ हूजे रें,नहितो निश्चे लहीश

विनाश रे ॥ इणि परें जेह क्षमा धरे रे, ते पामे शिव पुर वास रे ॥ सा० ॥ १२ ॥ लीजे नाम सदाय प्रह समे रे, जावे प्रणमुं पय अरविंद रे ॥ नयजल तरियें जेहनें ध्यानशुं रे, वंदे वलि वलि प्रह कवि चंद रे ॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर हवे एकदा, त्रूटो हार उदार ॥ सांधी शके नहि कोइ नर, पडह दिरावे त्यार ॥ १ ॥ नृपति पडह दिरावियो, सारे नगर मोझार ॥ लाख लहे सांधे जिको, इम सुणि इक मणिकार ॥२॥ अर लख दीधो पेहेलयो, अथ जय पाने जाग ॥ सांधे हार जलो जुगत, धर्यो मनने धनराग ॥ ३ ॥ पुरो सांध्यो हार तिण, तवने परजव जाय ॥ कोटवाले ते हार ने, दीधो नृपने आय ॥४॥ मणिकारक मरिने थयो, वानर तिहां वनमांहि ॥ देख्यो निज घर मनने, पूरव नव मूरछांहि ॥ ५ ॥ वली वेग मृत मज्ञ करे, अक्षर ज खे लुवाइ ॥ पूरव नव हुं तम तणो, तात हतो सुखदाइ ॥ ६ ॥ तुम सुख मरी वानर थयो, वली पुत्र कपि तेह ॥ गये आप्यो शुन मना, नवि दीधो हवे तेह ॥७॥

॥ ढाल दशमी ॥ जोगीडानी देशी ॥

॥ हवे कपि जोवे घणा रे, ठल इण अवसर एम.

॥ चेलणा जलक्रीडा नणी रे, उमहि मनने ॥ १ ॥ सुगुण नर जोवो अचरिज एह, कपि जेह ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ वन अशोक गइ राणी सखियां के समुदाय ॥ जिहां ते जल खेले दीवां आवे दाय ॥ सु० ॥ २ ॥ निज रे, दीये दासीने हाथ ॥ तेह सवे पडले धरे रे, जाणे आपणो नाथ ॥ सु० ॥ ३ ॥ दासी अशोक तरु तले रही रे, हरख्यो मन सारंग ॥ साखा अंत ते संचरी रे, हार हर्यो हरिरंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ निज आणी दीयो रे, हार गयो नृप जाण ॥ अनयज णी कहे एहवो रे, लहे दिन सात प्रमाण ॥ सु० ॥ ५ ॥ *नहितर तम होशे सजा रे, नगर भमे मंत्रीश* ॥ नर नारी जोतो रहे रे, चिंत धरे निश दीश ॥ सु० ॥ ६ ॥ एहवे षट् दिन वोलिया रे, हार न पायो केथ ॥ *तब सतम वासर निसा रे, लीये पोसो गुरु जेथ* ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिहां सुस्थित सूरीसरू रे, साधु महा व्रतधार ॥ सुव्रत धन जोनक मुनि रे, परवरिया परि वार ॥ सु० ॥ ८ ॥ जिनवर तुलणा ने तुले रे, करे काउसग्ग निशि धीर ॥ रंगरमें रे, उपस गंभीर परिजन नृप श्री

हलो रे, हार दीयो हरि नाम ॥ चलतो ते मुनि कंठ ठवे रे, निशि शशिज्योत अभिराम ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रथम पहोर निशि वोलीयो रे, शिवमुनि आवे देव॥ विनयवंत गुण आगरू रे, करवा गुरुनी सेव ॥ सु०॥ ॥ ११ ॥ गुरु कंठे हार देखीने रे, मुनि पूंछ्यो तिण वार ॥ निशही वाणे नर्य नणे रे, तव कहे अनवकुमार ॥ सु० ॥ १२ ॥ कुण नय तुमने केहनो रे, मुनि कहे पूरव रूप ॥ सावधान हुइ तुमे सुणो रे, जिम कहुं तिम अनुरूप ॥ सु० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा॥१८०

॥ दोहा ॥

॥ पूरव पुण्य उदय करी, नर गृह धन थिर थाय ॥ पुण्य फिरंतां ततक्षणे, यतन करंतां जाय ॥ १ ॥ धन विण को माने नहि, परिजन दीधो छेह ॥ उदर पूरणा कारणे, कामकरां परगेह ॥ २ ॥

॥ ढाल अगियारमी ॥

॥ रुडीरे रेवारण रामजा पदमणी रे ॥ ए देशी ॥ वसता उजेणी नगरी वाणिया रे, निर्धन शिव शिवद त्त ॥ बे भाई धन खाटवा रे, सोरठदेशें पत्त ॥ १ ॥ मं ञीसर धनथी अनर्थ वधे रे, निश्चे सेंती एह ॥ जयु लोने परिजन सहु रे, हुए अरि क्षणमें जेह ॥ मं०॥

ए आंकणी ॥२॥ त्यां धन बहु मेली करी रे, नउली क डिहि निवेश ॥ वारे वारें नित प्रत्यें बांधतां रे, आवत निजपुर देश ॥मं०॥३॥ ते धन जसु करे तसु हुवे रे परमारण परिणाम ॥ तिण हणे ते धन मुज कने रे जाणी अनरथ ठाम ॥ मं० ॥४॥ वात कही में निज बंधुने रे, तिणें पण नांखी नेम ॥ नगर समीपें इह जले रे, नांख्यो ते धन एम ॥ मं० ॥ ५ ॥ घरे आव्या परिजन मल्यां रे. नउली गले ने मीन ॥ नद्द जाणी धीवर तिसे रे, साहे ते अति दीन ॥ मं० ॥६॥ तिणे वेंच्यो अम्ह बहिनने रे,हाथें तिणें अम नत्ति ॥ कारण मछ विदारतां रे, देखी नउली करी गुत्त ॥ मं० ॥७॥ ते देखी माता कहे रे, ठांनुं ने इस्युं कीध ॥ बेहिन जणे कांइ नहीं रे, ते आवी धन गिद्ध ॥ मं० ॥ ८ ॥ ते तिणे आयुध आहणी रे, नय वस नउली तेह ॥ पडी देखी अम उंळखी रे, अनरथ कारण एह ॥ मं० ॥ ए ॥ काल कीयो माता तिसें रे, दीधो वन संस्कार ॥ संस्कारी आव्या निज मंदिरे रे; जाण्यो अथिर संसार ॥ मं० ॥ १० ॥ चिंतातुर बेठा थकां रे, आव्यो तिसे वनपाल ॥ नाख्यो अमने एहवो रे, वन आव्या ध्रमपाल ॥ मं० ॥ ११ ॥ जाइ वंद्या त्यां किणे रे, सु

ही देवन- जलधार ॥ नय सतुइमांही जीव सुदृतां रे, जिनधर्म करत उद्धार ॥ मं० ॥ १२ ॥ सुणी देश त आवी बहिनने रे, देइ सहु घर नार ॥ संवेगे सहु गुरु कन्हे रे, लीधो संयम नार ॥मं०॥१३॥ ए पूरव नव संजरी रे, में बोली नय वाच ॥ हरख्यो अजय नणे तुमे रे, नांख्यो तेहिज साच ॥ मं० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कथा कही शिव साधु इम, नावे करी गुरु सेव ॥ मुनि संथारे आवीयो, वली गुणजां हवे हेव ॥ १ ॥ बीजे पहोर निशा तणे, आवे सुव्रत साध ॥ चरण करण नित साचवे, आगम गुणे अगाध ॥ २ ॥ पो सहसाला पेसतां, देखे गुरु कंठ दार ॥ महा नयं मुख इम नणे, पूत्र अजयकुमार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ निंदर्नी तथा वनर्नी देशी॥

॥ पनणे मुनि निज वीरनंत. अनय सुणे करी मन एकंत ॥ देशों अंग देश कहीजे. ग्राम कोलाग तिहां अम रहीजे ॥ १ ॥ अन्य दिन धाड पडी तिण गामे. नाठा लोक दशे दिश ठामे ॥ घर खूणें हुं पण रह्यो छानो, चोर तव घर आव जिजानो ॥ २ ॥ प्रिय गयां जाणी नारी बोले, थां मुज साथे हुं तम खोले ॥ जे

इ पल्लिपतिने तिणें दीधी, सुंदर देखी अपणी कीधी ॥३॥ नय नांख्यो जाणी वश्यो गाम, लोक मळ्या परि यण सहु ताम ॥ स्वजन वचन करी हुं तव प्रेर्यो, रम णी आननमें मन घेर्यो ॥ ४ ॥ हुं चली पहुतो पा जाम, तिहां वसियो मोकरी घर ताम ॥ रहेता दिन गया केता जेहवें, घेरीने कही वात में तेहवें ॥ ५ ॥ इण पाल्लेने घरणी मुज्ञ, मुज आगम तुं कहेजे गुज्ञ ॥ ते फाश्ने तेने जणावे. वलतो घेरीशुं एम कहावे ॥ ६ ॥ बाहिर जाजे आज पल्लिपति, प्रीतम आवो गेहें ण जनी ॥ तिण अवसर संध्या समे संकतो, ज घणे तसु गेहे पहुतो ॥ ७ ॥ नारी नयणे नेहे रख्यो. हुं चित्त अंतर अतिहि हरख्यो ॥ तव नि न हुतो गेहे बेसाड्यो सेजे मुज नेहें ॥ ८ त्त चंचल चरण मुज धोये तव नारी पल्लीपति ये ॥ हुं रहियो शय्या तले ताम. सेनापति मे जाम ॥ ९ ॥ धोती तसु पय वाने प्रेमे. होय तो तुमे करो केमे ॥ कहे पल्लीपति लगतें, हुं आपुं तेहने तूं शुन लगते ॥ देखे निलवटी स्त्री नीज्यो, हीयडो ॥ में

मारे तेह ॥ ११ ॥ तिणें चखुसेन करी देखाड्यो
न देवे मुफ पल्लीशें निहाल्यो ॥ पल्लीशे मुज बांध्यो
म, आले बांधे यंत्रशुं ताम ॥ १२ ॥ तर्जन करी
णियो मुज रातें, ते सूतां सेजें निज वातें ॥ आवी
या आने बंधन, मोकलां कीधां तिणे मुज संधन
१३ ॥ पल्लिश पासे आव्यो जेहवे, तेहनो खग
यो में तेहवे ॥ निज नारी जगवी कह्यो आम, वो
लीश तो इहां मारीश ताम ॥ १४ ॥ चाल्यो हुं ते क
नि आगें, गायल टुकडा नाखे मागे ॥ गहगहतो
हियडे अनुराग, मुज सम अवर नहि वडनाग ॥
। १५ ॥ इम जातां निशि वोली सारी, पूंठ पल्लीप
तेकी असवारी ॥ वाहार देखीने मन शंक्यो, वंश
जालमांहे तव ढांप्यो ॥ १६ ॥ निण पथे चलि आ
यो सेनापति, असि हणी चोरंग कीधो मुज जति ॥
नारी लइ ते पाछो वलियो, वन वानर एक मुजने म
लियो ॥ १७ ॥ मुफ दीठे मूर्छा तिणे पामी, लही चे
तन वन औपधी कामी ॥ आणी घसी लावे मुज घा
यें, नव पल्लव सहु अंग मुज थाये ॥ १८ ॥ सिद्धक
में नामे हुं सार, वैद हुतो तुज गोवल सुविचार ॥ म
री वानर थयो हुं इण ठाम, तुज दीठां जाति समरण

इ पल्लिपतिने तिणे दीधी, सुंदर देखी अपणी कीधी
॥३॥ नृप नांग्यो जाणी वस्यो गाम, लोक मळ्या पलि
पण सहु ताम ॥ स्वजन वचन करी हुं तव पेठो, रम
णी आननमें मन पेठो ॥ ४ ॥ हुं चल्ली पहुतो पासें
जाम, तिहां वसियो मोकरी घर ताम ॥ रहेता दिन
गया केता जेहवें, वेरीने कही वात में तेहवें ॥ ५ ॥
इण पालेने वरणी मुझ, मुज आगम तुं कहेजे गुझ ॥
ते फाइने तेने जणावे, वलतो वेरीशुं एम कहावे ॥६॥
बाहिर जाशो आज पल्लिपति, प्रीतम आवो गेहें ति
ण जनी ॥ तिण अवसर संध्या समे संकतो, जतन
पणे तसु गेहे पहुतो ॥ ७ ॥ नारी नयणे नेहे नि
रख्यो, हुं चित्त अंतर अतिहि हरख्यो ॥ तव पल्लीप
ति न हुतां गेहे, बेसाड्यो सेजे मुज नेहे ॥ ८ ॥ नि
न चंचल चरण मुज धोये, तव नारी पल्लीपति पुलो
ये ॥ हुं वसियो गहेरा नके नाम, संनापति तेहने वश्यो
जाम ॥ ९ ॥ धोती नगु पग धान्ने वेथे, मुज पति
होय तो तुमे करो केम ॥ कहे पल्लीपति करी बहु
मानें, हुं आपुं तेहने तुं हुन जुगते ॥ १० ॥ नगु
देवे निजनटां ग्री मोड्या, नाम्यो नाग नगु हरख्यो
होलटां ॥ अंते हियां मे लाग्यो एम, इसा निराहु

ज्ञा पावुं जी ॥ व० ॥ ८ ॥ खग मूकी संधे ग्री
जी, शूलिप्रुत नर मंसो जी ॥ ते कापे पवती लि
जी, देखी लोही थंशो जी ॥ व० ॥ ९ ॥ मैं तव पं
जोड्ने जी, दीगे तसु नपकारी जी ॥ ते नारी कुं
वीहीनो जी, श्रागो श्रसि वीमारी जी ॥ व० ॥ १०
पुर पोले हुं श्रावीयो जी, त्यो बाहिर चंपेले जी
श्रावी महिला खज मों जी, ते ज्ञगड़ निण वेले जी
॥ व० ॥ ११ ॥ त्यां पड़िया हुं निजरतो जी, पुरं
वी इम जंपे जी ॥ श्रमे मानिनगुं श्रने जी, कांपु
सी इह्रां मंपे जी ॥ व० ॥ १२ ॥ जे बाहिर ते तेह
जी, ते मांह तेह श्रभाग जी ॥ नुज गढ जि
बाहिर त्यो जी, निण नवि गम्या मारो जी
॥ व० ॥ १३ ॥ तेह म रर इम कही कीधो जी
व मगति नग गाप जी ॥ श्राघा हुं मगग वरे जी
महिला मतवा हाम जी ॥ व० ॥ १४ ॥ पग नहीं
जी मद पीवना जी मामु मर्णा रंन जी ॥ मैं जी
पे पर बारणे जी, दीधी दीपक हेन जी ॥ व० ॥ १५
सालु पुत्री मनं कह जी, एह मांस ग्रति मीठो जी
॥ तुज जमाइनां कहे जी, सुनां वचन ग्रति धीठो
जी ॥ व० ॥ १६ ॥ ते सांभली परे श्रासियों जी, श्र

त लीधो वैरागे जी ॥ ते संजरि अति जय जाणो जी, में निशिदिने लागे जी ॥व०॥१३॥स०॥२५३॥

॥ दोहा ॥

॥ कथा कही धन मुनि इसी, मंत्री हरख्यो चित्त ॥ काम सफर पासें कीयो, धन मुनि ते सुविनीत ॥ १ ॥ विषयथकी मन वालियो, साधे मुक्तिनो पंथ ॥ जाव धरीने वंदियें, एह्वा साधु निग्रंथ ॥ २ ॥ चोथे पहोर निसातणे, जोनक नाम मुनीश ॥ मुखे जयातिजयं जणे, पूछे तव मंत्रीस ॥ ३ ॥ जयातिजयं कारण किसे, जाखो स्वामी साच ॥ साधु कहे मंत्री सुणो, जयातिजयंनी वाच ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोदमी ॥

॥ मोरा प्रीतम कहे कांइ अचरिज वात ॥ ए देशी ॥ उज्जेणी नगरी वसे,धनदत्त क्षत्री नाम ॥ नारी शुनश्री तेहने, तसु सुत छुं गुणगाम ॥ १ ॥ सुण मंत्रीसर महिला चरित्रनी वात, मूढ न जाणे घात ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ मुज सुंदरी छे श्रीमति, रूपवंत गुण जाण ॥ मुज पग जल धोइ पीवती, शुजमति व हती आण ॥ सु० ॥ २ ॥ नारी नटुयानी परें, धरती नव नव वेश ॥ नव नव पुरुषां प्रीतडी, कुल धर्म

राखे न लेश ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्त्री पोथी दोइ ए,
हां नही छे साच ॥ जो ए साच हुवे किहां, तो
डी मुज वाच ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक दिन नाखे
नणी, प्रीतम पूरो आश ॥ मृग पूंठ मंस नखवा
णी,मुज मन अधिक उल्लास ॥ सु० ॥ ५ ॥ में क
ते किहां मिले, ते कहे राजगृही गाम ॥ श्रेणिक न
पतिने अछे, मोरी मृग निज धाम ॥ सु० ॥ ६ ॥
सुणी वचन निज नारीनां,चालियो धरी अनिराग
पहोतो हुं बाहिर आराममें, त्यां खेले वेश्या बाग
सु० ॥ ७ ॥ इण समे खेचर को तिहां, आव्यो न
ने माग ॥ वेश्या देखे क्रीडती, ले चल्यो अपणे ला
॥ सु० ॥७॥ तसु परियण कलरव कीयो, सर सांध्य
में साही ॥ लाग्यो कर खेचरतणें, वेश्या पडी स
मांही ॥ सु० ॥ ए ॥ जल उतरी आवी वही, माग
का मुज पास ॥ कहे हालो केलि घरें, स्वामी हुं तु
दास ॥ सु० ॥ १० ॥ केलिघर लइ जाइने, गणिक
करी मुज सेव ॥ पूछे किहां वशो स्वामिजी, आव्य
इहां केम वेव ॥ सु० ॥ ११ ॥ मेम वात कही सदु
में वेश्याने ताम ॥ ते कहे सरल थवो धणी, पण
नारी कुशीला श्याम ॥ सु० ॥ १२ ॥ जो, ने शील

ती हुवे, तो वजन हुए नाद ॥ पर हुंती काढे नहि, कूडा करीय उत्साह ॥ सु० ॥ १३ ॥ नृप मृग मांस किम कर चढे, कठ हुवे सुविशेष ॥ मारण ठल तुम मांझियो, थाप विमासी देख ॥ सु० ॥ १४ ॥ तव व लतो में नांखियो, सुण वेश्या सुविशेष ॥ मुज रम णी चूके नहि, कुलवट राखे रेख ॥ सु० ॥ १५ ॥ असूर हुवे चालो पुरी, वेश्या कहे धरी राग ॥ नग रमांहि पेसते तिसे, कीधो मद मन राग ॥ सु० ॥ १६ ॥ शुन यशे गणिका घरे, आवियो मन उल्लास ॥ वेश्या कहे तव मों जणी, आवो रायने पास ॥ ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ २७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्यां नव ढंढे नाचिशुं, श्रेणिक राज हजूर ॥ तुमे पण देखो आवीने, नाटक प्रकट पहूर ॥ १ ॥ हुं नाचीश इम करी रह्यो, ते पहोंती नृप पास ॥ मृग पुछ लेवा कारणे, जाएयुं पूगी आश ॥ २ ॥ लीणा जव नाटक रसे, रखवाला सहु ताम ॥ मृग पुंछ का ढ्या तिणे तुरत, जय गोपविया ताम ॥ ३ ॥ रखवा ले ग्रही तुरत ते, कहि नृपने विरतंत ॥ रंग जंग स ह्यो नहि, केद कीयो एकंत ॥ ४ ॥ दीठी गणिका ना

चली, हाथ नाथ हरखेव ॥ रीज्यो श्रेणिक तसु दीयें, वर तीनुं नर देव ॥ ५ ॥ पहेलें वर मागे इशुं, सुण पुछ पारथी तेह ॥ दीजे जीवित एहने, मुज जीवत दीयो एह ॥ ६ ॥ बीजे वर मुज एह प्रीय, राजा माने तेह ॥ त्रीजे वर छोडावीने, गणिका आण्यो गेह ॥७॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥ घणो काल त्यां रही करी, गणिका पूछी तेमो रे ॥ जो मुज शीख दीयो हवे, तो जाउं गृह केमो रे ॥ १ ॥ सुणी मंत्रिसर एहवो, वीतक वातनो तंतो रे ॥ नारि चरित्र तणो सही, किणही न पायो अंतो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ मुज साथे गणिका थइ, निज पुरी आव्यां तामो रे ॥ वनमें वेश्या राखीने, निशि आव्यो गृह धामो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ खड्ग सखाइ हाथ लेइ, पुरुषशुं दीठी नार रे ॥ दुराचारी में देखीने, रीसे हण्यो ते जार रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ खाड खणी ते माटी यो, कपट कीधो पीछो रे ॥ ते वृत्तांत जइ कह्यो, गणिकाने जन दीठो रे ॥सु०॥५॥ पाछा राजगृहि आविया, तिहां रही वली दिन केइ रे ॥ हुं वळेणी आवियो, हरख्यां माय प्रिय बेइ रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ में

न नेहो रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ महिला चरित निहालियो, लीधो संयम सारो रे ॥ तिणे जयातिजयं जप्यो, पूर्वं जय संसारो रे ॥सु०॥१६॥ इण क्षणे सूरज उगियो, नमी मुनि अजयकुमारो रे॥ बाहिर आयो तव पेखि यो, गुरु कंठे ते हारो रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ तिण जया दि वचन जप्यो, मुनि नवि आप्यो लोभो रे ॥ सफल जनम जग एहनो, वंश वधावे शोभो रे ॥ सु० ॥ १८॥ तेह लेइ घर आवियो, नृपने दे मंत्रीसो रे ॥ चेलणा मन हर्षित थयो, सवि जन दे आशीसो रे ॥ सु० ॥ ॥ १९॥ वाचक अजय माणिक्य वरू, साधु गुणे सु विचारो रे ॥ तास शिष्य एम वर्णवे, लक्ष्मीविनय सु खकारो रे ॥ सु० ॥ २० ॥ त्रीजो खंड पूरो थयो, एटले इण अधिकारो रे ॥ गरुआना गुण गावतां, हुए आतम उद्धारो रे ॥ सु० ॥२१॥ सर्वगाथा॥२०२॥

॥ इतिश्री अजयकुमार प्रबंधे, चेलणा नंदा वैर्य हार गोलक दायक, सुर संबंध तत् संगागत अक्षदरा वर संप्राप्ति, सुलस प्रतिबोध मेतार्य चरित्र, हार स धान सुस्थित सूरि शिष्य चतुष्टय कृपा, हार प्राप्ति व र्णनो नामा तृतीयोधिकारः ॥ ३ ॥

हूत ॥ रा० ॥१॥ दे कागल दूत कहे कर जोड, सङ्क
थाउ सहु श्राळस छोड ॥ रा० ॥ सामंतिक चौदह
नूपाल, ते पण श्राव्या सुणि ततकाल ॥ रा०॥ २ ॥
अढार टंकी हाथ झालो कवाण, चलचलें तीरें नरों
नायांण ॥ रा० ॥ सीरोही सझ करो करवाल, अरि
दलने वहे जाणे काल ॥ रा० ॥ ३ ॥ गुरज कटारी
ने रणतोंम, खंजर तूरिय धरा बहु जोंम ॥ रा० ॥
गेंमानी ल्यो उत्तम ढाल, जिम हुए अरि खगनी पा
ल ॥ रा० ॥ ४ ॥ अणियाळां नाळां ल्यो पूर, दार
गोली ल्यो नरपूर ॥ रा०॥ जीव रुपीने करो जिनस
ल, पाखर सझ करो तत्काल ॥रा०॥५॥ तोप हवाई
ने वली वाण, रामचंगी ने कूह कवाण ॥ रा०॥ व्या
पारी लीधा वली साथ, कविजन बोले जय गुण गा
थ ॥ रा० ॥ ६ ॥ नरपति नारु लीधा साथ, सराफ
लीधा परखणने श्राथ ॥ रा० ॥ तंबोली लीधा राजा
न, ते वेंचे नित बीडां पान ॥ रा० ॥ ७ ॥ .[illegible]
साथे गुरुनी नाम,लीधा जोषी गणितने काम ॥रा०॥
सुकन राज शास्त्रना जाण, ते पण लीधा ये [illegible]
मान ॥ रा० ॥ ८ ॥ वागिया चौसरणां सिंधिपा[illegible]
साथ थया सामंत नूपाल ॥ रा० ॥

नायक जेह, ते पण सज्ज थया धरी नेह ॥रा०॥ए॥ फोजदार नायकनी जोड, ते पण प्रणम्या वे कर जोड ॥रा०॥ चतुरंग सेना सबल मंमाण, खल दल देखी न मंमे प्राण ॥ रा० ॥ १० ॥ चतुरंग सैन्यतणां गुण जाण, कहे कवियण हवे तेह वखाण ॥ रा० ॥ एहवी सेन सजी निज राय, हवे सुणजो एहनो जिम थाय ॥ रा० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निज निज सेना लेइने, आव्या नगर उजेण ॥ प्रणम्या चंमप्रद्योतना, चरण कमल हरखेण ॥ १ ॥ शुन मुहूर्त शुन वासरे, देइ नगारे गोर ॥ चढियो चंमप्रद्योत नृप, दल वादल चिहुं उर ॥ २ ॥

॥ ढाल वीजी ॥ राग सिंधुडो ॥

॥ नणे मंदोदरी दैत्य दशस्कंध सुण ॥ ए देशी ॥

॥ चढयो नृप चंमप्रद्योत थरि जीपवा, तुरत नेशान वाजां वजायां ॥ चडत घाइ सुणे सूर सन्नाह तजी, कटकमें चटकशुं आवी धाया ॥ च० ॥ १ ॥ सीस सिंदूरिया हाथिया सज किया, प्रबल मद पूरिया नीर करणा ॥ नमर गण गुंजता धत्र दल पाडता, चालता हालता मेघवरणा ॥ च० ॥ २ ॥ सुंद

चलाचलता दीसता परवता, हाथिया करत हाला कलोला ॥ घंट वाजे गले एकठा सवि मले, वीर चेक करता कलोला ॥ च० ॥ ३ ॥ दंत वग अधिक शोभावता, वीजली शीश अंकुश विराजे ॥ ढलकती ढाल ने शीश चामर ढले, गडडता गाजता मेघ गाजे ॥ च० ॥ ४ ॥ हाथिया पाखला फौज में भला, गेप गता रहे दीह गता ॥ चंग प्रयोत हजा तणां कटकमें, लाग दोड अंग गज राज माता ॥ च० ॥ ५ ॥ देश बंगाल काश्मीर कोंकण तणां, कंबोज काबुल नीला तुरंगा ॥ अवल नवनपया पान पाणीपंथा, देश खुरसान गुथा खरंगा ॥च०॥६॥ जल नला नेजी कछदेशना भपन्या, वदन सुल पातलां नाग जाडा ॥ पीलडा नीलडा गवन कंबोजडा, किरजिया गनडा ने किहाडा ॥ च० ॥ ७ ॥ धूसरा दूसरा किरडिया कालूया, दंराजा वमला सबल गाढे ॥ श्रंग जग पातला गंग गाता रहे, देशनां नृपति रातान मांडे ॥ च० ॥ ८ ॥ गगन देश पालखा फौज सारी भला, चालता नामी किथाम [illegible] ॥ एकुला अश्व चडीया राजा तणी, कटकमें मलन्य [illegible] नु मंस्का ॥ च० ॥ ९ ॥ [illegible] सातसितो मांन [illegible]

गियां, रंगीयां पंच नवरंग रागें ॥ वंध जसु खंगियां कंध जसु वंकियां, सुर सोहे घणुं अधिक वागें ॥ च० ॥ १० ॥ ते गज्यां तावने तेजरा तोडवे, हाकवे पर दलां हीकहाला ॥ एकयी एकडा थावि दलमें खडा, शूरवीर वांकडा सुभट पाला ॥ च० ॥ ११ ॥ वोल चाले खरा तेज अति आकरा, करे काच शीशी जिसी टूक काया ॥ सामने काम संग्राम शूरा करे, मरंतां न धारे जिके मोह माया ॥ च० ॥ १२ ॥ सवल कं धाल मुंहाल जिन सालिया, लोहमय टोप आटोप धारा ॥ पंच हथियार ने हाथ वाधें जिडे, जलजला जोम सम पालिहारा ॥ च० ॥ १३ ॥ तीर तरकस धरा अचंग जट आकरा, सहस जोधार संग्राम शूरा॥ चंप्रद्योत राजा तणे कटकमें, सात क्रोड साथ पा यक पूरा ॥ च० ॥ १४ ॥ चक्र चारें करी जेह चाले ... ऊपरा सरस नेजा सुरंगा ॥ जरह जोसण त ... नार पूरा जला, जोतिया सरस तेजी तुरंगा ॥ च० १५ ॥ घमघमे घुघरा अश्व गजे फावता, एकयी ... पर्थे अम चाले ॥ लाख वे रथ लिया चंप्र निज क ... ., सटक सों कटक हिव चढीय चाले ॥ च० ... ॥ घरहरे घोर निशान वाजां तुरे, फोज

उलाजता दीसता परवता, हाथिया करत हाला हु
लोला ॥ घंट वाजे गले एकग सवि मले, वीर घंट
नेक करता कलोला ॥ च० ॥ ३ ॥ दंत वग उंपता
अधिक शोभावता, वीजली शीश अंकुश विराजे ॥
दलकती ढाल ने शीश चामर ढले, गडडता गाजता
मेघ गाजे ॥ च० ॥ ४ ॥ हाथिया पाखस्या फोज आ
गें धस्या, रोप राता रहे दीह राता ॥ चंम प्रद्योत रा
जा तणें कटकमें, लाख दोइ शंख गज राज माता
॥ च० ॥ ५ ॥ देश बंगाल काश्मीर कोंकण तणां,
कंबोज काबुल तीखा तुरंगा ॥ अवल उत्तरपथा पव
न पाणीपया, देश खुरसान सूधा खरंगा ॥च०॥६॥
नल नला तेजी कच्छदेशना उपन्या, वदन मुख पात
लां नाग जाडा ॥ पीलडा नीलडा सवज कंबोजडा,
किवलिया रातडा ने किहाडा ॥ च० ॥ ७ ॥ धूसरा
दूसरा किरडिया कालूया, हंसला वंसला सवज सोहे
॥ अंग जस पातला रोस राता रहे, देखतां नृपति
राजान मोहे ॥ च० ॥ ८ ॥ पवन वेग पाखस्या फो
ज आगें धस्या, चालता जाणी चित्राम लखिया ॥
एहवा अश्व उक्षेण राजा तणें, कटकमें सहस्र पंचा
श संख्या ॥ च० ॥ ९ ॥ शीश सारंगियां मोन सुचं

लीयां, रंगीयां पंच नवरंग रागें ॥ बंध जसु खंगियां कंध जसु वंकियां, सुर सोहे घणुं अधिक वागें ॥ च० ॥ १० ॥ ते गज्यां तावने तेजरा तोडवे, हाकवे पर दलां हीकहाला ॥ एकथी एकडा आवि दलमें खडा, शूरवीर वांकडा सुभट पाला ॥ च० ॥ ११ ॥ वोल बोले खरा तेज अति आकरा, करे काच शीशी जिसी देह काया ॥ सामने काम संग्राम शूरा करे, मरंतां न पारे जिके मोह माया ॥ च० ॥ १२ ॥ सवल कं वाल मुंगल जिन सालिया, लोहमय टोप आटोप धारा ॥ पंच हथियार ने हाथ वाथें भिडे, जलजला नीम सम पालिहारा ॥ च० ॥ १३ ॥ तीर तरकस धरा अनंग भट आकरा, सहस जोधार संग्राम शूरा॥ चंमप्रयोत राजा तणे कटकमें, सात क्रोड साथ पा यक पूरा ॥ च० ॥ १४ ॥ चक्र चारें करी जेह चाले नले, कपरा सरस नेजा सुरंगा ॥ जम्ह जोसण त णे भार पूरा भला, जोतिया सरस तेजी तुरंगा ॥ च० ॥ १५ ॥ घमघमे घुघरा अश्व गले फावता, एकथी एक पर्थे अम चाले ॥ लाख वे रथ लिया चंम निज क टकमें, सटक मों कटक हिव चढीय चाले ॥ च० ॥ १६ ॥ घम्हरे घोर निशान वाजां घुरे, फोज रची

तुज सामंतक फेरिया रे, सघला माहरे तात रे ॥ च० ॥ तिण कारण लेख मोकल्यो रे लाल, कहेवा गुह्यनी वात रे ॥ च० ॥ रू० ॥ ४ ॥ धन दइने नृप वश की यो रे, माहरो सघलो साथ रे ॥ च० ॥ कहे संग्राम ने अवसरे रे लाल, बांधी देशां हाथ रे ॥ च० ॥ रू० ॥५॥ मालीपति तुं माहरे रे, सगपण महोटो नृप रे ॥ च० ॥ तिण कारण में दाखियो रे लाल, निज घर नो ए स्वरूप रे ॥ च० ॥ रू० ॥ ६ ॥ में कह्यो तुज हित थके रे, जो तुज संशय होय रे ॥ च० ॥ तो तुं तेह खणावीने रे लाल, प्रत्यक्ष नयणे जोय रे ॥ च० ॥ रू० ॥ ७ ॥ लेख इशो मंत्री लखी रे, मूक्यो पुरुष ने साथ रे ॥ च० ॥ तिणें पण जाइ तेहनें रे लाल, दीधो हाथो हाथ रे ॥ च० ॥ रू० ॥ ८ ॥ वांची नृप मन शंकियो रे, खणि दीठां दीनार रे ॥ च० ॥ नृप ति जय चांत होइने रे लाल, नाठो थइ असवार रे ॥ च० ॥ रू० ॥ ए ॥ श्रेणिक तसु केडो कीयो रे, लूंटे हय गय रथ सार रे ॥ च० ॥ ते पहोंतो आपण पुरी रे लाल, लइ जीवित उद्धार रे ॥ च० ॥ रू० ॥ १० ॥ जे सामंतक वाणिया रे, वली जे सुभट मदंत रे ॥ च० ॥ कुशल आक्रंद करता थका रे लाल, आव्या नाठी तत्र

च० ॥ रू० ॥ ११ ॥ ते कहे शुं कीधो तुमे रे, तुम वन्न रे ॥ च० ॥ ते बोले न करो श्रमे ए सवि श्रजय प्रपंच रे ॥ च० ॥ रू० ॥ १२ ॥ करी परचावीयो रे, सामंतक निज राय रे ॥ च० ॥ त्युंही गया रे लाल, सहुको निज निज ॥ च० ॥ रु० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन चंमप्रद्योत हवे, बेसे सना समक्ष ॥ माल्ह वहेतो श्रमरपें, ठे कोइ माहरे दक्ष ॥ १ ॥ श्र जयकुमरणी ते बांधीने, श्रापे जे मुज श्राण ॥ तो वालुं वैर माहरुं, जीवित जन्म प्रमाण ॥ २ ॥ बोले एक वेश्या तिहां, हुं इण काम समर्थ ॥ राय कहे जे जोइ ए, ते तुं कहे परमत्र ॥ ३ ॥ तव वेश्या वलती नणे, ७ मुक वात ॥ धर्म कपट विण श्रजयनी, न मले कांइ घात ॥ ४ ॥ तिण कारण एक वरसनी, श्रापो श्रवधि उल्लास ॥ श्रावकनो धर्म शीखशुं, उत्तम गुरुणी पास ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ सीखण सीखण चेलणा ॥ ए देशी ॥

॥ वो वेश्या तरुणी नली, धरी श्रावक बुद्धि ॥ गु

रुणी पासे आवीने, शीखे समकित शुद्धि ॥ १ ॥ ए
जग सहुअ असास्वतो, बोले मीठी वाच ॥ कूड कप
ट कह्यो कुण लखे, गुरुणी जाणे साच ॥ ए० ॥ २ ॥
तिणें शीख्यां गुरु कन्हें वेगे नवतत्त ॥ क्रिया करे का
उसग्ग धरे, देव गुरुनी जत्ति ॥ ए० ॥ ३ ॥ हवे आवे
ते वही करी, राजगृही उद्यान ॥ साथे रुद्धि बहु ले
इने, परिवार असमान ॥ ए० ॥ ४ ॥ पुरमां आवी
ते वन्ने, नमवा जिन प्रासाद ॥ श्रेणिक कारिय देहरे,
पेठी निसही करी आदि ॥ ए०॥ ५ ॥ द्रव्य पूज करी
वंदिया, दश त्रिक साचवी देव ॥ तिण क्षणे मंत्री आ
वियो, धरी पूजनी टेव ॥ ए० ॥ ६ ॥ मंत्री मांहे दे
खी ते, रह्यो चैत्य डुवार॥धर्म सुदृढ जाणी श्राविका,
तसु व्याघात विचार ॥ ए० ॥ ७ ॥ जाणी वंदी ते उ
परमी, आव्यो संशय सत्त ॥ जंपे तसु गुण रंजियो,
दरिसण पुण्ये पत्त ॥ ए० ॥८॥ तुम कुण आव्या क्यां
थकी, किण कारण एथ ॥ ए कुण साथ दीसे सती,
ते कहे अनयने तेथ ॥ ए० ॥ ए ॥ उज्जेणी नगरी
वसां, जद्रा मोरो नाम ॥ विधि वश प्रीतम माहरो,
थयो परजव ताम ॥ ए० ॥ १० ॥ पुत्र वधू ए माह
रे, वर लावण्य रूप ॥ विधि वश ते पण पुत्रने, थयो

स्वरूप ॥ ए० ॥ ११ ॥ कठिन कर्म जग पाडुया, कम नाख्या जाय ॥ वैरागे मन वालियो, इम सुणि ढब जाय ॥ ए० ॥ १२ ॥ तिण कारण पहिलो अमें, वैजसण निज वित्त ॥ तीर्थ यात्रा करती थकी, संप्र ते इहां पत्त ॥ ए० ॥ १३ ॥ एम सुणी अजय निमं त्रे, नोजनने तेह ॥ आज अमे उपवास ठे, तिथि गी कहे जेह ॥ ए० ॥ १४ ॥ मंत्री नणे मन उल्लसी, गी आवो हो प्रनात ॥ अति आग्रहें करी मंत्रीनें, मानि तिणे पण वात ॥ ए०॥१५॥ तेडी जिमाडे मन रली, इ वसन अनेक ॥ संतोषी साहमण नणी, मंत्री धरी र विवेक ॥ए०॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बीजे दिन तिणें वली, नोतख्यो मंत्रीने आ य ॥ धर्मठले ते पण ठल्यो, पांतरीयो तिहां जाय ॥ ॥ १ ॥ जिमाडी मंत्रीशने, पाइ मद चंद्रहास ॥ सुतो मंत्री तिहां किणे, करी गणिका वेसास ॥ २ ॥ गाम गाम राखी दूती, रथ पंक्तिनी ठोड ॥ तिणे ठवी वे ग्या मोकले, अंग आलस सहु ठोड ॥ ३ ॥ हवे ग णिकायें आणीयो, निज पुर अजयकुमार ॥ आप्यो चंमप्रद्योतने, गणिका लहे सत्कार ॥ ४ ॥ तिणें पा

ल्यो कव पिंजरे, तोपण न करे खेद ॥ जे विधातार्ये शिर लख्यो, तेहनी धरे उमेद ॥ ५ ॥ गोड गोड नर मोकल्या, श्रीश्रेणिक नरराय ॥ सहु फरी पाठा आ विया, खबर न लाधी कांय ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ धीरज जीव धरे नहीं जी ॥ए देशी॥

॥ श्रेणिक चिंतातुर थयो जी, हीयडो दुःख जरा य ॥ सुणी माता धरणी ढली जी, अंगज दुःख न ख माय रे ॥ मंत्री तो विण घडी रे न जाय ॥ ए आं कणी ॥ १ ॥ हा ! वत्स हवे तुं किहां गयो जी, ए वडुं दइ अम दुःख ॥ दे दरिसण तुं आवीने जी, ज्युं अम पामुं सुख रे ॥ मं० ॥ २ ॥ तुं जे पाणी मन्न ज्युं जी, मा पितु विलवे दोइ ॥ नयणे वेहु आंसु ऊ रे जी, धीरज घडीय न होय रे ॥ मं० ॥ ३ ॥ प्रजा लोक आक्रंद करे जी, तेहना गुण संजार ॥ हा ! मं त्रीसर तुज विना जी, अमने कुणआधार रे ॥ मं० ॥ ॥ ४ ॥ घडी एक रहेतो नही जी, मा पितु शुं तूं दूर ॥ आज कियां गयो एकलो जी, दइ अमने दुःख पूर रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ क्षण माता धरणी ढले जी, क्षणे सचेती थाय ॥ समजावे सखियां मली जी, विलवे वइ दइ धाय रे ॥ मं० ॥ ६ ॥ हितवत्सल माविन्ननो

रेहतो थको, न धरे मनमां डुःख ॥ निज नारिशुं ति
हां किणे, नोगवतो रहे सुक्ख ॥ ३ ॥ किम आवी ते
इहां किणें, सुणजो तास विचार ॥ करमें सुख डुःख नो
गवे, जीव इणे संसार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ कुंवर इसो मन चिंतवे ॥ ए देशी ॥ जे परणी
खेचर सुता, अनयकुंवर धरी प्रेम ॥ शिवादेवी ते दिये
आणीनें, ते आवी हो इहां किणे एम ॥१॥ शील सु
दढ पाळ्यो जिणे रे, वली पायो हो निज कंत ॥ जी
वित नावे नवियण सांजलो रे, नय आणी हो परन
वनो तंत ॥ शी० ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ मानीता मं
त्रीशने, देखी सुक किसा रोष ॥ विद्य सिद्ध चंमालणी,
वश करी हो दान सदोष ॥ शी० ॥ ३ ॥ शूलीशुं अ
धिको कह्यो, शोकानोरे किलेश ॥ अणख अदेखाइ करे,
दाक्षिणता हो न धरे ते लेश ॥ शी० ॥ ४ ॥ साइण
नी परें सेरवे, वर वशकरण विशेष ॥ कर्म वसें पाधा
पडे, सहे पोते हो ते कोडी किलेश ॥ शी० ॥५॥ जो
स्वारथ सीझे नहीं, तो मारे नरतार ॥ पीये नहितो
ढोलवे, ए साचो हो दृष्टांत विचार ॥ शी० ॥ ६ ॥ दा
सी मुखे ते एम कहे, तेम करी कोइ मंत ॥ अप्रिय

हुए मंत्रीशने, जेम सोको हो होये एकंत ॥शी०॥७॥ कोधी विचाने वसे, पुरमांहे तिण मारि ॥ जाणी मा तमे प्रतें, इम पनणे हो मंत्रीश विचार ॥ शी० ॥ ७ ॥ ते कहे तुम घरमें अछे, नारी करे ते मारि ॥ रुधिर लित मुख दाखवे, ते पापणि हो ते तेणिवार ॥ शी० ॥ ९ ॥ ते देखी संजावीने, मंत्री तास कलंक ॥ तेह नजावी तेहने, तिण टाल्यो हो जननो आतंक ॥ शी० ॥ १० ॥ देश सीम ठोडी तिणें, करती अतिहि विला प॥ दोष नहि इहां केहनो, चित्त चिंते हो मुज करमनो व्याप ॥ शी० ॥ ११ ॥ दवदंती सीता सती, रूपि द तादि अनेक॥ तेणीयें पण दुःख जोगव्यां, तो मुजने हो हवे केहो विवेक ॥ शी० ॥ १२ ॥ तिहां तसु ए क तापस मल्यो, उजलखते लइ साथ ॥ वछणी पहुचा वीने, दीये शिवदेवीने हो तापस हाथ ॥ शी० ॥१३॥ लोक तणी करतव्यता, कूडो जाणी कलंक ॥ ते सा थे सुख जोगवे, तिहां मंत्री हो नित अजय निःशंक ॥ शी० ॥ १४ ॥ चंद कहे सहु भ्रम फले, लीजे वं छित काम ॥ निकलंकी हुइ आपणो, वली पायो हो जीवित पिउ आम ॥ शी० ॥ १५ ॥ सर्व० ॥ ११९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे ते राजें तेहने, चार रतन सुविचार ॥ देवि शिवा गज अनिलगिरि, अग्नि नीरू रथसार ॥ १ ॥ चो थो दूत छे तेहने; ते पण सरस रतन्न ॥ ए चारे महत्ता जणी; मंत्री कीधो मन्न ॥ २ ॥ बुद्धि पसायें संपजे, सहु मन वंछित जोग ॥ आपद सहु दूरे टले, लाजे वंछित जोग ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग धान्हडीआशा ॥ अथवा कंतडे देशावर गोरीरे गम कीयो रे ॥ ए देशी ॥

॥ बुद्धि फले नरने इण जगतमें रे, जुवो हीयडे विमास ॥ दुर्जन पण सहु सज्जन हुवे रे, लहे सयले जगवास ॥ बु० ॥ १ ॥ लोहजंघो लेखवा हवे रे, हवे ते मेले राय ॥ लोहजंघो जर यन्न जणी रे, वार वार नीर पाय ॥ बु० ॥ २ ॥ तसु गमनागमने करी रे, चिंते लोक सखेद ॥ दिन प्रतें चाले कोस शोरे, जाणे जणावे जेद ॥ बु० ॥ ३ ॥ निगे मारवो ए सही रे, तसु संबल करी दूर ॥ इक विष अद्धि मोदक छवे रे, तिहां किणें ने जरपूर ॥ बु० ॥ ४ ॥ मारग चलतां ज विनअयना वसें रे, छोडे संबल जाम ॥ निज धीके करी नेहने पालियो रे, सुन वाने त्रिहुं गाम ॥ बु० ॥ ५ ॥

अण जिम्यां ते आवियो रे, प्रणमे नरवर पाय ॥ पूछे नरपति दीसे आज तुं रे, किण कारण विछाय ॥वु० ॥६॥ नृपनणी हवे ते कहे रे, सहु मारग विरतंत ॥ ते पण तदी अनयने रे, पूछे हेतु तुरंत ॥ वु० ॥७॥ तेहनी गंधे जाणी कहे रे, अहिडष्टि विष ज्ञात ॥ इण जोग छांडे ते तिहां रे, तरु जालित क्षण मात ॥ वु० ॥ ८ ॥ अनय जणे वनमांहे जइ रे, विमुख जोइयो एह ॥ तिम कीधो तिणे वनतरुने दही रे, दग विष मुउ तेह ॥वु०॥९॥ हवे सुप्रसन्न नृप वर दीयो रे, धंध मोक्ष विण नास ॥ मंत्री कहे मुज राखवी रे, ए थापण तुम पास ॥ वु० ॥ १० ॥ लक्ष्मी विनय यश नंदिज लहे रे, जेहने बुद्धिप्रकाश ॥ पहेलां वर मंत्रीसर पामीयो रे, चारु प्रधानने पास॥वु०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे तिण चंद प्रधानने, रूप कला गुण जाण ॥ शास्त्रवश्या नाम तसु, योवन वन असमान ॥१॥ उर विद्या न अति निपुण नवि जाणे सनान ॥ तसु संगीत शास्त्रावया नृप चित्त श्रवणे चित ॥ २ ॥ अनय तणी नृप नांदिया, कोइ संगित प्रवीण ॥ कौम खापुर राखियो, उदयन सम्मित प्रवीण ॥ ३ ॥ तसु म

हवा गज कारिमो, सुंदर नृप कराय ॥ साञुध सुनट मांहे रह्या, पंत्र प्रयोग चलाय ॥ ४ ॥ कौसंबी वन आवियो, ते गज वनचर देख ॥ कर जोडीने वीनव्यो, नृपतिनें सुविशेष ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ वेगे पधारो मेहेलथी ॥ ए देशी ॥ उदयन नरवर सांनली, गज ग्रहेवा गयो तेथ ॥ तजी परिजन आप एकलो, सुनटे दीठो तेथ ॥ उ० ॥ १ ॥ जाणी अवसर आपणो, नीसर नृपने बांधि ॥ लेइ चाल्या उज्जेणियें, चाढि तिण गजस्कंध ॥ उ०॥ २ ॥ सेवक निज प्रजुने दीयो, कहे तव चंम नरिंद ॥ मुज पुत्रीने शीखवो, गीत कला नरिंद ॥ उ० ॥ ३ ॥ सन्मुख कन्या न जोइवो, एक नयन ठे तेह ॥ देखी लज्जा पामशे, इम कही राख्यो गेह ॥ उ० ॥ ४ ॥ कन्यानें वली इम कह्यो, ए संगीत प्रवीण ॥ कुष्टि ए तिण मत करो, अति प्रसंग रस लीण ॥ उ० ॥ ५ ॥ कन्या परीठने अंतरे, जणे कला मन लाय ॥ कन्या चिंते जोइयें, केवो विद्या दाय ॥ उ० ॥ ६ ॥ चल चित्त ते कूडो जणे, उदयन कहे रीसाय ॥ कांणी कूडो कांइ जणे, जण निज मन करी ठाय ॥ उ० ॥ ७ ॥

कहे कन्या कुरी किशुं, वचन कहे अविचार ॥ इम सुणी नृप मन चमकियो, ततक्षण परख्यो सार ॥ ऊ० ॥ ८ ॥ सुंदर कन्या प्रयोतनी, रूप अनुपम पेख ॥ मांहो मांही निहालतां, थयो अनुराग विशेष ॥ ऊ० ॥ ९ ॥ कुंवरी रीझी कुंवरशुं, धाली कंचनमाल ॥ जाणीने सुखशुं रहे, उदयनने ते बाल ॥ ऊ० ॥ १० ॥ अन्य दिन अनलगिरि हाथियो, उनमूली आलान ॥ नगर भमे जन क्षोभतो, न गणे ते पीलवाण ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ नरवरे अजयने पूछीयो, ए गज किम वश थाय ॥ वासवदत्ता साथे पढ, सतानीक सुत गाय ॥ ऊ० ॥ १२ ॥ राय वचन कुंवरी मली, उदयन गावे गीत ॥ राग मधुर ध्वनि मोहियो, गज थंभ्यो एक चित्त ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ उदयन तसु उपर चढयो, गज ततक्षण वश कीध ॥ आलाने आणी बांधियो, जग सघले यश लीध ॥ऊ०॥१४॥ सर्व ॥१५२॥

॥ दोहा ॥

॥ मालवपति रीझ्यो घणुं, अजयनणी तेडाय ॥ वर बीजो मागो हवे, जे तुम आवे दाय ॥ १ ॥ अजय प्रथम वरनी परें, थापे नृपति पास ॥ अवसर ए हुं संग्रही, पूरीश अपणी आश ॥ २ ॥ परिजनने

परिवारशुं, चंम चल्यो आराम ॥ उदयननी करवा ख वर, मंत्री युगंधर ताम ॥ ३ ॥ ते नमतो बोले इशो, हुं मुज नरपति काज ॥ त्रणे वस्तु जो नवि हरुं, तो नहीं मंत्री शिरताज ॥ ४ ॥ इम सुणी नरपति कोपियो, ग्रही दीगे उन्मत्त ॥ परवश बकतो जाणीने, नृपे मूक्यो जह ॥ ५ ॥ गीत काज तेडावियो, उद यन कन्या अज्ञ ॥ ते लही अवसर आपणे, वेगव वती करे सज्ञ ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कायथके सवारे सदा सुरंगो आवे ॥ ए देशी ॥ बुद्धि करी सुरगुरु सारिखो रे, मंत्री युगंधर तेह ॥ साधे कारज स्वामीनां रे, साचा मंत्री जेह ॥ बु० ॥ १ ॥ मली मंत्री पीलवाणशुं रे, करी दृढ मन आलोच ॥ मूत्र घटा चारे नख्या रे, अवर न कीधो शोच ॥ बु० ॥ २ ॥ कुंन्न उव्या किरणी शिरे रे, सहु सज्ञ कीधो साज ॥ वासवदत्ता साथ लेरे, चढी चल्यो उदयनराज ॥ बु० ॥ ३ ॥ तव उदयन मंत्री इम कहे रे, सांन लजो सहु कोइ ॥ उदयन राजकन्या हरी रे, जाये दिवस ए जोइ ॥ बु० ॥ ४ ॥ इम सुणी मालवपति कोपियो रे, निज सुहता कहे तेडि ॥ अनलगिरी गज स

ज़ित चढ्यो रे, कोसंबी नृप केडि ॥ बु० ॥ ५ ॥ वळपति
वेगवती चढ्यो रे, जाव जोयण पचवीश ॥ देखी ढूंक
डा श्रावता रे, नंजे पढो सुजगीश ॥ बु० ॥ ६ ॥ तसु
गंध गज खुब्यो घणुं रे, पंथे जातो करे ढील ॥ उद
यन त्रण वार इम कीयो रे, निज पुर श्रावीयो ली
ल ॥ बु० ॥ ७ ॥ करणी कालगत थइ रे, वेगें सजी
निज सेन ॥ श्रावंती देखी प्रद्योतनां रे, गया वली
सुनट उद्वेग ॥ बु० ॥ ८ ॥ वचन सुणी नृप सज थ
यो रे, मंत्री वच उवसंत ॥ मूके नेट उदयनजणी
रे, जाणी निज सुता कंत ॥ बु० ॥ ९ ॥ एक दिन स
घल पलीवणो रे, देखी नगरी नरराय ॥ पुढे श्रनयने
ते कहे रे, श्रगने श्रग्नि कषाय ॥ बु० ॥ १० ॥ एम
सुणी श्रग्नि साह्यमो कीयो रे, ते ततक्षण उवसंत ॥
सुप्रसन्न त्रीजो वर दीयो रे, राखे नृप कने मंत ॥ बु०
॥ ११ ॥ व्यंतर नय त्यां उपन्यो रे, वली पुढे नरना
ह ॥ उपद्रव ए किम उपसमे रे, ते कहे बुद्धि श्रगाह
॥ बु० ॥ १२ ॥ नृपति तुझ श्रंतेउरी रे, नयणे जीप
शे एह ॥ मंत्री वचन नृपति कीयो रे, व्यंतर जीत्यो
तेह ॥ बु० ॥ १३ ॥ वली मंत्रीश नणे इशुं रे, राणी करइ
दीयो पिंम ॥ नृत नणी निश तिम कियो रे, पयो पु

कुशल अखंम ॥ बु० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथो वर नृपति दीयो, मंत्रीने सुप्रसन्न ॥ अवसर जाणी आपणो, अजय नणे सुवचन्न ॥ १ ॥ देराजन हवे मुफ नणी, थापण चार उदार ॥ देवशिवा गज अनलगिरी, अग्निनीरू रथ सार ॥ २ ॥ दीजे चोथो दूत मुफ, नृपति चतुर सुजाण ॥ ए चारे साथें लइ, चिंता तजीश निज गण ॥ ३ ॥ इण वाते असमथ नृपति, गेडे ते कर जोड ॥ तव मंत्रीसर इम नणे, वलतो मूंठ मरोड ॥४॥ दिवसें चौपटी चौहटे, करतो तुं आकंद ॥ जो लेडं तुफ पुर थकी, तो हुं अजय नरिंद ॥ ५ ॥ बोली करीने चालियो, लेइ साथ कलत्त ॥ माय ताय हर्षित थयां, राजग्रही पुर पत्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ मधुकरना गीतनी देशी ॥ अथवा धनसारथवा साधुने ॥ ए देशी ॥

॥ हवे मंत्री प्रद्योतने, महवानी धरी टेक ॥ धन धन ॥ दो गणिकालेडावियां, रूपवंत सुविवेक॥ध०॥१॥ ते गणिका साथे लियां, आप थयो वाणिज ॥ ध० ॥ पहोतो नगर अवंतीए, सहु करियांणे सज्ज ॥ ध०॥२॥

राजपंथ मंदिर लीधो, करे व्यापार विशेष ॥ ध० ॥ दी
वी नृपती एकदा, नारी नवले वेश ॥ ध० ॥ ३ ॥ ते
पण जोवे सन्मुखे, नृप तणी धरी राग ॥ ध० ॥ शाकर
दूध तणी परें, मेले नयण सराग ॥ ध० ॥४॥ नरवर
आयो मंदिरे, मदने परवश थाय ॥ ध० ॥ दूती मूकी
ते कन्हे, इम कहे तेहने जाय ॥ ध० ॥ ५ ॥ रूप
कला गुण तम तणें, मोही रह्यो लय लाय ॥ ध० ॥
जेम पाणी मछ ज्युं, तुम विण मालवराय ॥ ध० ॥६॥
वंछे संग आदर घणे, इम सुणी कोपी जेह ॥ ध० ॥
तरजी तिण वे दूतिका, वली आइ दूती तेह ॥ ध०
॥ ७ ॥ त्रीजे दिन दूती तणां, वचन सुण्या धरी कान
॥ ध० ॥ दूतीने तिणे जाणीने दीधो अधिको मान
॥ ध० ॥ ८ ॥ ते कहे ए अम स्नेय छे, पण अम
बंधव एह ॥ ध० ॥ सदाचार तिणे राखवो, अवसर
दाख्युं तेह ॥ ध० ॥ ९ ॥ आज थकी दिन सातमे, न
रवर आवजो एक ॥ ध० ॥ इहां बंधव होशे नहि, क
रिशुं प्रीति विवेक ॥ ध० ॥ १० ॥ तव मंत्री निज नर
तणो, नाम धर्यो प्रद्योत ॥ ध० ॥ कपटे ते गहिलो
थयो, मंत्री बुद्धि उद्योत ॥ ध० ॥ ११ ॥ नगर भमे ग
हिलो थको, कहेतो विध विध वाण ॥ ध० ॥ सेवक

मिस करी बांधियो, देखो बुद्धि विनाण ॥ ध० ॥ १२ ॥
वैद नणी देखाडवा, ले चल्या मांचे थाप ॥ ध० ॥
राज मारग आव्यो जिसे, तव करे एम विलाप ॥ ध०
॥ १३ ॥ जन सुणजो सहुको तमे, हुं नृप चंद प्रद्यो
त ॥ ध० ॥ हरि जायछे मुफ नणी, परगट दीणयर ज्यो
त ॥ ध० ॥ १४ ॥ इम कंखतो रडतो रहे, सातमे दि
न हुवे नृप ॥ ध० ॥ काठ लंपट आव्यो तिहां, लुब्धो
रमणी रूप ॥ ध० ॥ १५ ॥ अनय सुनट बांध्यो म
ली, कोइ न राख्यो माण ॥ ध० ॥ वैद घरें ले जाइ
शां, अनय सुणी सहु वाण ॥ ध० ॥ १६ ॥ दिवस
पलंगे ठवि करी, हख्यो प्रद्योत नर राय ॥ ध० ॥ उज्जे
णी नगरी विचें, लै नृप मंत्री जाय ॥ ध० ॥ १७ ॥
आव्यो राजगृहिपुरें, तात आगें ठव्यो जाम ॥ ध० ॥
श्रेणिक असि ग्रही मारवा, धायो देखे ताम ॥ ध०
॥ १८ ॥ नीति वचने करी वारियो, देइ बहु सनमान
॥ ध० ॥ मूक्यो वली अवंतीए, मंत्री उतारी मान ॥ ध०
॥ १९ बुद्धि बले करी इणि परें, पाले अपणो बोल
॥ ध० ॥ लक्ष्मीविनय बुद्धिवंतनो, एको बोल अमोल
॥ ध० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ १९८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राजगृहपुर वसे, धनदत्त शेठ सुनाम ॥ चो सठ गुणे करी आगली, वसुमति रमणी धाम ॥ १ ॥ तासउदर सर ऊपन्यो, कयवन्नो गुण जाण ॥ पुरुष कला जाणे सहु, निरुपम रूप निहाण ॥ २ ॥ योवन आव्यो तेहने, जयसिरि कन्या तह ॥ मात पिता पर णावियो, जाणी जोग समह ॥ ३ ॥ तोपण विद्या अ न्यसें, न रमे विषय विलास ॥ ते जाणी माता हवे, कहे प्रियने उल्लास ॥ ४ ॥ गोठिल पुरुषां गोठडी, मे लवियो उमाह ॥ देवदत्ता घरें आणियो, व्यसन वि लण उल्लाह ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगियारमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोइ पंखियां ॥ ए देशी ॥

॥ कयवन्नो हवे कुंवर रहे तेहने घरें, वेश्याशुं बहु प्रेम हरख हीयडे धरे ॥ नित नित मूके तात मात नंदन नणी, कनक रजतनी कोडी मोह माया घणी ॥ १ ॥ नोगवतां बहु नोग वरस केइ थयां, तेहवे माता तात दोव परनव गयां ॥ वली मूके धन बहुत कलत्र पूठायकी, इणि परें तसु धन क्षीण वरस बारे लकी ॥ २ ॥ तव आनरण उतारी नारी मूक्यां ति

से, देखी अक्का तेह ताम चिंते इसे ॥ एक सदह
दीनार घाती मननी रली,आजरण मूक्यां तेह वेश्य
पागां वली ॥ ३ ॥ कहे पुत्रीने एम वचन सुण मुज
खरो, निर्धन ढंढो एह अवर धनवंत धरो ॥ जो नृ
कोढी पास हुवे धन बहु परें, काम तणी परे सोइ ग
णी राखां घरे ॥ ४ ॥ उंच नीच कुल कोइ नहि को
अंतरो, जिण गंठे धन होइ सोइ गेह संचरो ॥ सुणि
एहवा हवे बोल पुत्री माता तणा, ते वलती कहे ए
म माताने लुजमणा ॥५॥ बार वरसनी प्रीत तोडुं हुं
किम इमे, ए मुज प्राणाधार तजुं नहि जिम तिमे ॥
मात न कर विखास लजां जिहां जीव वसें, त्यां लगी
ए हसुं नेह गेह रमीशुं रसें ॥६॥ एक दिवस हवे तें
ह पुत्री वनमें गइ, अक्का अवसर पामी कहे साहने
जइ ॥ दिवस घणा थया आज महेल जाव्या थकां,
तमे वेसो घरबार काज ए अम जक्का ॥ ७ ॥ कपट
करी एम तेह काढयो घर बाहिरे, जो धन हुए तो सा
ह पेसजो इण घरें ॥ कयवन्नो सुणी एम चिंते मनशुं
इसो, धिक् धिक् वेश्या जात जात जन्ति तिसो ॥८॥
हवे आयो निज गेह साह निज बारणे, उभी नारी
स्नेह लइ जल उवारणे ॥ संतोष्यो सुवचन्न चित्त प्री

तम तणो,मलियो कंत एकांत दूरख देयडे घणो ॥७॥ वन क्रीडा करी प्रेम वेश्या पुत्री जिका, घर नवि देखे नाह चिंते एम मन तिका ॥ हुं पण तेहशुं नेह रही ते तसु मंदिरे, ते पण आइ तेय साह तसुं आदरे ॥१०॥ सर्वगाथा ॥ २१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कयवन्नो त्यां कणें, मास एक रह्यो गेह ॥ गर्भ रह्यो महिला तणें, धनसिरि नामे जेह ॥ १ ॥ हवे व्यापारने कारणे, चिंत करे निश दीश ॥ दीनारशुं श्राभरण दीयां, वेहु प्रिया सुजगीश ॥ २ ॥ वणज करो इण श्रायशुं, चिंत तजो प्रिय दूर ॥ हवे लीला सहु पामशां, छे तुम पुण्य पडूर ॥ ३ ॥ तिण क्षणे किणे आवी कह्यो, परदेशे चले साथ ॥ श्राभरण ध न घर राखीनें, श्राप थयो तसु साथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल वारमी ॥

॥ मुज सीयडो हेजालुउ ॥ ए देशी ॥

॥ साह चल्रे परदेशनें, करी सयणाशुं शीख ॥ पर रदेजो नजी नांतशुं, दइ इम महिला शीख ॥ सा० ॥ १ ॥ स्वामी संग्रहण कारणे, महिला साथे वे वि ॥ खाट तलाइ पाथरे, एक देवलनें हेवि ॥ सा०

॥ २ ॥ पोढाडे प्रीतम तणी, नारि वे आवी गेह ॥ हवे तिण राते जे थयो, सुणजो कारण तेह ॥ सा० ॥ ३ ॥ हवे ते तिणहिज नगरमें, सेठ सुदंसन नाम ॥ पोत चंगे जनने सुखे, मात सुण्यो मृत ताम ॥ सा० ॥ ४ ॥ धन दइ जननें पालिया, तेहि वहूअर बोलाय ॥ सुत विण ए धन आपणो, सहु लेशी नर राय ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए धन राखवा कारणे, करवो बीजो श्रीय ॥ जिम सुत होवे तुम तणों, सुणी इम बों ले त्रीय ॥ सा० ॥ ६ ॥ सासुजी किम कीजीए, एह अकारज आम ॥ उत्तम कुल कानो चढे, वली कहे सासु ताम ॥ सा० ॥ ७ ॥ कारण वश जे कीजीयें, तेहनो दोष न जाण ॥ तिण कारण करा माहरो, व हुयां वचन प्रमाण ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम आलोच करी हवे, चारे वहुयां ने साथ ॥ आवी रातें आवी यां, जिहां उतरिया साथ ॥ सा० ॥ ९ ॥ निरखी मारो साथ ने, आवी देवल मांहि ॥ सुखशुं सूतो देखीने, तेह उठाइ साही ॥ सा० ॥ १० ॥ आपणो मंदिर आपणे, पोढाड्यो सुख सेज ॥ जागे रंगे नेहरे, रमणी चार सहेज ॥ सा० ॥ ११ ॥ तव आगी त्यो मांहरी, इम तणे सरस वचन ॥ कुलदेवता सुतने दीयों, तुं रम्स

पुत्र रतन ॥ सा० ॥ १२ ॥ ए धन मंदिर ताहरो, ए वली महिला चार ॥ सुख जोगव इणशुं इहां, नहि कां चिंत व्यापार ॥ सा० ॥ १३ ॥ स० ॥ २३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कयवन्नो ते जणी, चिंते तव इम चित्त ॥ कुल चिंता हवे शी करुं, विलसुं ए सुख प्रीत ॥ १ ॥ चारे रमणिशुं त्यां किणें, जोगवतो बहु जोग ॥ दोगंदक सुरनी परे, विलसे पुण्य संयोग ॥ २ ॥ महिला चार तणें हवे, अनुक्रमें जनम्या पूत ॥ थेरी आखें ए थया, मुज घर राखण सूत ॥ ३ ॥ बार वरस वो ल्या जिसे, विधिवश तेहिज साथ ॥ आवी तिण वन कतखो, आणी तिणे बहु आथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ आज निहेजो दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥ हवे कहे थेरी वहुआंने इशो, ए पति गांमो आज ॥ स्वारथ इणशुं सीध्यो आपणो, हवे इणशुं स्यो काज ॥ ॥ ह० ॥ १ ॥ सुणी वच वहुआं इणि परें वीनवें, सासुने कर जोड ॥ काज अकाज कराव्यो पहेलवी, हवे गोडवियां खोड ॥ ह० ॥ २ ॥ तव वली थेरी जासें एहवुं, कारणवश कीयो तेह ॥ काज सखां पछी

सहु कोइ कहे, दीजे ततक्षण ठेह ॥ ह० ॥ ३ ॥ इम करतां नहि तुमने वुरो, कारण वस तजी लाज ॥ ठयल जिके नर जिणि तिणि परें,साधे आपणो काज ॥ ह० ॥४॥ नेहें करी हवे वहुयें कर्या, मोदक मणि संयुत्त ॥ संवल काजे ते तसु ठवे, उलीसे निशि सुत्त ॥ ह० ॥ ५ ॥ जिम आण्यो तिम मूक्यो वली, ऊपाडी तिहां तेह ॥ जाग्यो चिंते किम हूं इहां किणे, किहां महिला मुज गेह ॥ ह० ॥ ६ ॥ आव्यो साथ तिसे त्यां सुणी, आवे सुंदर दोइ ॥ तिमहिज प्रियने मूल तणी परें, देखे अचरिज होइ ॥ ह० ॥ ॥ ७ ॥ किम गयणंगण संचरी, तुमे आया इहां रंग ॥ खेद जिणे दीसे नहिं, मारगनो प्रिय अंग ॥ ह० ॥ ८ ॥ एम जणे तसु प्रति दीये, ते सूना हूंकार ॥ संवल सेज प्रमुख महिला ग्रहे, आव्यो गेह मझार ॥ जेहो ॥ ९ ॥ स्नान करे जव ते तिसें, तसु नंदन साथ ते, ॥ ते ठे वरस अग्यारनो, आयो जणि नी सवाइ सा ह० ॥ १० ॥ तव मांगे माता कनें, किंपी [illegible] देह ॥ एक मोदक संवलथकी, दे माता त [illegible] ॥ ११ ॥ लइ खातो बाहिर गयो, नीस [illegible] ॥ रतन कंदोइने दीयो, दे सुखडी

सुज सांही ॥ ह० ॥ १२ ॥ जलमांहि पडतां खंभ थयो, ते जाएयो जलकंत ॥ रतन जतन करीने हवे, राख्यो तिणे एकंत ॥ ह० ॥१३॥ हवे जिमतां मोदक थकी, देखी मणि तिणिवार ॥ पजणे जयसिरि प्रिय तुमे, गोपवियो धनसार ॥ ह० ॥ १४ ॥ इणि परें आएयो धन लाघव जणी, सुणी तसु वचन विलास ॥ कयवन्नो हर्षित थयो, रहे हवे सुजग आवास ॥ ॥ ह० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ २४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण अवसर एकदा, जे नृपतिने गेह ॥ सिंचणक नामा हाथियो, गजमे सुरमणि तेह ॥१॥ ते पहोतो जल पीयवा, तव काल्यो जल तंत ॥ राय वचन मंत्रीसरे, दीये पुरि पडह महंत ॥२॥ एक सहस्र दिये गाम तसु, परणावे तसु धीय ॥ एम सुणी पडहो छव्यो, ततक्षण कंदोइह ॥ ३ ॥ जलकांते गज गेडव्यो, जलचर जीव विशेष ॥ कंदोइ नृप पूछियो, रत्न तणो अवशेष ॥ ४ ॥ कयवन्ना सुत मुज दीयो, सूखडी साटे एह ॥ सुणी वच नृपति हरखियो, तव जांगो संदेह ॥ ५ ॥ कंदोइ घर मूकियो, तेडाव्यो तव साह ॥ गाम सहस्र शुं नृप सुता, परणावे उत्साह ॥६॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ राग रामग्री ॥ आदरजीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥ महिला त्रणशुं सुख भोगवतो, रहे कयवन्नो साह जी ॥ अनय कुंवरशुं प्रीत थइ बहु, दिन दिन हर्षे उत्साह जी ॥ १ ॥ तम पेखो रे, एतो पुण्य फल्यो सुविशेषो रे ॥ मत कोइ करो अंदेशो रे, कृपाल तुम पेखो रे ॥ सुपात्र फल देखो रे, कयवन्नो इणि परें सुख विलसे,ते सहु पुण्य पसाय ॥ त०॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ एक समे कयवन्नो कहे एम, अनय नणी धरी प्रीतजी ॥ चार त्रियाशुं जे सुख सेव्यां, ते चढी आव्यां चित्तजी ॥ त०॥ ३ ॥ चौबुध ज्ञान धरो जो मंत्री, तो सारो मुज काजजी ॥ जाखो तेह मया करी मुजने, हुं सारुं तुम काजजी ॥ त० ॥ ४ ॥ ते कहे इणहीज नगरी मांहे, ठे रमणी मुज चारजी ॥ बार वरस तिणशुं सुख विलस्यां, हवे नहीं तेहनी सारजी ॥ त० ॥ ५ ॥ सुणी मंत्री चित्तमांही विमासे, बोल कहे तसु आमजी ॥ ते चारे युवती संती, हुं धरिश तुम धामजी ॥ त० ॥ ६ ॥ ते चारे गृहिवा हवे इणि परें, मंत्री करे उपायजी ॥ बुद्धि वसे जिण पुरुषां हीयडे, तेहने सहु सिद्ध थायजी ॥ त० ॥

॥ ७ ॥ देवल एक कराव्यो मंत्री, पुर बाहिर अनि
रामजी ॥ कयवन्ना सम यक्षनी प्रतिमा, थापी मंत्र
ए गुन गानजी ॥ त० ॥ ८ ॥ पुर सघले उद्घोषणा
दीधी, मंत्री सहु समझजी ॥ बालक कष्टने टालण
काजें, सहु पूजो ए यक्षजी ॥ त० ॥ ९ ॥ सुणी उद्
घोषणा पुरमें एहवी, संतत मों मली नारजी ॥ चर
ची पूजी यक्ष मनावे, बालकने सुखकारजी ॥ त०॥
॥ १० ॥ कयवन्नो मंत्रीसर येहु, देखा मंडप निरखंत
जी ॥ आवे पुरनी सुंदरि टोले, तिणमां ते आवंतजी
॥ त० ॥ ११ ॥ पति सम यक्षनी प्रतिमा निरखे, प्र
गट्यो विरहो तामजी ॥ नयणे नीर झरे नीझरणा,
जाणे पावस मासजी ॥ त० ॥ १२ ॥ रमणी च्यारे
विलवे मनशुं, देव भणी कहे एमजी ॥ एक प्रीतम
जलनिधिमें रहियो, बीजो विछोहयो केमजी ॥ त० ॥
॥ १३ ॥ सहिना चार तणां सुत जेहवा तत्क्षण
थिय निरखंतजी ॥ तात कही उत्संगे बेठा, बापशुं
केलि करंतजी ॥ त० ॥ १४ ॥ इम देखि मति चतु
री नारी तरुणी मेरानि मनजी ॥ धन माने रमणी ह
त पुत्रने आणी घर उच्छवनजी ॥ त० १५ ॥ सुंदर
स्नान रमणी सघरन, जिनमें गहिन लागनजी ॥ तब जो

के कयवन्नो सुरपरें, चंद वचन पुण्य जोगजी॥ त०१४

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण अवसर एकदा, आव्या वनह मोझा र ॥ चरम शरीरी चरम जिन ॥ नवियणने सुखकार ॥ १ ॥ निज निज ऋद्धि विस्तारिने, सहुको वांदण जाय ॥ कयवन्नो पण सुणी करी, रोमांचित अंग था य ॥ स्नान करी निर्मल जले, पहेरी वस्त्र प्रधान ॥ ऋद्धि तणो विस्तारशुं, चाल्यो साह सुजाण ॥ २ ॥ देई तीन प्रदक्षिणा, प्रणमी श्रीजिन देव ॥ कृत पुण्य पूछे में लही, किम आपद संपद हेव ॥ ३ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥राग मालवी गोडी॥जिनवरशुं मेरो मन लागो एदेशी॥

॥ पनणे जिनवर मधुरी वाणी, गुण पूरव विरत त रे ॥ आलस विकथा दूरे छोडी, कर निज मन ए कंत रे ॥ प० ॥ १ ॥ सालिग्राम एक छे गुन गामे, तिहां वसे विधवा एक रे ॥ निर्धन परघर काम करे नित, नानो सुत तसु एक रे ॥ प० ॥ २ ॥ वाछरुआं चारे जन केरां, बालक मन अभिराम रे ॥ इणि परें ते आजीविका करतां, रहे त्यांहिज निशि वाम रे ॥ ॥ प० ॥ ३ ॥ अन्यदा उत्सव दिनको आव्यो, जम

तां बालक खीर रे ॥ ते देखी तिहां मनसा उपनी, मागे जननी तीर रे ॥ प० ॥ ४ ॥ माता बालवचन सुणी एहवुं, उपज्युं दुःख असराल रे ॥ पाडोसण मली करी तव पूछे, कुण दुःख तुज इणि काल रे ॥ प० ॥ ५ ॥ घरनी वात न जाणे बालक, मागे खीर मुज पास रे ॥ पूज्यो नहि परमेश्वर परभव, तो केम फले अम आश रे ॥ प० ॥ ६ ॥ दीन वचन सुणी करुणा आणी, दे तसु पायस साज रे ॥ ते रांधी बालकने पीरसी, मात गइ किण काज रे ॥ प० ॥ ७ ॥ तिण क्षणे सम दम रस गुण जरियो, मास खमण मुनि कोइ रे ॥ आहार काजे आव्यो ते अट तो, तेह रंज्यो मुनि जोइ रे ॥ प० ॥ ८ ॥ तीन जाग कल्पीने ते दे, जावज्जुं साधुने खीर रे ॥ रस आहारें विसूचिका थइ तसु, तिणि निशि छंमी शरीर रे ॥ प० ॥ ए ॥ त्यांथी इण पुर तुं अवतरियो, दान तणें फल जोय रे ॥ जोगविचं अंतराय जे पामी, ते रेखा फल होय रे ॥ प० ॥ १० ॥ तुज पाडोसण देतां निरखी, अनुमोदना वशें सात रे ॥ तुज नारी शुज वेसें थइ इण जवे, हरख्यो सुणी निज वात रे ॥ प० ॥ ११ ॥ संवेगे लइ ते हवे संयम, निज प्रियाशुं प्रजु पास रे ॥

तप जप खप करी स्वर्गें उपन्या, चवि नर नव शि
वास रे ॥ प० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ २०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण अवसर एकदा, राजगृही पुर गाम
समोसस्या तारण तरण, गणधर सुधर्मा स्वाम ॥१
नाव धरी नवियण घणां, वंदन पहूता तछ ॥ अ
त्यपणे देसन सुणि, जन्म कीयो सुकयछ ॥२॥ ए
कवियारो त्यां किणें, चित्त धरि धर्म विशुद्ध ॥ गणध
देशना सांजली, लइ चारित्र प्रति बुद्ध ॥ ३ ॥ ते
नित्तुं करे गोचरी, देखी पुर नर नार ॥ दुष्करकार
ए मुनि, वेमी ऋद्धि कछ नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ कुंवरी बोलावे कूबडो ॥ ए देशी ॥ मुनि अ
सहतो एहवो, गुरुने कह्यो प्रकारो रे ॥ पुरजन क
मुज मश्करी, करवो अनेथि विहारो रे ॥ १ ॥ जिन
शासन उजवालियो, मंत्री रुडी रीतो रे ॥ धर्म तणी
दृढता करे, ते हुए त्रिजग वदीतो रे ॥ जि० ॥ ए
आंकणी ॥ २ ॥ तासु वचन गुरु सज्ज थया, मह्रिय
ल करण विहारो रे ॥ तिण क्षण मंत्री आवीने, पूछे
अने कुमारो रे ॥ जि०॥ ३ ॥ कांइ चालो उतावला,

भासे श्री गणधारो रे ॥ नव दीक्षित अणगारनो, कहो हीलणा विचारो रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक दिन गुरु राखी तिहां, मंत्री बुद्धि विशेषो रे ॥ रत्न तीन कोडि लेइने, चौहटे बेठो मंत्रीशो रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ पडह देवरायो नगरमे, सुणजो लोक सवाइ रे॥ आपें मणि मंत्रीशरू,इम सुणी आव्या धाइ रे ॥जि०॥६॥ तव मंत्रीसर इम भणे, लोकांने हितकारो रे ॥ त्रण वस्तु छोडे जिको, तसु दीजे धन सारो रे ॥ जि० ॥ ॥७॥ लोक कहे त्रण वस्तु शी, मंत्री भांखे तेहो रे॥ वारि वह्नि वनिता तजे, दीजे तसु धन एहो रे ॥जि० ॥ ८ ॥ लोक कहे मंत्रीशने, ए न हुवे अम पाखे रे ॥ लोक तणी वाणी सुणी, तव मंत्री इम भांखे रे ॥ जि० ॥ ए ॥ ए धननो ए धणी थयो, सांप्रति ए अणगारो रे ॥ त्रण वस्तु छोडी जिणे, त्रण कोडीनो ठांमणहारो रे ॥ जि० ॥ १० ॥ किम हसियें तुम साधुने, उत्तम करणी कीधो रे ॥ जव सायर तरवा भणी, भावशुं संयम लीधो रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ निंदा करी मूरखपणे, आजयकी अम आमो रे ॥ हवे नवि करशुं एहवो, मंत्री शीख दीयें तामो रे ॥ जि० ॥ १२॥ इम जिन धर्म उन्नति करी, हरख्या श्रीगणधा

रो रे ॥ लक्ष्मीचंद कहे एहवो, धन धन तसु अवता रो रे ॥ जि० ॥ १३ ॥ स० ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन श्रेणिक राय हवे, वेगो सन्ना समक्ष ॥ नणे किसुं मुंहगो अछे, ते नांखो मुज दक्ष ॥१॥ केइ बोले एहवो, मोती मुंहगा स्वाम ॥ हीर चीर मणि सार के, के मृगमद अनिराम ॥ २ ॥ केइ चंद न वावनो, हय गय केसर केवि ॥ रुप्य सुवन केई चवे, हवे मंत्री कहे हेवि ॥ ३ ॥ अनय नणे मुंहगो अछे, स्वामी सयने मंस ॥ एह वचन माने न को, राजादिक मन अंश ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ राग गोडी ॥ पूर्व नव तमे सांनलो ॥ ए देशी॥ हवे मंत्रीसर इम नणे, सुण श्रेणिक महाराजो रे ॥ पांच दिनां लगें ए सही, दीजें राज मुज आजो रे ॥ १ ॥ धन धन अनय कला निलो, जसु मति चार उदारो रे ॥ सुर गुरु पण जिण आगले, न करे बुद्धि अहंकारो रे ॥ध०॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ दीधुं राज मंत्रीसने, नूपति रहे आवासो रे ॥ को दीये नूप समाधिने, नर कालेजा मांसो रे ॥ ध० ॥३॥ पडह दिरा

पी लोकमें, उपजी जबदोइ मानो रे ॥ जो को दे इण कण सही, तास वधारुं वानो रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ उपजी नव दीधो किणे, प्राण सहुने प्यारो रे ॥ धन थाणी दिये जन घणा, नृप वसे जाणि विचारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ जीववुं वांछे छे सहु, मरण न वांछे कोइ रे ॥ धन मलतां वली सोहिलो, प्राण वले नवि होइ रे ॥ध०॥६॥ धन थंवार किया घणां, देखी श्री मगधेसो रे ॥ रुठे राय तेडावीयो, अनय नणी निज पासो रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ कहे एतो धन क्यांयकी, किणि परें भेलो कीधो रे ॥ प्रजा लोकने पीडीने, अप यश कांइ तें लीधो रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ अनय कहे अ पयश विना,ए मेल्यो धन तातो रे ॥ निज नर ठांना मूकीने, सेवा पुरनी वातो रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ पग पग मंत्री यश सुणे, ते जाणी कहे नृपो रे ॥ किम वहु यश लहि येहु, नाखो तेह सरूपो रे ॥ध०॥१०॥ ते कहे में जन पासथी, माग्यो कालजा मांसो रे ॥ धन थाणी दीधो घणो,पण पल नाप्यो अंशो रे ॥ध० ॥ ११ ॥ ठामो ठाम दीधी वली, पाछी धननी राशो रे ॥ तिण पली मूंगो जाणियो, सहुको थायो विश्वासो रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ इम बुद्धि देखी मंत्रीशनी, हर

स्यो नरपति चित्तो रे ॥ लक्ष्मीविनय कहे अवसरे, बुद्धियें सहु जग मित्तो रे ॥ध०॥१३॥ सर्व ॥ ३२१॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन वंदी वीर जिन, वलतां नृपति मंति ॥ उपडतो पडतो वली, खेचर एक पेखंत ॥ १ ॥ पूछयो विद्याधर भणी, वात वदे सुवचन्न ॥ गगन गामिनी विद्या तणो, वीसरियो एकवर्ण ॥ २ ॥ इम सुणि आवी ते कन्हे, मंत्री कहावे विज्ञ ॥ अक्षर कही विद्या ग्रही, ते साधे सहु कज्ञ ॥ ३ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ राग मल्लार ॥ मनको प्यारो, तनको प्यारो ॥ ए हनी अथवा श्री नवकार जपो मन रंगे ॥ ए देशी॥ मगधेसर पूछे हवे एहवो, निज परखदने साररी ॥ माइ ॥ धर्मी पापी पुरुष घणा कुण, भांखो तेह विचाररी ॥ माइ ॥ १ ॥ सुणजो बुद्धि मंत्रीसर केरी, इणनो पण लवलेशरी ॥ मा० ॥ जेहनी बुद्धि देखीने मोह्यो श्रीश्रेणिक मगधेसरी ॥ मा० ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ २॥ सजा पुरुष बोले तव एहवो, धर्मी थोडा स्वामरी ॥मा०॥ पापी जन जगमे छे बहुला, मंत्री भणे तव आमरी ॥ मा० ॥ सु० ॥ ३ ॥ थोडा पापी धर्मी जन

बहु. अनय कंत रहि जोर्इ। ॥ मा० ॥ मान्ड यव
म निज करवा काजे [illegible] [illegible] [illegible] मा० ॥
सु० ॥ ४ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
नि अनिगामर्इ। ॥ मा० ॥ मन [illegible] [illegible] [illegible]
वी सेवक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
वा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
मा० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

क्षण आया वीरजिन, वेखी उदायन नृप ॥ २ ॥ वंदी वीर अनय नणे, चर्मराज ऋषि कोइ ॥ स्वामी उदायन दाखवे, तसु पय वंदे सोइ ॥ ३ ॥

॥ ढाल उगणशमी ॥

॥ आप सवार्थ सजे सहु ॥ ए देशी ॥ मंत्री हवे घर आवीनें, मात पितानी पास ॥ अनुमति आपो मुज नणी,जिम संयम हो लउं जिनवर पास ॥ १ ॥ ए जग सर्व असासतो, एक साचो हो श्री जिननो धर्म ॥ जिनवर देशन सुणि करी, मुज नागो हो सघलो नव नर्म ॥ ए० ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ सुणि माता धरणी ढली, पिता तिमहिज जाण ॥ शीतल जल चेतन लही, मुख बोले हो इम गद गद वाण ॥ ए० ॥ ३ ॥ वत्स संयम छे दोहिलो, करवो म स्तक लोच ॥ माल संथारे सूइवो, धर्म संती हो कर वो आलोच ॥ ए० ॥ ४ ॥ लोह चणा केम चावीयें, मइण तणें दांतेह ॥ कुण एहवो जग शूरिमां, तोलें तोले हो गिरि मंदिर जेह ॥ ए० ॥ ५ ॥ जाव जीव असनानना, नरवा वेलू ग्रास ॥ आव्यां सुख मूरख तजे, कुण मंमे हो परलवनी आश ॥ ए० ॥ ६ ॥ तिण कारण ए राज्य लइ, नोगवी नोग विलास ॥ अ

थावरे, तुं पूरे हो श्रम मननी श्राश ॥ मात पितानां वच सुणी, बोले साहस दीक्षा सही, छे कायरां हो नहि वीर ॥ ए० ॥ ७ ॥ तन धन यौवन कारिमो, ए परिवार ॥ कारिमे इण जग कारणे, किम मानव अवतार ॥ ए० ॥७॥ मात पिता के इणो नहि, न चले परणी साथ ॥ जव यमशुं कार पडे, तव जाये हो छोडी सहु श्राथ ॥ ए०॥१०॥ चंचल वे ए श्रायुखो, जिम तरु पाको पान ॥ पल श्रद्धर हुवे जाय छे, ते दीजे हो मुज श्रायु मान ॥ ए० ॥ ११ ॥ हुं परदेशीनी परें, होइ रह्यो निस नेह ॥ कवतांइ थिरता रहे, धर उपर हो जे वारनो मेह ॥ ए०॥ १२ ॥ इम वचन सुणि दृढ मना, तात दीयो श्रादेश ॥ दीक्षानो उत्सव करे, हवे नृपति हो श्रीश्रेणिक नरेश ॥ ए० ॥ १३ ॥ श्रति उत्सवशुं श्रा वियो, श्रीजिनवरनी पास ॥ स्वहस्त दीक्षा पामिने, ते पूरे हो निज मननी श्राश ॥ए०॥१४॥ श्रति नेहे करी पुत्रने, मंपावें महो श्रतचार ॥ वीश वरस लगी पालीने, ते पहुती हो तिणहिज जव पार ॥ए०॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे श्रीवीर जिणंदने, स्वहथें पामी दीख ॥ अ
जयकुंवर मुनिवर थयो, चाले गुरुनी शीख ॥ १ ॥
ज्ञानी गुरु पासें जणे, सूत्र अर्थ सिद्धांत ॥ चरण क
रण नित साचवे, मुनि गुण जास महंत ॥ २ ॥ वि
नयवंत गुण आगलो, ममता न धरे काय ॥ उत्त
तप करतो थको, शोपे अपणी काय ॥ ३ ॥ शत्रु
मित्र समवड गणे, न करे क्रोध ने मान ॥ कूरमनी
परें गोपव्या, इंडी पांच प्रधान ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ इम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

॥ अजय कुंवर ऋषि प्रणमूं पाया, त्रिकरण शुद्ध
त्रिकाल जी ॥ निरुपम पंच महा व्रत धारी, तीन गु
पति प्रतिपाल जी ॥ अ० ॥ १ ॥ षट विध जीव दया
जे पाले, जिन भाषित पंथ हाले जी ॥ सूर तणी परें
सहे परीसह, शत्रु मित्र सम निहाले जी ॥ अ०॥२॥
क्रोध लोह मद मोह निवास्या, निकंचन निरमाया जी॥
तप जप दुष्कर करीने पोषे, शोपे जे निज काया जी
॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु धर्म दश विध करी सोहे, कंच

१ तृण माण समता जी ॥ परिजन सजन प्रमुख कि
म मेतो, न धरे जे मन ममता जी ॥ अ० ॥ ४ ॥
अप्रमत्त विचरे नारंगनी परें, पंकज दल निर्लेपें जी
॥ राग रहित जग शंख तणी परें, धर्म अग्नि कर्म ह्र
पें जी ॥ अ० ॥ ५ ॥ गगन तणी परें जे निरालंबी,
पवन जिसो अविलंबी जी ॥ तेजे शोहे सूर तरुण जि
म ॥ तप करी काया शोषी जी ॥ अ० ॥ ६ ॥ निर्मल
उज्ज्वल सरिदने सरिखो,मेरु तणी परें धीरो जी॥ क्ष
मावंत जूमंगल जेहवो, सायर जेम गंभीरो जी ॥अ०
॥ ७ ॥ सिंह परें जे कर्म मृग फंडे,सौम्यपणे करी चं
दो जी ॥ दूषण मूल तज्यां कंचन ज्युं, जनने दीये
आनंदो जी ॥ अ० ॥ ८ ॥ पांच वर्ष पालीने निर्मल,
लइ अनशन शुभ ध्यानो जी ॥ शुभ परिणामें मुनिव
र पायो, उत्तम अनुत्तर विमानो जी ॥ अ० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेत्रीस सागर आयुखे, उपन्यो अजय मुनीश
॥ त्यांथी चवी महाविदेहमें, नरजव लही सुजगीश
॥ १ ॥ त्यां दीक्षा ग्रहे फरी, मुनि लेहेशे निर्वाण ॥
जे प्रणमें नित जावशुं, तिस घर मंगल मुनिराण ॥ २ ॥

ज्ञा पूरण कृतपुण्य कथा, काष्टनारिकया मांस मह
र्घ्यता, विद्याधर विद्या प्राप्ति, रुल शुक्र प्रासाद प्र
संग, धार्मिकोत्तर परीक्षा, अभयकुमार दीक्षा, नंद
व्रत ग्रहण मोक्षगमन, अभयकुमार अनुत्तर विमा
नोत्पत्ति वर्णन नामा चतुर्थाधिकारः समाप्तः ॥ प्र
थम खंडे ढाल ९ ॥ गाथा १७५ ॥ द्वितीय खंडे ढा
ल १५ गाथा ३०७ तृतीय खंडे ढाल १५ गाथा ३०१
चतुर्थे खंडे ढाल २१ गाथा ३८२ ॥ सर्व ढाल ॥६०॥
दूहा गाथा सर्व मलीने ११६८ सर्व ग्रंथा ग्रंथ १६६४

इति श्रीअभयकुमार मन्त्रीश्वर
नो रास समाप्त. ॥